

For All Competitive Exams

•LIVE

RNA[®]

By Ankit Avasthi Sir

THE HINDU

THE TIMES OF INDIA

HT Hindustan Times

The Indian EXPRESS

09:00Am 18 JULY 2024

REAL NEWS & ANALYSIS





**Success is the
sum of small
efforts – repeated
day in and day out.**

Robert Collier
Gecko&Fly Quotes
www.geckoandfly.com





王小洪

习近平



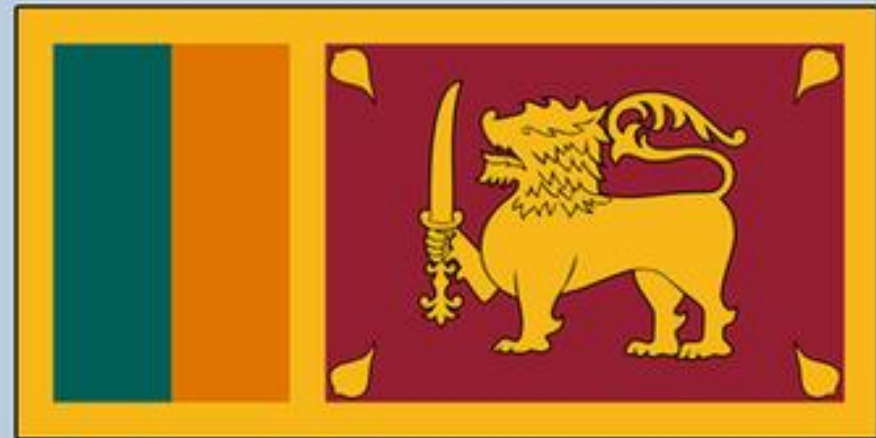
INDIA

Jaffna

SRI LANKA

Indian Ocean

Colombo











RUSSIA



AFGHANISTAN

** The colors of the Russian flag are used for illustrative purposes only.*





Khujand

UZBEKISTAN

KYRGYZSTAN

CHINA

★ Dushanbe

TAJIKISTAN

Chinese base

AFGHANISTAN



China constructs secret Tajikistan military base amid fears of Taliban

Beijing seeks to increase its military footprint with neighbour after investing heavily in economy

Sophia Yan, SENIOR FOREIGN CORRESPONDENT, IN AYNI

10 July 2024 • 3:30pm

चीन ने ताजिकिस्तान में एक मिलिट्री बेस बनाया है। माना जा रहा है कि चीन ने ऐसा धोखे से किया है। ताजिकिस्तान के आंतरिक मंत्रालय के साथ मिलकर चीन मूल रूप से संयुक्त आतंकवाद विरोधी फैसिलिटी बनाने में लगा था। ऐसी रिपोर्ट्स आई थीं कि चीन ने अफगानिस्तान की सीमा से लगे ताजिकिस्तान में एक पूर्ण पैमाने पर सैन्य अड्डा बनाया है।

द टेलीग्राफ की रिपोर्ट में सैटेलाइट तस्वीरों के साथ बताया गया था कि चीन ने सीक्रेट सैन्य अड्डे का निर्माण किया है। अफगानिस्तान में बढ़ते सुरक्षा खतरे को देखते हुए चीन का यह बेस महत्वपूर्ण माना जा रहा है।



Tajikistan is a country in Central Asia surrounded by Afghanistan, China, Kyrgyzstan and Uzbekistan. It's known for rugged mountains, popular for hiking and climbing. The Fann Mountains, near the national capital Dushanbe, have snow-capped peaks that rise over 5,000 meters. The range encompasses the Iskanderkulsky Nature Refuge, a notable bird habitat named for Iskanderkul, a turquoise lake formed by glaciers. — Google

ताजिकिस्तान मध्य एशिया में स्थित एक देश है जो चारों ओर से ज़मीन से घिरा है। यह पहले सोवियत संघ का हिस्सा था और उस देश के विघटन के बाद सन् १९९१ में एक स्वतंत्र देश बना। १९९२-९७ के काल में गृहयुद्धों की मार झेल चुके इस देश की कूटनीतिक-भौगोलिक स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। यह उज़बेकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, क — Google... ज़्यादा ▾

हिन्दी में खोजें : [तजाकिस्तान](#)

Capital: Dushanbe

Currency: Tajikistani Somoni

Official languages: Tajiki, Russian

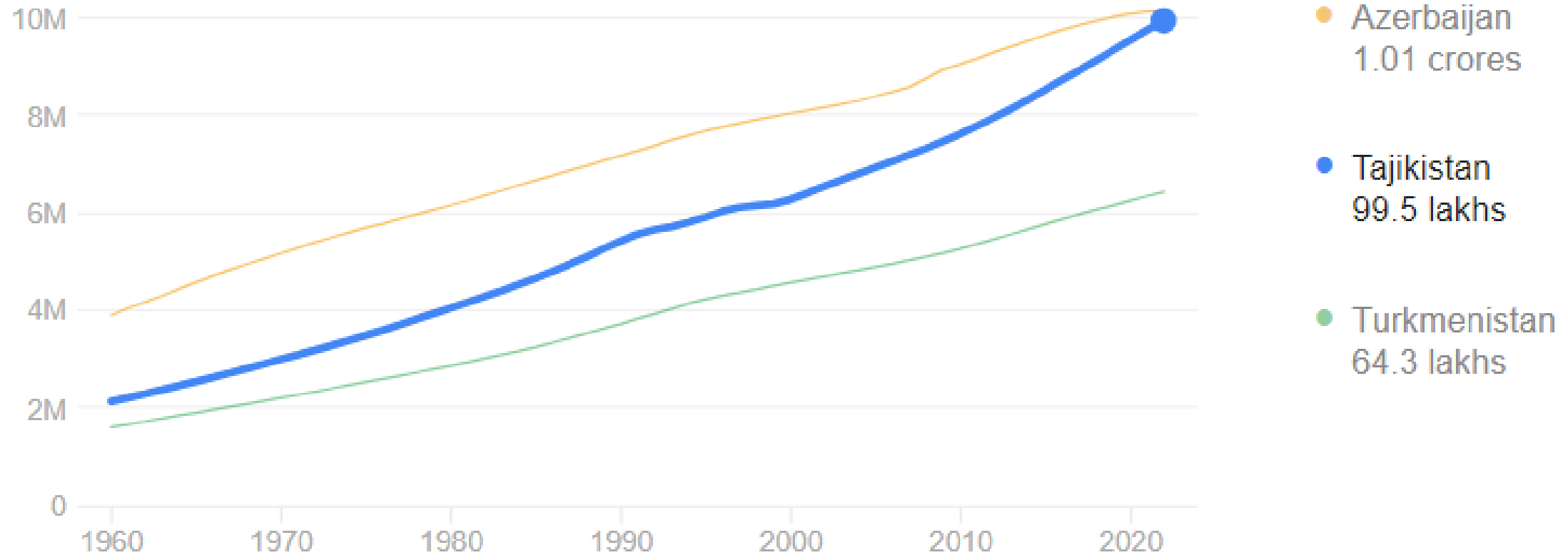
President: Emomali Rahmon

Prime minister: Kokhir Rasulzoda

Government: Unitary state, Presidential system, Semi-presidential system

Tajikistan / Population

99.5 lakhs (2022)



ताजिकिस्तान, मध्य एशिया का एक देश है जो चारों ओर से ज़मीन से घिरा हुआ है। यह देश उत्तर में किर्गिज़स्तान, पूर्व में चीन, दक्षिण में अफ़ग़ानिस्तान और पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में उज़्बेकिस्तान से घिरा हुआ है। इसकी राजधानी दुशांबे है। ताजिकिस्तान में चार प्रांत हैं और यह एक राष्ट्रपति गणराज्य है। यहां की जातीय बहुसंख्यक ताजिक लोग हैं और उनकी राष्ट्रीय भाषा ताजिक है, जो फ़ारसी की एक किस्म है।

ताजिकिस्तान का इतिहास समृद्ध है। यह पहले सोवियत संघ का हिस्सा था और 9 सितंबर, 1991 को सोवियत संघ के पतन के बाद ताजिकिस्तान ने अपनी आज़ादी की घोषणा की। हालांकि, आज़ादी के बाद 1992 से 1997 के बीच यहां गृह युद्ध हुआ, जिससे देश को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इस युद्ध में कई क्षेत्रों में तबाही हुई और कई लोगों की मौत हो गई। इस युद्ध के बाद भारत ने ताजिकिस्तान के पुनर्निर्माण में अहम भूमिका निभाई। भारत ने खाद्य प्रोसेसिंग, आईटी, पनबिजली, तकनीकी जनशक्ति, शिक्षा, संस्कृति, होटल, मेडिकल सहायता, फ़ार्मास्यूटिकल प्लांट, और कृषि क्षेत्र में ताजिकिस्तान का विकास करने में योगदान दिया।



साल 1999 में पिछली तालिबान सरकार में पाकिस्तानी आतंकवादियों ने इंडियन एयरलाइंस का विमान हाईजैक किया था, जिसे बाद में अफगानिस्तान के कंधार ले जाया गया था। इस घटना के लगभग दो साल बाद, आतंकी खतरों से निपटने के लिए भारत ने देश के बाहर अपना पहला एयरबेस खोलने के लिए ताजिकिस्तान में आयनी प्रोजेक्ट शुरू किया था।

2002 में, विदेश मंत्रालय और खुफिया विभाग ने अयनी प्रोजेक्ट शुरू किया था। बाद के सालों में इसे भारतीय वायु सेना (IAF) बेस के रूप में विकसित किया गया, **गिसार मिलिट्री एयरोड्रोम (GMA)** के रूप में जाना जाता है।

यह बेस ताजिकिस्तान की राजधानी दुशांबे से कुछ ही दूर स्थित आयनी गांव में है और भारत और ताजिकिस्तान संयुक्त रूप से इसका प्रबंधन करते हैं। हालांकि, भारत ने ताजिकिस्तान में अपने एयरबेस को काफी लो प्रोफाइल रखा है और बेहद कम लोगों को इस एयरबेस के बारे में जानकारी है।

GISSAR MILITARY AERODROME

— INDIA'S FIRST OVERSEAS BASE
THAT CAME TO THE RESCUE
IN AFGHAN CRISIS

GISSAR AIRBASE
IN AYNI VILLAGE,
WEST OF TAJIK CAPITAL DUSHANBE.

AFGHANISTAN

TAJIKISTAN

CHINA

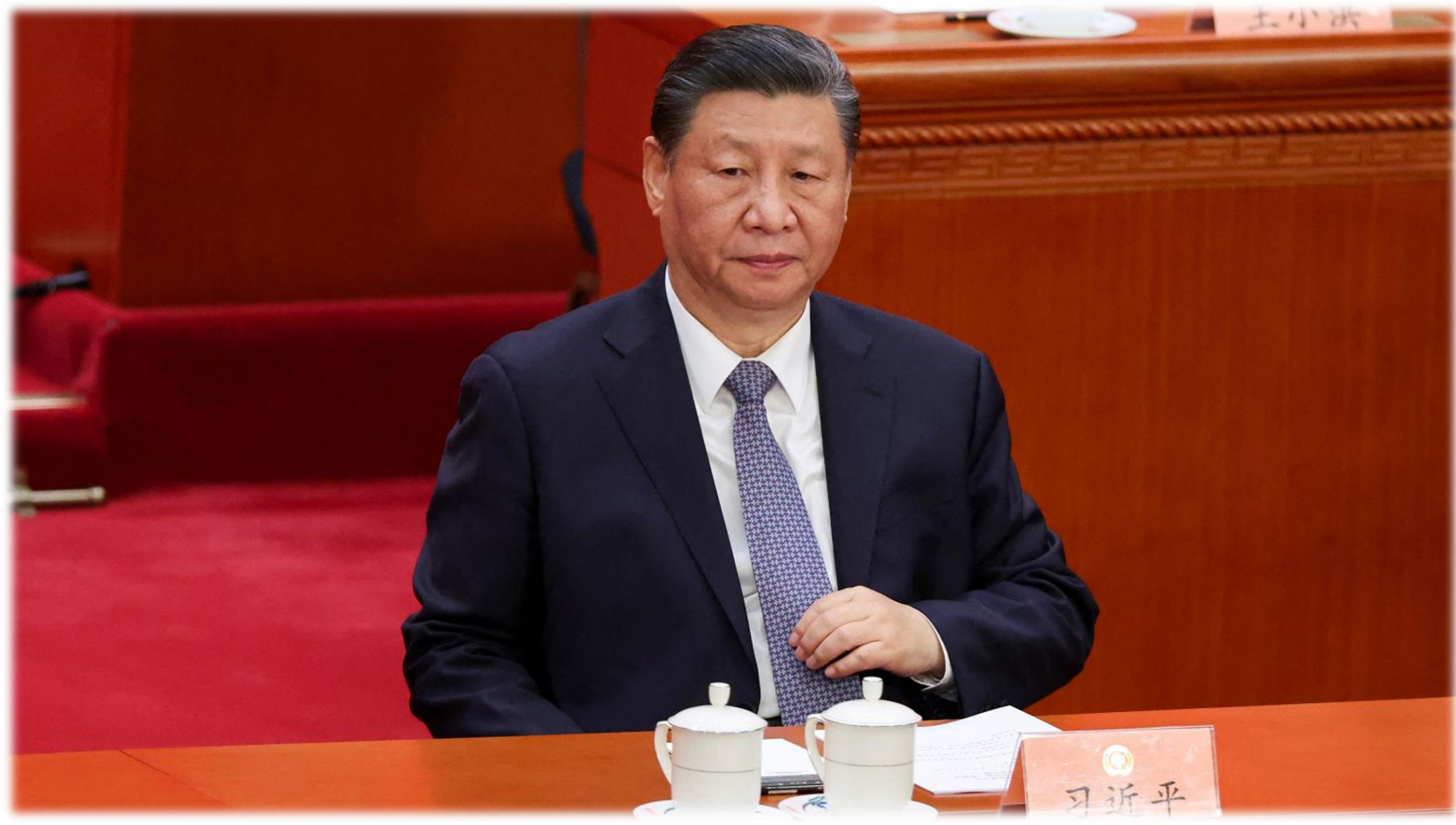
PAKISTAN

INDIA



साल 2022 में जब फिर से काबुल पर तालिबान काबिज हुए थे, तो भारत के ताजिकिस्तान स्थित इसी एयरबेस से भारतीय और नेपाली नागरिकों को निकालने के लिए हवाई सेवाएं शुरू की गई थीं। अयनी एयरबेस को 2005-06 के आसपास शुरू किया गया। 2002 और 2010 के बीच भारत ने एयर बेस के नवीनीकरण, रनवे को 3200 मीटर बढ़ाने और एडवांस नेविगेशनल और एयर डिफेंस इक्विपमेंट लगाने के लिए 70 मिलियन डॉलर का खर्च किया था। 2014 के बाद भारत ने अयनी एयरबेस पर सुखोई 30MKI जैसे लड़ाकू विमानों की अस्थायी तौर पर तैनाती भी की थी। लेकिन बाद में इस एयरबेस को बंद कर दिया गया।

शीत युद्ध के दौरान अयनी क्षेत्र में सोवियत सेना के लिए प्रमुख अड्डा था। वहीं भारत के लिए अयनी एयरबेस का अपना रणनीतिक महत्व है, क्योंकि यह वाखान कॉरिडोर के नजदीक है, जो अफगानिस्तान को चीन और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (गिलगित-बाल्टिस्तान) क्षेत्र से जोड़ता है। हालांकि भारतीय वायु सेना अभी भी ताजिक सैन्य कर्मियों के लिए दक्षिण ताजिकिस्तान के कुर्गन टेप्पा में एक छोटा सा अस्पताल चलाती है।





The two countries established formal relations on January 4, 1992, shortly after the dissolution of the Soviet Union. As the leader of Tajikistan, now-President Emomali Rahmon first visited Beijing in March 1993.

China's embassy in Dushanbe has been functioning since March 13, 1992 and the Tajik embassy in Beijing was established on April 7, 1997.

The total trade turnover between the two countries in 2012 has reached U.S. \$2 billion. China is among the three largest trade partners of Tajikistan. A number of large Chinese enterprises in various industries operate in Tajikistan.

चीन के बहकावे में है ताजिकिस्तान

पिछले कुछ सालों से चीन और ताजिकिस्तान एक-दूसरे के नजदीक आ रहे हैं। चीन ताजिकिस्तान को गोला-बारूद और तकनीक भी मुहैया करा रहा है। वहीं ताजिकिस्तान सैन्य गतिविधियों के लिए ज़मीन देकर और चीनी को पर्यटन और आईटी क्षेत्र में भागीदारी की अनुमति देकर इसका अहसान चुका रहा है। ताजिकिस्तान इन दिनों पूरी तरह से चीन के बहकावे में है।

2006 में, ताजिक सरकार को चीनी सरकार की तरफ से अपना पहला बड़ा लोन मिला और चीनी कंपनियों ने यहां पहली बड़ी परियोजनाएं शुरू कीं। एक परियोजना में ताजिकिस्तान की राजधानी दुशांबे को देश के उत्तरी क्षेत्र से जोड़ने वाली एक आवश्यक सड़क को फिर से आवागमन के लिए बहाल करना था। जबकि अन्य दो में पावर ट्रांसमिशन लाइनों का निर्माण शामिल था, जिसका ठेका चीनी कंपनी टेबियन इलेक्ट्रिक अपरेटस के पास था। **2007** में, चीनी कंपनी जिजिन माइनिंग ने खनन का ठेका प्राप्त किया और ताजिकिस्तान के उत्तरी सुघद क्षेत्र में एक सोने की खदान का 75 फीसदी हिस्सा हासिल किया।

Tajikistan is a mountainous, mineral rich country with more than 600 documented deposits of some 50 different minerals including silver, gold, lead, zinc, antimony, mercury, molybdenum, tungsten, iron, tin, boron, strontium, fluorspar, rock salt, precious and semi-precious stones, bituminous coal, anthracite, graphite, ... 12 Mar 2024



International Trade Administration (.gov)

<https://www.trade.gov> > country-commercial-guides > taj... ⋮

Tajikistan - Mining and Refining, and Heavy Equipment ✓

TAJIKISTAN, CHINA, CENTRAL ASIA

China makes fresh forays into gold mining sector in Tajikistan

Chinese investors often get generous tax breaks in the country.

Kamila Ibragimova Apr 15, 2022



Popular

- 1 US diplomat says Georgian D put Tbilisi's Euro-Atlantic inte hopes at risk
- 2 Researcher explains how Uig exploited in Xinjiang forced li Erkin Damolla
- 3 Kazakhstan and Uzbekistan s reduce trade barriers

In 2012, Tajikistan obtained China's promise to provide it with nearly US\$1 billion in the form of grants, technical assistance and credits on preferential terms.

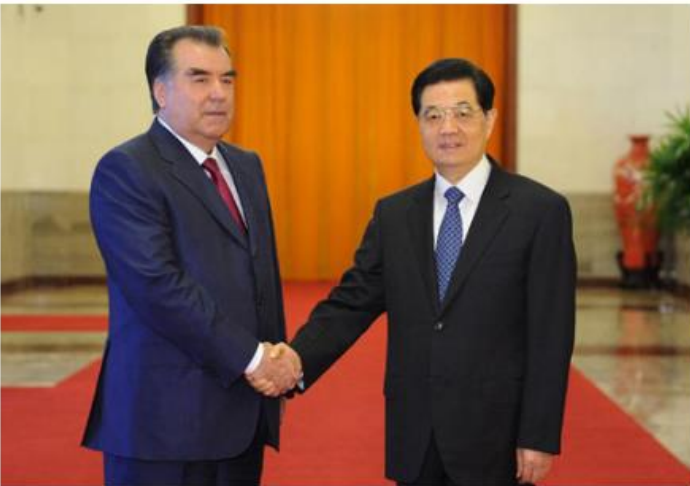


Tajikistan Secures New Chinese Loans and Investment

Publication: Eurasia Daily Monitor Volume: 9 Issue: 114

By: Alexander Sodiqov

June 15, 2012 09:43 PM Age: 12 years



Tajikistani President Emomali Rahmon in China, June 5 (Source: Xinhua)

On June 7, Tajikistani President Emomali Rahmon returned home from a week-long tour of China. The tour included a five-day state visit followed by Rahmon's participation in the 12th summit of the Shanghai Cooperation Organization (SCO) in Beijing. Following the trip, the Tajik President's office announced that ten new deals signed in Beijing would bring Tajikistan about \$1 billion in new Chinese investment, loans and aid. Experts suggest that the new deals will increase China's economic clout in Tajikistan, giving Rahmon more leverage in dealings with Moscow.

As part of the deals inked during the visit, Beijing has pledged to invest some \$600 million to build a large cement plant in Tajikistan's southern district of

Shahritus, on the border with Uzbekistan. When completed, the plant is expected to produce three million metric tons of cement annually, using local limestone reserves. According to Rahmon's press service, the plant will be a joint project between the Chinese government-run National Materials Group Corporation and the state-owned Tajik Aluminium Company (Talco) (president.tj, June 7). Eager to break its dependence on cement imports, Dushanbe previously negotiated similar deals with Tehran and Islamabad (news.tj, June 11, 2011; June 1). However, joint projects with Iran and Pakistan have taken too long to get off the ground, leading Tajikistan to seek Chinese investment instead.

Beijing has also pledged to build a coal-driven combined heat and power (CHP) plant in Tajikistan's capital, Dushanbe. Although negotiated over a year ago, the \$200 million project stalled because of disagreements over the plant's technical specifications. Following Rahmon's return from Beijing, it was announced that Chinese specialists will begin the construction of the plant "within the next several days" and will complete the project within a year. The CHP plant project is part of the Tajikistani government's effort to use the country's coal resources in tackling power shortages. China is also helping Tajikistan's state-owned cement factory in Dushanbe and a number of other enterprises to switch from imported natural gas to local coal (president.tj, June 7; news.tj, April 28, 2011).

The deals signed during the visit will also increase Chinese presence in Tajikistan's mining sector. Rahmon's press service announced that Chinese company Zijin Mining Group has agreed to develop a copper deposit in northern Tajikistan and build a copper plant and a gold-refining facility in Panjakent district. The company has already invested some \$200 million in the Zarafshon joint venture in the district. Last year, the gold-mining venture produced 1.45 tons of gold, selling most of it to Tajikistan's National Bank. Zijin Mining, which has a 75 percent stake in the joint project, is planning to bring the venture's annual gold output to five tons by 2016 by developing new deposits (president.tj, June 3; avesta.tj, June 4).

President Rahmon has also invited the state-owned China National Petroleum Corporation (CNPC) to explore for oil and gas in Tajikistan (Reuters, June 5). Heavily dependent on energy imports from Russia and Uzbekistan, Tajikistan has long sought to develop its own hydrocarbon resources. Presently, Russian gas giant Gazprom and Toronto-listed Tethys Petroleum are drilling for gas in the country. However, the Tajikistani authorities have been unimpressed by the progress made by the two companies. By inviting CNPC to explore for hydrocarbon deposits, Dushanbe apparently aims to push Gazprom to commit more resources toward exploration and drilling in the country as well as to prevent the Russian company from becoming a single dominant player in the sector.

In addition, Rahmon has secured a \$50 million Chinese loan for the reconstruction of a road linking China with central Tajikistan, and brought home almost \$25 million in Chinese aid. Finally, Rahmon has used the visit to offer a number of major Chinese companies to invest in car building, new roads, electricity grids and dam construction in the mountainous Central Asian republic (president.tj, June 3, 4).

While officials hail the outcomes of Rahmon's visit to Beijing as "highly successful," some Tajik and Russian analysts are concerned about the longer-term implications of Chinese investment. Economist Khakim Davronov believes Dushanbe should be more cautious in borrowing from Beijing. Tajikistan currently owes almost \$900 million – or more than 41 percent of its total foreign debt – to China's Export-Import Bank (EximBank), the country's largest creditor. The new loans will bring EximBank's share in Tajikistan's foreign debt to almost 70 percent (ozodi.org, June

CROSSROADS ASIA

China's Expanding Security Cooperation With Tajikistan

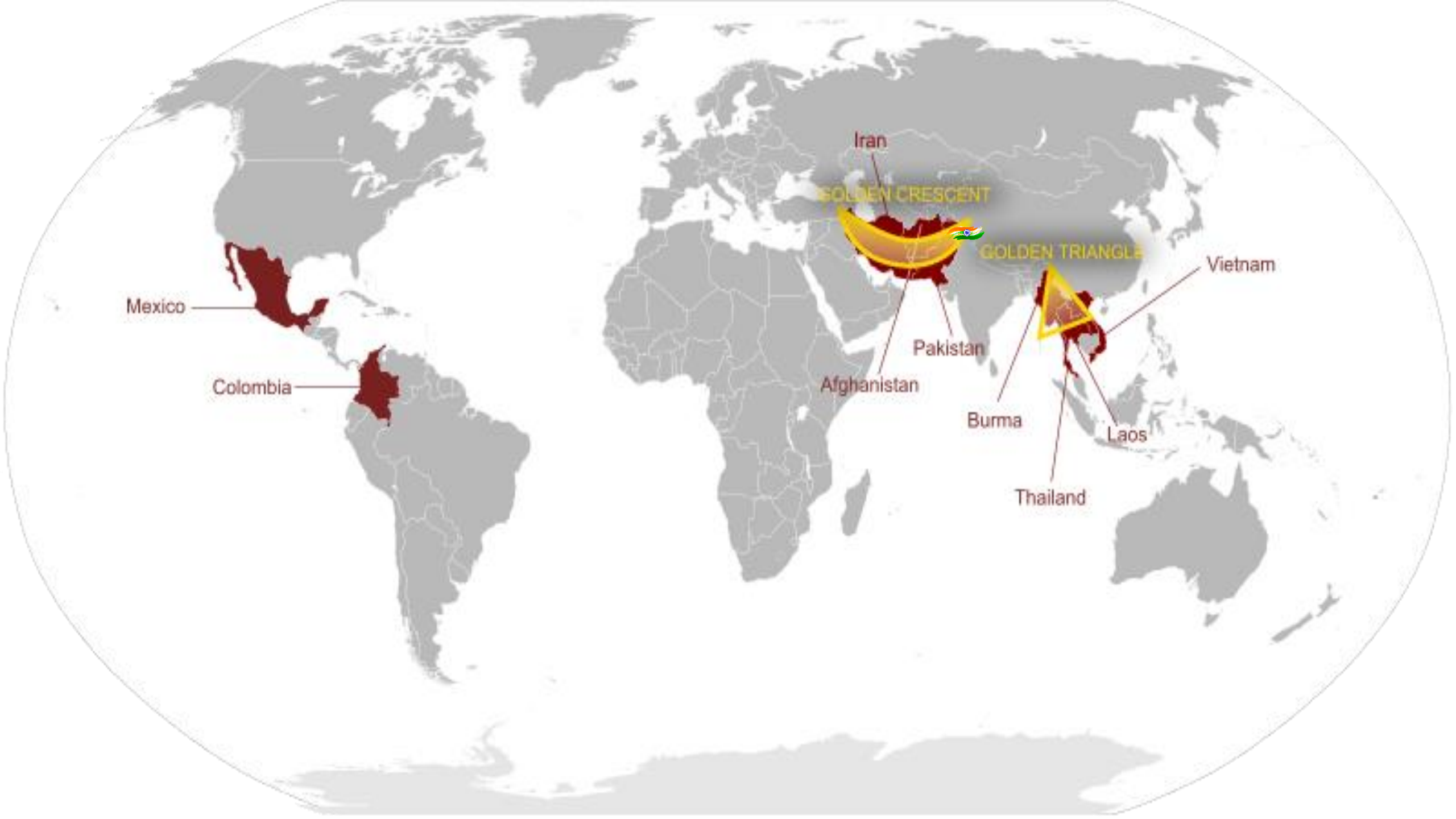
China hopes to keep Rahmon in power, to prevent instability on its western borders.

By [Samuel Ramani](#)
July 16, 2016



On June 23, 2016, Chinese President Xi Jinping met Tajikistan's President Emomali Rahmon during the Shanghai Cooperation Organization (SCO) summit in Tashkent. **In an official statement following their meeting, Xi Jinping pledged to increase security cooperation between China and Tajikistan.** Xi also emphasized the need to combat the illegal drug trade and prevent the diffusion of terrorist networks across the Tajikistan-China border.

China's call for closer security cooperation with Tajikistan at the SCO summit follows months of bilateral negotiations aimed at strengthening defense linkages between Beijing and Dushanbe. In February, Tajikistan's Interior Minister Ramazon Rahimzoda revealed that **China was planning to establish a joint counterterrorism center in Dushanbe.** To show its appreciation for China's security assistance, Tajikistan made a firm statement of support for Beijing's position on the South China Sea dispute.



Mexico

Colombia

Iran

GOLDEN CRESCENT

GOLDEN TRIANGLE

Vietnam

Pakistan

Afghanistan

Burma

Laos

Thailand

- **द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45)** के बाद जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) ने मुख्य भूमि चीन में सत्ता हासिल की, तो स्वर्णिम त्रिभुज अफीम और मादक पदार्थों की तस्करी के सबसे बड़े उत्पादक के रूप में उभरा।
- **गोल्डन ट्राएंगल और गोल्डन क्रीसेंट के अस्तित्व से पहले, चीन दुनिया के अधिकांश अफीम उत्पादन और व्यापार के लिए जिम्मेदार था।**
- **द्वितीय अफीम युद्ध (1856) के बाद चीन के किंग राजवंश और अंग्रेजों के बीच हस्ताक्षर किए गए टिटसिन-1858 की संधि के कारण चीन में अफीम व्यापार को वैध कर दिया गया था।**
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने उपभोक्ताओं को जबरन पुनर्वसन में डालकर, मादक पदार्थों के तस्करो को गिरफ्तार करके मार डाला, और अफीम उत्पादक क्षेत्रों को या तो जला दिया गया या नई फसलें लगा दी गईं।
- नतीजतन, शेष अफीम के तस्करो को चीनी सीमा के दक्षिण में अपने व्यवसायों को सुनहरे त्रिकोण में स्थानांतरित करने के लिए इन कार्रवाइयों द्वारा प्रेरित किया गया था।
- कुओमिन्तांग (केएमटी), अमेरिका समर्थित कम्युनिस्ट विरोधी प्रतिरोध समूह अब स्वर्णिम त्रिभुज में काम करता है।
- केएमटी ने भोजन और पैसे के बदले क्षेत्र के स्थानीय ग्रामीणों को भर्ती होने के लिए मजबूर किया।

What is the Golden Triangle?

- गोल्डन ट्राएंगल यूरोप और उत्तरी अमेरिका में नशीले पदार्थों की आपूर्ति के मार्गों में से एक है और दक्षिण पूर्व एशिया में प्राथमिक अफीम उत्पादक क्षेत्र है।
- यह 1980 के दशक में एक आधुनिक अफीम उत्पादक इकाई और मादक पदार्थों की तस्करी के मार्ग के रूप में उभरा।
- स्वर्णिम त्रिभुज में 5,020 मीट्रिक टन का संभावित उत्पादन हो रहा है, जिसमें से अकेले म्यांमार 30,900 मीट्रिक टन, लाओस में 10,000 मीट्रिक टन और थाईलैंड में 128 मीट्रिक टन का उत्पादन कर सकता है, जैसा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय नारकोटिक्स नियंत्रण रणनीति रिपोर्ट के 2006 के आंकड़ों के अनुसार है। ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम (यूएनओडीसी)। लाओस मुख्य रूप से एक ट्रांसशिपमेंट राष्ट्र है। म्यांमार और थाईलैंड ऐसे देश हैं जहां मनी लॉन्ड्रिंग होती है।





What is Golden Crescent?

- गोल्डन क्रिसेंट ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच अवैध ड्रग सुपरहाइवे है जो मध्य, दक्षिण और पश्चिमी एशिया के चौराहे पर स्थित है।
- यह 1950 के दशक में एक आधुनिक अफीम उत्पादक इकाई और मादक पदार्थों की तस्करी के मार्ग के रूप में उभरा।
- गोल्डन क्रिसेंट मुख्य रूप से दो मार्गों से संचालित होता है –
- **उत्तरी मार्ग** – गोल्डन क्रिसेंट के इस मार्ग से ताजिकिस्तान और किर्गिस्तान के रास्ते रूस में अफीम और हेरोइन की तस्करी की जाती है।
- **दक्षिणी मार्ग** – गोल्डन क्रिसेंट के इस मार्ग के माध्यम से, हेरोइन अफगानिस्तान से पाकिस्तान और ईरान के माध्यम से समुद्र के द्वारा दक्षिण एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया क्षेत्र में जाती है।
- गोल्डन क्रिसेंट ने 2007 में विश्व स्तर पर उत्पादित कुल 9000 टन अफीम में से 8000 टन से अधिक का उत्पादन किया है, व्यावहारिक रूप से इसे एकाधिकार दे रहा है।







Afghan opium poppy cultivation plunges by 95 percent under Taliban: UN

The restriction on poppy cultivation has decimated a key trade for hundreds of thousands of farmers and laborers.



An Afghan man works on a poppy field in Jalalabad province, April 17, 2014 [Parwiz/Reuters]

5 Nov 2023



Poppy cultivation and opium production have plunged more than 90 percent in Afghanistan since Taliban authorities banned the crop last April, according to a UN report published on Sunday.



China's increased interest in Tajikistan's security is motivated by its desire to prevent instability in Tajikistan that undermines Rahmon's hold on power. Beijing is concerned that unrest in Tajikistan could trigger an influx of illegal drug trafficking to China.

China also fears that a regime turnover in Tajikistan could foment ethnic unrest in Xinjiang and make northern China vulnerable to terrorist attacks.





UZBEKISTAN

KYRGYZSTAN



TAJIKISTAN

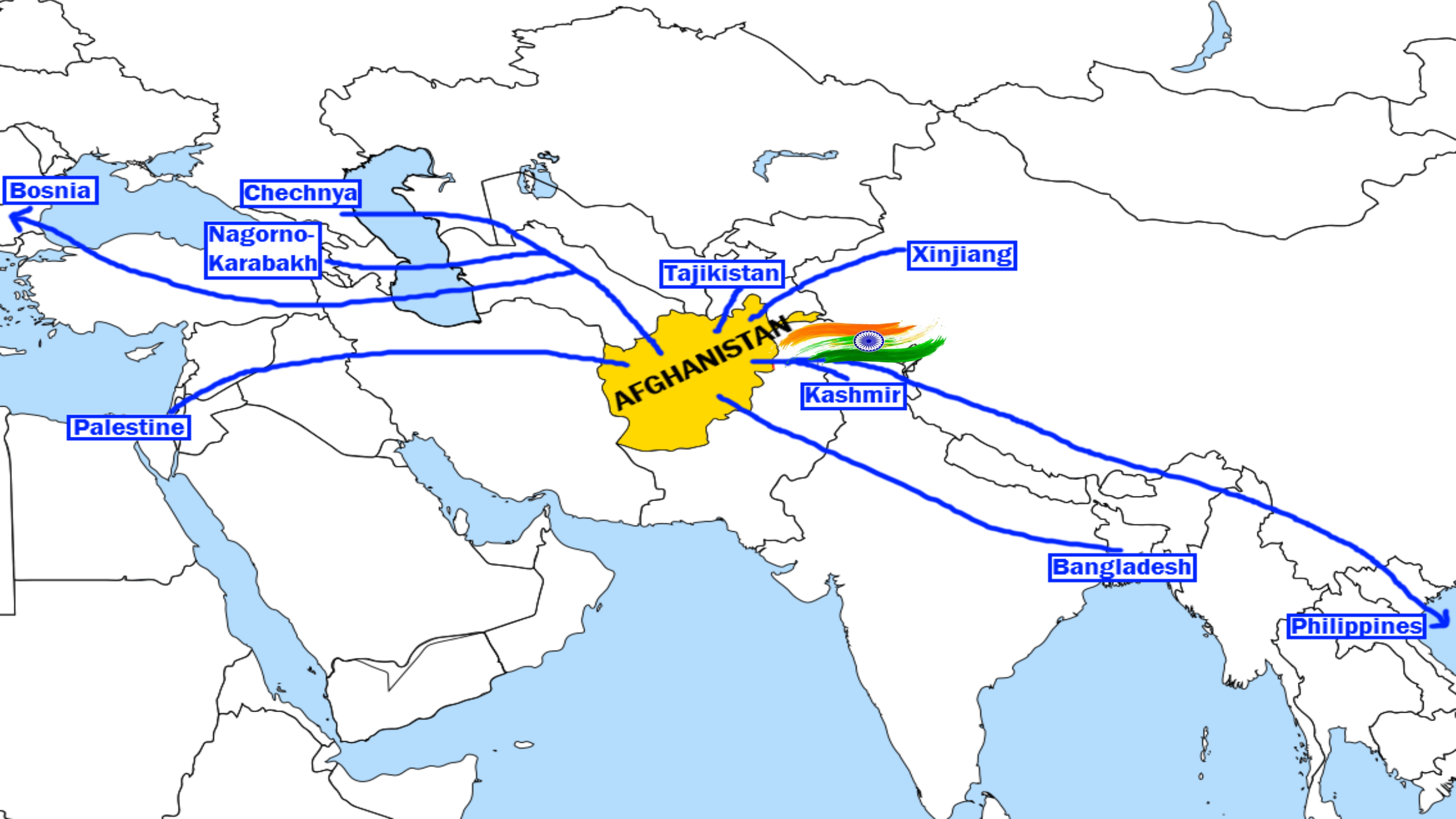
CHINA

Dushanbe

AFGHANISTAN

PAKISTAN





Bosnia

Chechnya

Nagorno-Karabakh

Tajikistan

Xinjiang

AFGHANISTAN

Kashmir

Palestine

Bangladesh

Philippines





News / [Top Stories](#) /

China, Tajikistan conclude joint counter-terrorism drill

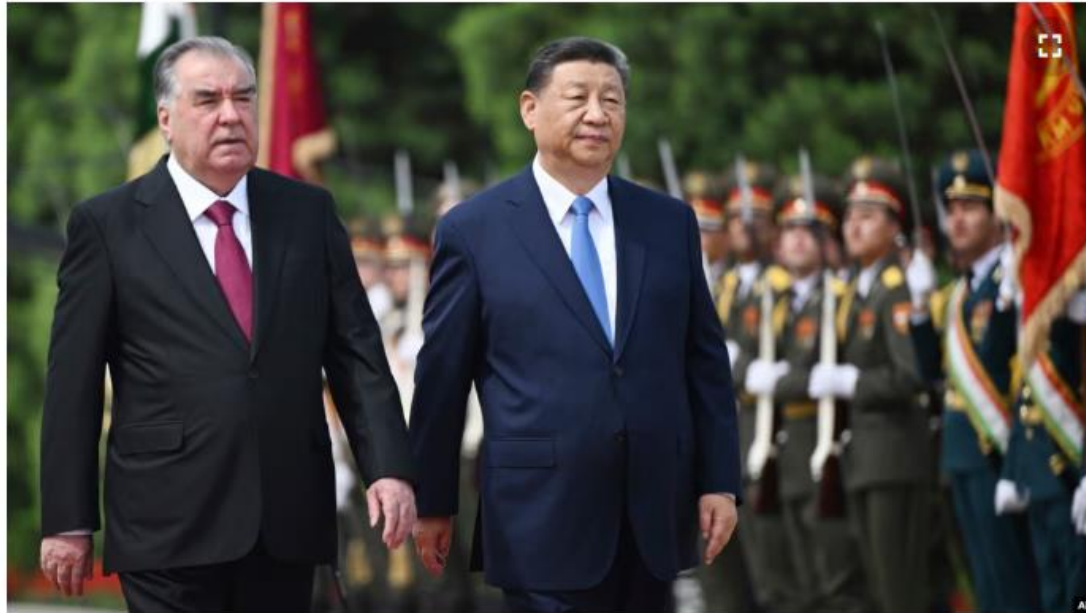
Source: China Military Online Editor: Li Jiayao 2019-08-16 17:26:53



July 05, 2024

By [AFP](#)

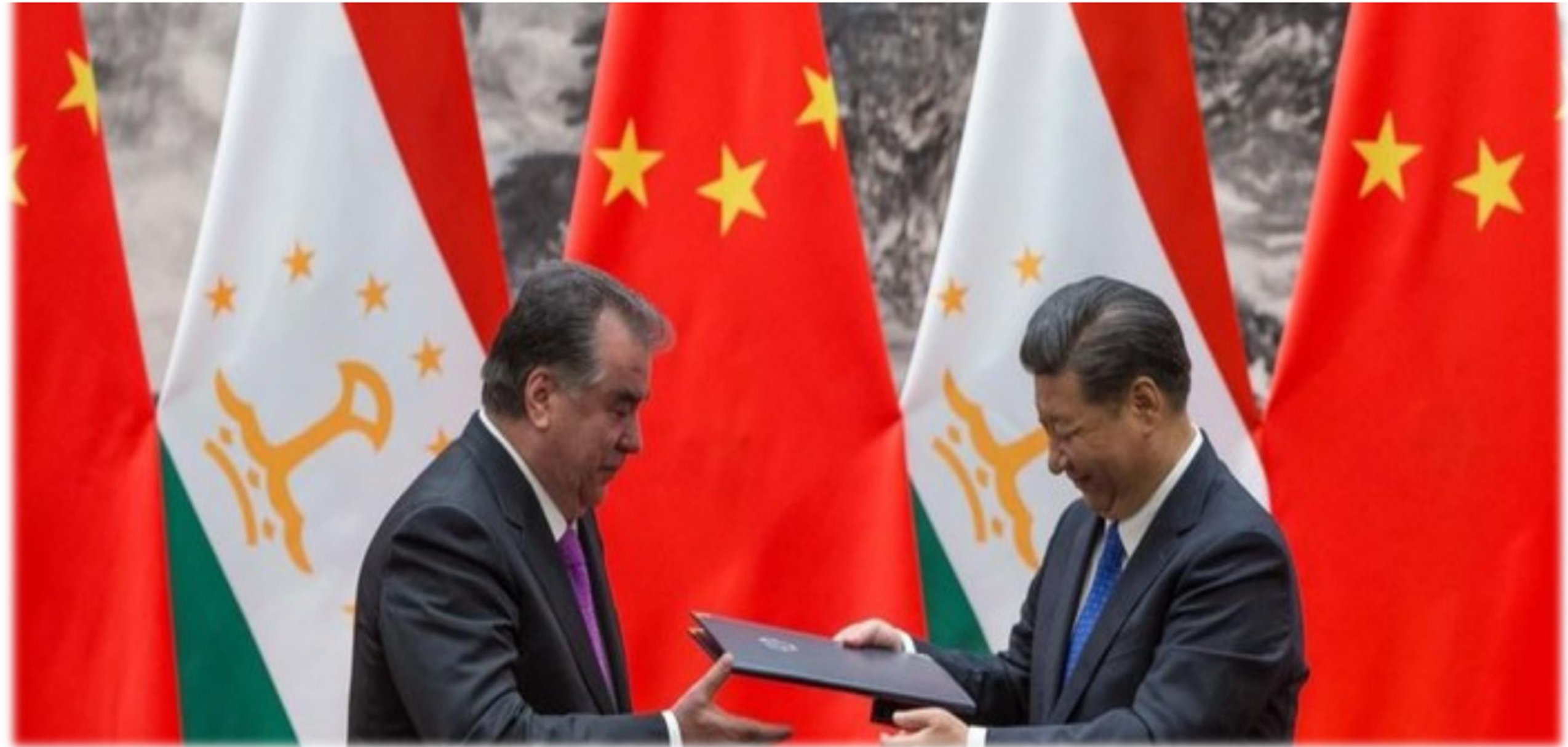
China's Xi Pledges Support For Tajikistan's 'Territorial Integrity'



Tajik President Emomali Rahmon and China's Xi Jinping meet in Dushanbe on July 5.

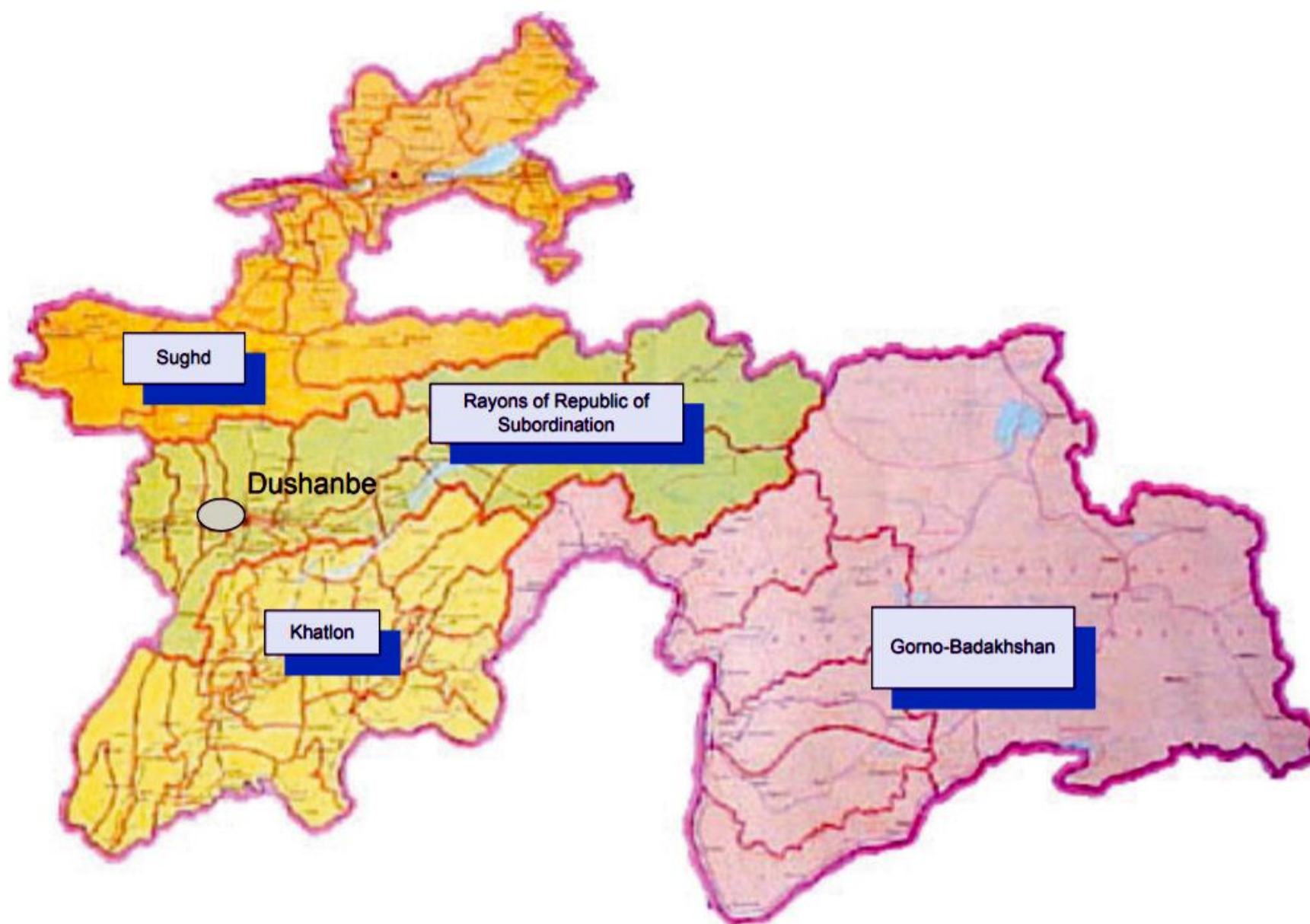
Chinese President Xi Jinping on July 5 promised to defend the "territorial integrity" of Tajikistan as he announced a boost to diplomatic relations with the neighboring country on a rare visit. Xi arrived in Dushanbe from Kazakhstan following a gathering of leaders of the Shanghai Cooperation Organization, during which he held talks with Russian President Vladimir Putin and urged the bloc to "resist external interference." Central Asia is a vital link in China's flagship Belt and Road Initiative, a massive infrastructure project Beijing has used to expand its clout overseas, but which critics say has left developing countries saddled with onerous loans. "China will continue to unswervingly promote friendly and mutually beneficial cooperation with Tajikistan...firmly support Tajikistan's efforts to safeguard national independence, sovereignty, and territorial integrity," Xi told Tajik counterpart Emomali Rahmon, according to state broadcaster CCTV.

China to allocate \$230 mln grant and \$79 mln soft loan to Tajikistan



सितंबर 2020 में ताजिकिस्तान में फेडरेशन ऑफ ओवरसीज चाइनीज के सचिव ने एक साक्षात्कार में बताया था कि आज ताजिकिस्तान में लगभग 400 चीनी सरकारी और निजी कंपनियां सक्रिय हैं। कई चीनी प्रवासी श्रमिक ताजिकिस्तान में रहते हैं। चीनी मीडिया के अनुसार, ताजिकिस्तान BRI में शामिल होने वाले पहले देशों में से एक था।

सूत्रों ने बताया कि 2019 में पहली बार खुलासा हुआ था कि चीन ने ताजिकिस्तान के पूर्वी गोरों बदर्शां क्षेत्र में एक सैन्य अड्डा बना रखा है। न तो चीन और न ही ताजिकिस्तान ने इस अड्डे के अस्तित्व या ताजिकिस्तान में चीनी सैनिकों की मौजूदगी को स्वीकार किया। वहीं अक्तूबर 2021 में, ताजिक संसद ने ताजिकिस्तान की अफगानिस्तान सीमा के नजदीक बदर्शां क्षेत्र में एक और चीनी अड्डे के निर्माण को मंजूरी दे दी। मीडिया में कहा गया कि इस अड्डे पर ताजिक सैनिक तैनात होंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।



MAP OF TAJIKISTAN

Tajikistan: Report confirms significant Chinese security presence in Pamirs

Satellite images show a complex of around two dozen buildings on the border.

Feb 19, 2019



Chinese puzzle: What are Beijing's forces doing in that remote spot?

Popular

- 1 US diplomat says Georgian Dream actions put Tbilisi's Euro-Atlantic integration hopes at risk
- 2 Researcher explains how Uighurs are exploited in Xinjiang forced labor regime
Erkin Damolla
- 3 Kazakhstan and Uzbekistan seek to reduce trade barriers

“Remember,” a Chinese soldier told a reporter nosing around a remote spot in eastern Tajikistan. “You never saw us here.”

Tajikistan: Secret Chinese base becomes slightly less secret

Chinese personnel, whose presence Dushanbe denies, forbid reporters from filming.

Sep 23, 2020



Reaching first base: Chinese presence in Tajikistan.

Popular

- 1 US diplomat says Georgian Dream actions put Tbilisi's Euro-Atlantic integration hopes at risk
- 2 Researcher explains how Uighurs are exploited in Xinjiang forced labor regime
Erkin Damolla
- 3 Kazakhstan and Uzbekistan seek to reduce trade barriers

The presence of a Chinese military outpost in Tajikistan is a secret so open at this point that even Tajik officials are making little effort to hide it.

In Central Asia's forbidding highlands, a quiet newcomer: Chinese troops

🏠 📄 🗨️ 271



Villagers say dozens, maybe hundreds, of Chinese troops have been posted for three years at an outpost near Tajikistan's border with Afghanistan. (Gerry Shih/The Washington Post)



By [Gerry Shih](#)

February 18, 2019 at 8:09 p.m. EST

NEAR SHAYMAK, Tajikistan — Two miles above sea level in the inhospitable highlands of Central Asia, there's a new power watching over an old passage into Afghanistan: China.

The Washington Post

Keyword

A faster, fresher play
on a familiar game

Play now



China constructs secret Tajikistan military base amid fears of Taliban

Beijing seeks to increase its military footprint with neighbour after investing heavily in economy

By Sophia Yan, SENIOR FOREIGN CORRESPONDENT, IN AYNI

10 July 2024 • 3:30pm

MAXAR





रिपोर्ट के मुताबिक 13,000 फीट की ऊंचाई पर सुदूर पहाड़ी इलाके में स्थित चीनी सैन्य अड्डे में ऑब्जर्वेशन टावर और चीन के सैनिक भी तैनात हैं। सूत्रों ने कहा कि कथित आतंकवाद विरोधी अड्डा अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी के बाद बनाया गया था और इसके लिए समझौते पर 2021 में हस्ताक्षर किए गए होंगे। ताजिकिस्तान में रूस और भारत दोनों की बड़ी हिस्सेदारी है। मध्य एशिया में विशेषकर अफगान सीमा के निकट ताजिकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के करीब चीन का कोई भी बेस भारत और रूस के लिए टेंशन की बात है।

टेलीग्राफ ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि चीन लगभग एक दशक से दुनिया के सबसे सुदूर कोनों में से एक में बेस बना रहा है। चीन ने 2016 में ताजिकिस्तान के साथ एक सुरक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। सैटेलाइट तस्वीरें निर्माण की स्थिर गति दिखाती हैं, जिसमें बेस तक जाने के लिए सड़कें भी शामिल हैं। चीन ने अपनी सभी सीमाओं पर अपने सैनिक बढ़ाए हैं। खास तौर पर भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की है।



July 15, 2024

By RFE/RL's Tajik Service

China Denies Building Military Base In Tajikistan



Large-scale military exercises held in the south of Tajikistan (file photo)

The Chinese Embassy in Dushanbe on July 15 denied media reports that Beijing is building a military base in Tajikistan, calling the reports “groundless.” The embassy responded to a story in The Daily Telegraph showing satellite photos of buildings and what the report claimed is a shelter for helicopters in the Shaymak region of Tajikistan, near the Afghan border. The Tajik Foreign Ministry said in a statement that Dushanbe and Beijing are “actively cooperating on issues of resistance to challenges and threats.” The statement said the countries are cooperating on controlling cross-border organized crime, drug trafficking, and cybercrime, but denied the existence of the base. *To read the original story by RFE/RL's Tajik Service, click [here](#). Reuters contributed to this report.*



Global Times

@globaltimesnews



The Chinese Embassy in [#Tajikistan](#) refuted some media reports about [#China](#) having a military base in Tajik territory. The cooperation between China and Tajikistan covers numerous areas, including security cooperation. Considering the significant challenges and threats in the region, the two countries closely collaborate on international and regional organization platforms to address them but certain media reports about China having a military base in Tajik territory are unfounded. The issue is not on the agenda of China-Tajikistan negotiations, the embassy said.



4:59 AM · Jul 16, 2024 · 3,728 Views

2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH

Apni
Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Subject

HISTORY ,POLITY

GEOGRAPHY

ECONOMICS

Price

1499 /-

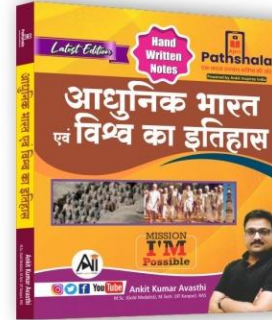
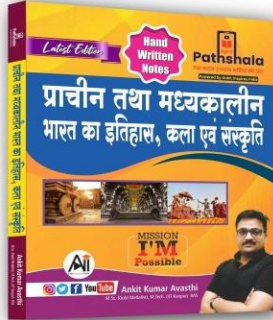
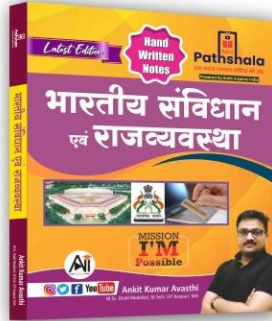
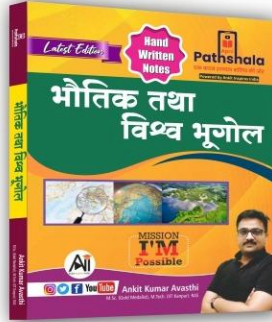
**Validity
1 Year**

By Ankit Avasthi Sir



GA FOUNDATION

Hand Written
Notes



₹ Only
1999

6 पुस्तकों
का
सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**

- सिन्धु नदी का उद्गम किलाश पर्वतीय क्षेत्र में बीखर-सू हिमनद से होता है।
- तिब्बत में इस नदी को सिंगी खंबान कहते हैं।
- यह फमचोक नामक स्थान से भारत में प्रवेश करती है।
- यह नदी भारत में लद्दाख तथा जास्कर श्रेणी के बीच बहती है।
- पाकिस्तान में यह अटक (Attock) नामक स्थानों पर मैदानों में प्रवेश करती है।
- पाकिस्तान में कराँची के पास डेल्टा बनते हुए यह अरब सागर में गिरती है।
- सिन्धु नदी की दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदियाँ :- श्योक, रुद्रा, हुनजा, गिलागिट, स्वात, काबुल तथा गोमल
- इसकी प्रमुख बायें हाथ की सहायक नदियाँ झेलम, पिनाब, रावी, व्यास, सतलज, द्रास तथा जास्कर पंचनद
- सिन्धु से पंचनद पाक में मिठानकोट नामक स्थान पर मिलती है।
- 'लेट' सिन्धु नदी के किनारे स्थित है।

पंचनद

i) झेलम :- इस नदी का उद्गम जम्मू कश्मीर में

- बेरिनाग झील से होता है।
- * यह नदी बल्लर झील का निर्माण करती है जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है।
- इस नदी के किनारे श्रीनगर स्थित है।
- किशनगंगा इसकी दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदी है।
- इस नदी पर तुलबुल परियोजना प्रस्तावित है। यह एक नवीन परियोजना है।
- यह नदी भारत तथा पाकिस्तान के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का निर्माण करती है।

ii) पिनाब :- पिनाब नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश में बारालच्छा दर्रे के पास चन्द्र तथा भागा नदियों के मिलने (Confluence) से होता है।

- 1962 में इस नदी पर जल विद्युत उत्पादन परियोजनाएँ स्थित हैं।

उदाहरण :- तुलहस्ती, सलाब, बगलिहार

- यह सिन्धु नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

iii) रावी :- रावी नदी का उद्गम शैलांग दर्रे के पास से हिमाचल प्रदेश में होता है।

- हिमाचल प्रदेश में इन नदी पर चमेरा बाँध स्थित है।
- पंजाब में इस नदी पर धीन परियोजना स्थित है।

किया। इस सिद्धान्त के अनुसार नती ब्रह्माण्ड का कोई आदि है न ही कोई अंत है। यह समयानुसार अपरिवर्तित रहता है। यद्यपि इस सिद्धान्त में प्रसरणशीलता समाहित है परन्तु फिर भी ब्रह्माण्ड के घनत्व को स्थिर रखने के लिए इसमें पदार्थ स्वतः रूप से सृजित होता रहता है।

3) दोलन सिद्धान्त (Oscillating Universe theory) :-
यह सिद्धान्त डॉ. एलन सैंडिज ने प्रतिपादित किया था। इसके अनुसार आज से 180 करोड़ वर्ष पहले एक तीव्र विस्फोट हुआ था और तभी से ब्रह्माण्ड फैलता जा रहा है। 290 करोड़ वर्ष बाद गुरुत्वाकर्षण बल के कारण इनका विस्तार रुक जाएगा। इसके बाद ब्रह्माण्ड संकुचित होने लगेगा और अत्यंत संपीड़ित और अनंत रूप से बिंदुमय आकार धारण कर लेगा। उसके बाद एक बार पुनः विस्फोट होगा और यही क्रम चलता रहेगा।

4) स्फीति का सिद्धान्त (Inflationary theory) :-
यह सिद्धान्त अमेरिकी वैज्ञानिक अलेन गुथ ने दिया था। इस सिद्धान्त के अनुसार, विवालयक अग्निपिण्ड के विस्फोट के पश्चात् अति अल्पकाल में ब्रह्माण्ड का असाधारण त्वरित गति से फैलाव हुआ और ब्रह्माण्ड के आकार में कई गुना वृद्धि हो गई।

तारों का निर्माण : तारों का निर्माण मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैस से हुआ है। आकाशगंगाओं में उपस्थित हाइड्रोजन और हीलियम गैसों के घने बादलों के रूप में एकत्रित होने के साथ इसके जीवन-चक्र का आरंभ होता है।

सौरमण्डल

सौरमण्डल का निर्माण 4.6 बिलियन वर्ष पूर्व हुआ था। सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले 8 ग्रह, 205 उपग्रह, धूमकेतु, उल्कार एवं क्षुद्रग्रह संयुक्त रूप से सौरमण्डल कहलाते हैं।

सूर्य (SUN) :- सूर्य एक गैसीय गोलू है, जिसमें 71% हाइड्रोजन, 26.5% हीलियम व 2.5% अन्य तत्व विद्यमान हैं। सूर्य का केन्द्रीय भाग कोर (Core) कहलाता है।

→ सूर्य की ऊर्जा का स्रोत उसके केन्द्र में होने वाली नाभिकीय संलयन की क्रिया है।

→ सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 16.6 सेकेंड का समय लगता है।

→ सौर ज्वाला को उत्तरी ध्रुव पर ऑरोरा बीरियालिस कहते हैं।
और दक्षिणी ध्रुव पर ऑरोरा आस्ट्रेलिस कहते हैं।

₹ 1999

CALL CENTRE

7878158882



HOW MAY I HELP YOU



AnkitInspiresIndia

➔ Download "Apni Pathshsla" app now!

Follow us:









**HINDENBURG
RESEARCH**



\$110 billion



Adani's net worth was **over \$110 billion** before the Hindenburg report, and he had replaced Mukesh Ambani as the richest man in India. 1 Jan 2024



Hindustan Times

<https://www.hindustantimes.com> › Business

How Gautam Adani raised \$15 billion after major net worth ...

F PROFILE

Gautam Adani

\$84.3B Real Time Net Worth
as of 7/17/24
[#20 in the world today](#)



PHOTO BY COURTESY OF ADANI GROUP



Adani Group

Adani Enterprises Ltd.

Adani Ports and Special Economic Zone Ltd.

Adani Power Ltd.

Adani Transmission Ltd.

Adani Green Energy Ltd.

Adani Gas Ltd.

adani

adani

adani

adani

adani

adani

Ports and Logistics

Power

Transmission

Renewables

Gas

adani

adani

Coal and Mining

Solar

adani

adani

Defence and Aerospace

Agri Fresh

adani
wilmar

CSR

adani

Healthcare

adani

Foundation

Other Business

adani

Australia

adani

Realty

adani

Institute of Infrastructure

adani

Capital

adani

Housing Finance

New Businesses

Data Center | Aviation | Road, Metro & Rail | Water | Cement

Adani, Wilmar considering to sell \$670 million stake in joint venture

Shares of Adani Wilmar have slid 6.8% this year, valuing the company at about \$5.1 billion

Advertisement



Considerations Are Ongoing, And Details Such As The Size Of The Stake Sale And Timing Could Still Change, The People Said.

Photo: Bloomberg

Bloomberg |

2 min read Last Updated : Jul 16 2024 | 11:43 PM IST



Connect with us





RICE



COOKING OIL



SUGAR



SANITIZER



SOAP



FLOUR

ADANI
WILMAR

adani
wilmar



adani
wilmar

For a healthy growing nation

fortune
rice

Inhe
Khilne Do







Soap



Handwash & Sanitizer

अडानी विल्मर लिमिटेड (AWL) की स्थापना साल 1999 में अडानी एंटरप्राइजेज़ और सिंगापुर की विल्मर इंटरनेशनल लिमिटेड के बीच एक संयुक्त उद्यम के तौर पर हुई थी. यह अहमदाबाद में स्थित एक भारतीय बहुराष्ट्रीय खाद्य और पेय समूह है. अडानी विल्मर ने भारत की कुछ बड़ी एफ़एमसीजी खाद्य कंपनियों में से एक बनकर अपनी जगह बनाई . इस कंपनी ने भारतीय उपभोक्ताओं की जरूरत को समझ कर रसोई वस्तुएं बाजार में मुहैया कराई जिनमें खाद्य तेल, गेहूं का आटा, चावल, दालें, और चीनी शामिल हैं. इतना ही नहीं इसने भारत का सबसे बड़ा पाम ऑयल प्रोसेसर स्थापित किया और अपने उत्पादों का निर्यात मध्य पूर्व, अफ़्रीका, और दक्षिण पूर्व एशिया में करने लगी .

The 50:50 joint venture (JV) between Adani and Wilmar was set up in 1999

अडाणी विल्मर ने 2027 तक देश की सबसे बड़ी फूड कंपनी बनाने का लक्ष्य देखा ।

Who We Are

Wilmar International Limited, founded in 1991 and headquartered in Singapore, is today Asia's leading agribusiness group. Wilmar is ranked amongst the largest listed companies by market capitalisation on the Singapore Exchange.

Wilmar's business activities include oil palm cultivation, oilseed crushing, edible oils refining, flour and rice milling, sugar milling and refining, manufacturing of consumer products, ready-to-eat meals, central kitchen products, specialty fats, oleochemicals, biodiesel and fertilisers as well as food park operations.

[Read more](#) ▶



Over
1,000
manufacturing plants



Multinational
workforce of about
100,000 people



Extensive distribution
network covering over
50 countries and regions

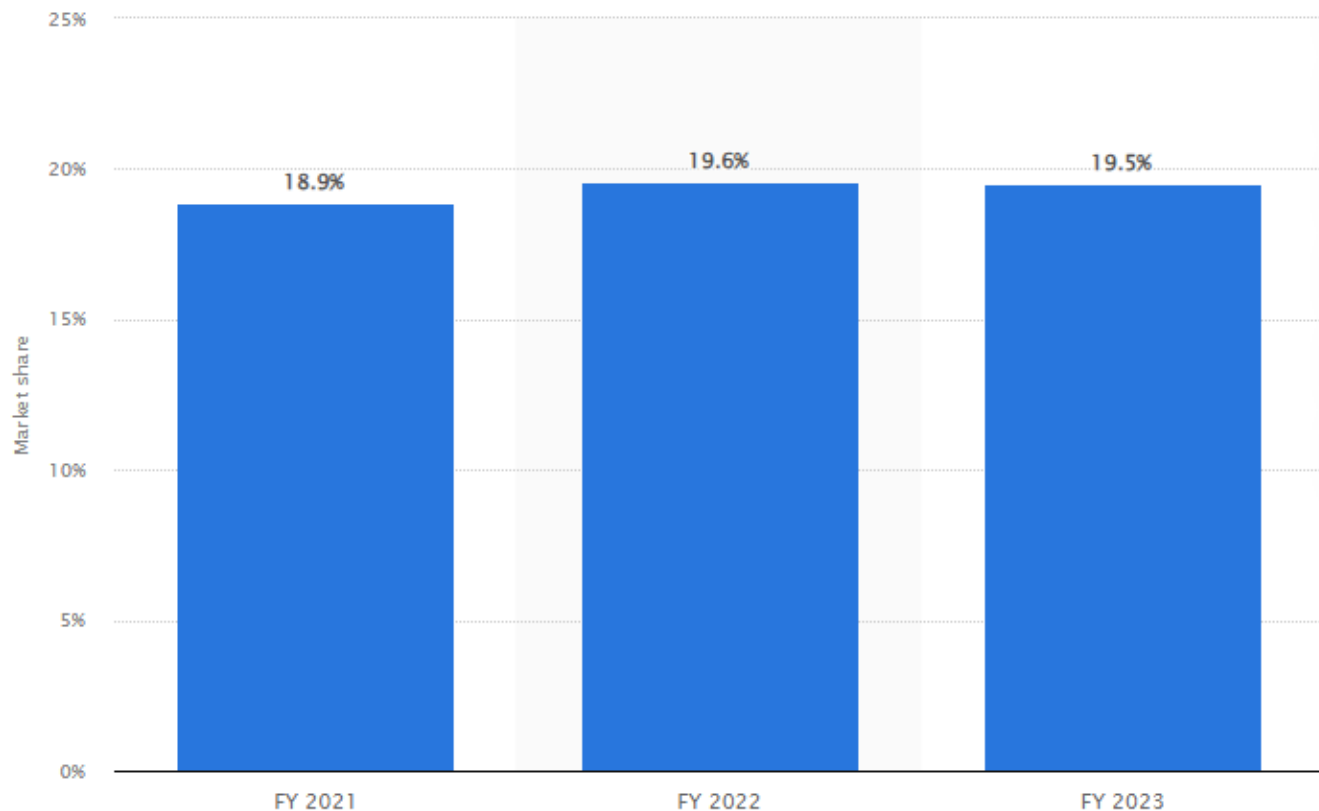


In 2005, Adani Wilmar acquired Mantralayam and Haldia plants (refining). **From 2006 to 2009**, AWL acquired multiple crushing and refining units at Bundi, Shujalpur, Nagpur and Neemuch, it also acquired Rajshri Packagers (refining), Acalmar Oils and Fats and Satya Sai Agroils (refining).

In 2011, the AWL group acquired Alwar and Mundra castor units (Crushing, refining and industry essentials). It also acquired Gokul Refoils & Solvent (Edible oil refining co.). **In 2018**, the AWL group acquired Refinery from Louis Dreyfus Commodities, Edible oil refinery from Cargill and Rice plants from Ferozepur Foods. Joint ventures of AWL include KOG-KTV Foods Pvt Ltd, KTV Health Foods Pvt. Ltd and Visakha Polyfab Pvt Ltd.

In 2022, Adani Wilmar acquired Kohinoor, Trophy Royale, and Charminarrice brands from McCormick & company.

Market share of edible oil segment in Adani Wilmar from financial year 2021 to 2023



- ★
- 🔔
- ⚙️
- 🔗
- 🗣️
- 🖨️

DOWNLOAD

📄 PDF +
📊 XLS +
🖼️ PNG +
📄 PPT

Source

- ➔ [Show sources information](#)
- ➔ [Show publisher information](#)
- ➔ [Use Ask Statista Research Service](#)

Release date

August 2023

Region

India

Survey time period

FY 2021 to FY 2023

Supplementary notes

India's financial year begins in April and ends in March. For example, FY 2023 started in April 2022 and ended in March 2023.

Milestones at a glance



#1

Market leader in edible
oil



Top 10

Consumer FMCG
companies in India



23

Manufacturing units



118 mn+

Households reach



10700+

Distributors network

About Edible Oil

We offer an extensive array of edible oil products, including soyabean oil, palm oil, sunflower oil, rice bran oil, mustard oil, groundnut oil, cottonseed oil, blended oil, vanaspati and specialty fats.

IPO

adani
wilmar

For a healthy growing nation

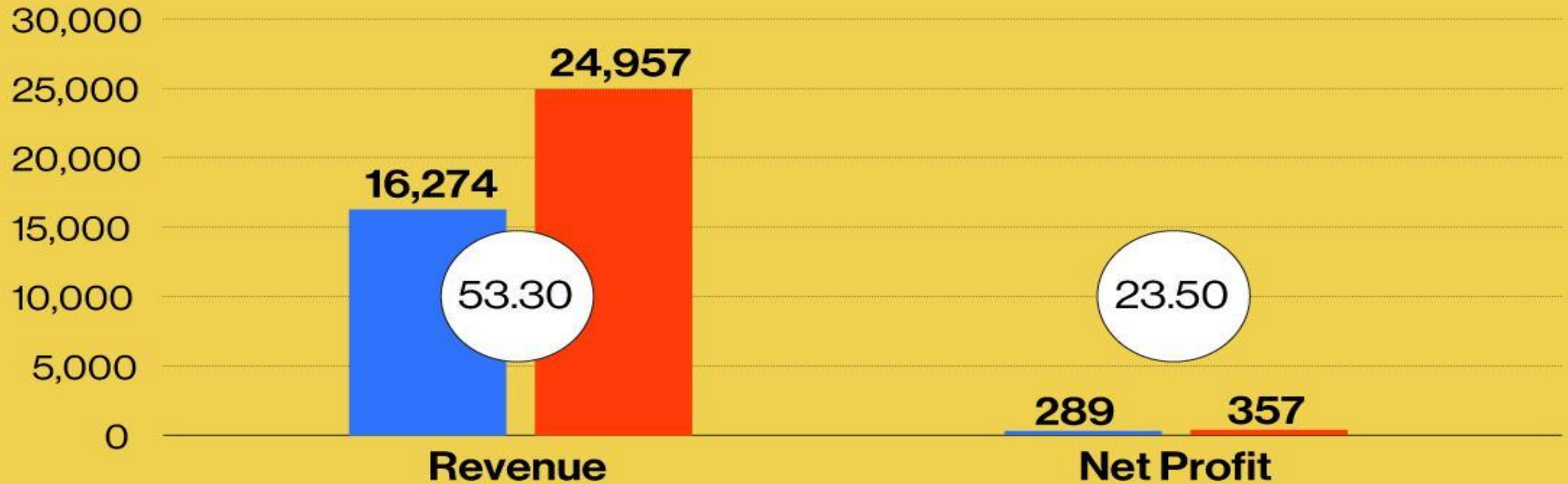
Adani Wilmar

IPO Period	27 - 31 Jan, 2022
Price Band	INR 218 to 230 Per Share
Face Value	INR 01 Per Equity Share
Lot Size/ Min. Order Quantity	65 Shares
Issue Size	Approx INR 3,600 Crs Fresh Issue: Approx INR 3,600 Crs
QIB (50%)	7,59,34,783 Shares = INR 1,746.50 Crs
NII (15%)	2,27,80,434 Shares = INR 523.95 Crs
RII (35%)	5,31,54,348 Shares = INR 1,222.55 Crs
Employee Discount	INR 21 Per Share
Allotment Date	03 Feb, 2022 (Tentative)
IPO Listing Date	08 Feb, 2022 (Tentative)

2022 में IPO के जरिए 3600 करोड़ रुपए जुटाए थे

AWL'S REVENUE JUMPED 53 PER CENT IN H1, FY2022

■ Apr-Sep, 2020 ■ Apr-Sep, 2021 ○ % Change



Source: Red Herring Prospectus and company



Adani Wilmar Ltd

NSE: AWL

Overview

Compare

Financials

Market Summary > Adani Wilmar Ltd

331.30 INR

-49.70 (-13.04%) ↓ all time

16 Jul, 3:30 pm IST • Disclaimer

1D | 5D | 1M | 6M | YTD | 1Y | 5Y | Max



Open	334.90	Mkt cap	42.99KCr	C.D.P. score	C
High	336.60	P/E ratio	290.95	52-wk high	422.70
Low	329.40	Div yield	-	52-wk low	285.80



Adani Wilmar Ltd

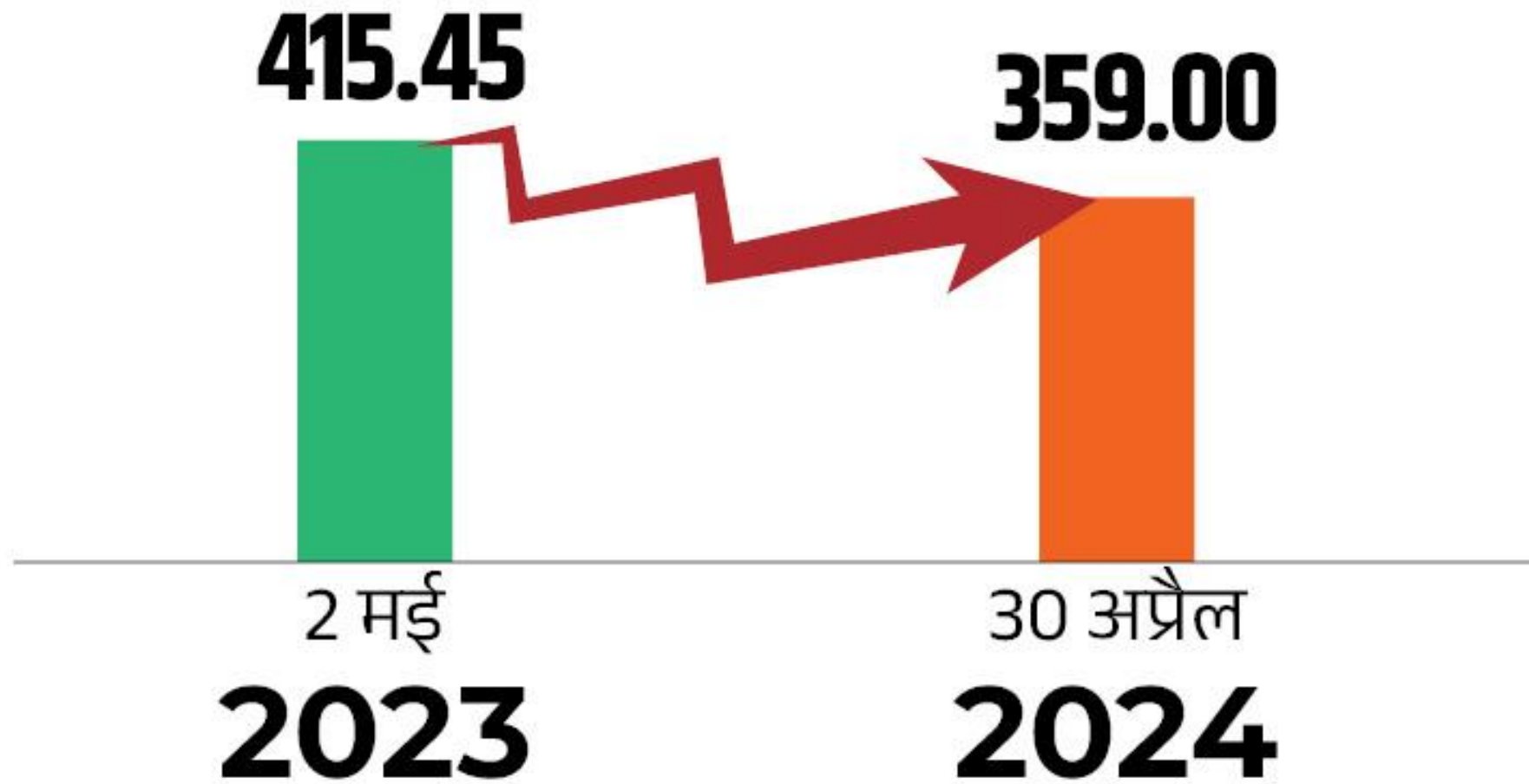
NSE: AWL

Market Summary > Adani Wilmar Ltd

429.93 billion INR

Market capitalisation

एक साल में 13.59% गिरा अडाणी विल्मर का शेयर



Adani Wilmar Shareholding Pattern

Owner Name	Jun-24	Mar-24	Dec-23	Sep-23
Promoters	87.87%	87.87%	87.87%	87.94%
Mutual Funds	0.03%	0.03%	0.06%	0.06%
Insurance Companies	0.22%	0.26%	0.06%	
Foreign Portfolio Investors	0.73%	0.77%	0.65%	0.63%
Financial Institutions/ Banks				
Individual Investors	10.34%	10.2%	10.49%	10.42%
Others	0.81%	0.87%	0.87%	0.95%

LOSS

The word "LOSS" is rendered in large, bold, red 3D block letters. The letters are placed on a white surface that has a prominent, jagged crack running through it, starting from the left and extending towards the right, passing between the 'L' and the first 'S'. The lighting creates soft shadows on the surface.

Adani Group and Wilmar International are both going to reduce their stake in the joint venture Adani Wilmar. Talks regarding this are still in the initial stage.

News agency Bloomberg News has made this disclosure on July 16 quoting sources. Talking about shares, Adani Wilmar shares have slipped by about 7 percent this year. Currently it is at Rs 330.75 on BSE. It is down by about 22 percent from one-year high and more than 62 percent from record high.

Purpose to follow shareholding pattern:

Bloomberg, citing sources, claimed that the company is taking this step with the aim of following the shareholding pattern. After this, both the owners are exploring the possibility of selling equal stake. This is likely to be 13% of Adani Wilmar. According to the report, this sale could be worth around 670 million US dollars (about Rs 54.4 billion). This is likely to happen in the coming few months.



भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड
Securities and Exchange Board of India

Shares can be sold at once or in different installments:

In the sale process, the partners (Adani and Wilmar) can sell their shares at once or in different installments. This will depend on how much interest the buyers have in it. As per SEBI rules, Adani and Wilmar have time till February next year to reduce their stake to 75%. The news, quoting sources, also said that this is still being considered and information like the size and timing of the stake to be sold may change.

Adani and Wilmar hold 88% stake in the company

Adani and Wilmar hold about 88% of the company's shares. But according to SEBI rules, it is necessary for big companies to make at least 25% of the shares available to the general public within three years of listing the shares.



2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH

Apni
Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Subject

HISTORY ,POLITY

GEOGRAPHY

ECONOMICS

Price

1499/-

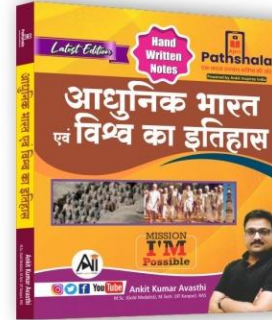
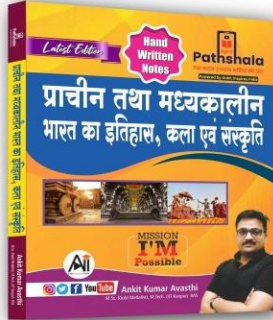
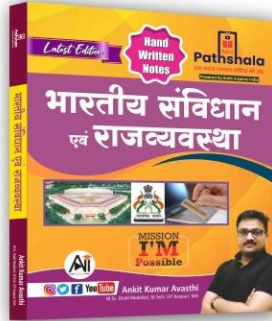
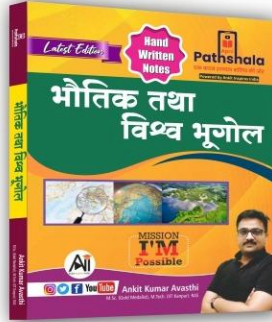
**Validity
1 Year**

By Ankit Avasthi Sir



GA FOUNDATION

Hand Written
Notes



₹ Only
1999

6 पुस्तकों
का
सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**

- सिन्धु नदी का उद्गम किलाश पर्वतीय क्षेत्र में बीखर-सू हिमनद से होता है।
- तिब्बत में इस नदी को सिंगी खंबान कहते हैं।
- यह फमचोक नामक स्थान से भारत में प्रवेश करती है।
- यह नदी भारत में लद्दाख तथा जास्कर श्रेणी के बीच बहती है।
- पाकिस्तान में यह अटक (Attock) नामक स्थानों पर मैदानों में प्रवेश करती है।
- पाकिस्तान में कराँची के पास डेल्टा बनते हुए यह अरब सागर में गिरती है।
- सिन्धु नदी की दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदियाँ :- श्योक, रुद्रा, हुनजा, गिलागिट, स्वात, काबुल तथा गोमल
- इसकी प्रमुख बायें हाथ की सहायक नदियाँ झेलम, पिनाब, रावी, व्यास, सतलज, द्रास तथा जास्कर पंचनद
- सिन्धु से पंचनद पाक में मिठानकोट नामक स्थान पर मिलती है।
- 'लेट' सिन्धु नदी के किनारे स्थित है।

पंचनद

i) झेलम :- इस नदी का उद्गम जम्मू कश्मीर में

- बेरिनाग झील से होता है।
- * यह नदी बल्लर झील का निर्माण करती है जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है।
- इस नदी के किनारे श्रीनगर स्थित है।
- किशनगंगा इसकी दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदी है।
- इस नदी पर तुलबुल परियोजना प्रस्तावित है। यह एक नवविद्यन परियोजना है।
- यह नदी भारत तथा पाकिस्तान के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का निर्माण करती है।

ii) पिनाब :- पिनाब नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश में बारालच्छा दर्रे के पास चन्द्र तथा भागा नदियों के मिलने (Confluence) से होता है।

- 1962 में इस नदी पर जल विद्युत उत्पादन परियोजनाएँ स्थित हैं।

उदाहरण :- तुलहस्ती, सलाब, बगलिहार

- यह सिन्धु नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

iii) रावी :- रावी नदी का उद्गम शैलांग दर्रे के पास से हिमाचल प्रदेश में होता है।

- हिमाचल प्रदेश में इन नदी पर चमेरा बाँध स्थित है।
- पंजाब में इस नदी पर धीन परियोजना स्थित है।

किया। इस सिद्धान्त के अनुसार नती ब्रह्माण्ड का कोई आदि है न ही कोई अंत है। यह समयानुसार अपरिवर्तित रहता है। यद्यपि इस सिद्धान्त में प्रसरणशीलता समाहित है परन्तु फिर भी ब्रह्माण्ड के घनत्व को स्थिर रखने के लिए इसमें पदार्थ स्वतः रूप से सृजित होता रहता है।

3) दौलन सिद्धान्त (Pulsating Universe theory) :-
 यह सिद्धान्त डॉ. एलन सैंडिज ने प्रतिपादित किया था। इसके अनुसार आज से 180 करोड़ वर्ष पहले एक तीव्र विस्फोट हुआ था और तभी से ब्रह्माण्ड फैलता जा रहा है। 290 करोड़ वर्ष बाद गुरुत्वाकर्षण बल के कारण इनका विस्तार रुक जाएगा। इसके बाद ब्रह्माण्ड सकुंचित होने लगेगा और अत्यंत संपीड़ित और अनंत रूप से बिंदुमय आकार धारण कर लेगा। उसके बाद एक बार पुनः विस्फोट होगा और यही क्रम चलता रहेगा।

4) स्फीति का सिद्धान्त (Inflationary theory) :-
 यह सिद्धान्त अमेरिकी वैज्ञानिक अलेन गुथ ने दिया था। इस सिद्धान्त के अनुसार, विवालयक अग्निपिण्ड के विस्फोट के पश्चात् अति अल्पकाल में ब्रह्माण्ड का असाधारण त्वरित गति से फैलाव हुआ और ब्रह्माण्ड के आकार में कई गुना वृद्धि हो गई।

तारों का निर्माण : तारों का निर्माण मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैस से हुआ है। आकाशगंगाओं में उपस्थित हाइड्रोजन और हीलियम गैसों के घने बादलों के रूप में एकत्रित होने के साथ इसके जीवन-चक्र का आरंभ होता है।

सौरमण्डल

सौरमण्डल का निर्माण 4.6 बिलियन वर्ष पूर्व हुआ था। सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले 8 गुरु, 205 उपग्रह, धूमकेतु, उल्कार एवं क्षुद्रग्रह संयुक्त रूप से सौरमण्डल कहलाते हैं।

सूर्य (SUN) :- सूर्य एक गैसीय गोलू है, जिसमें 71% हाइड्रोजन, 26.5% हीलियम व 2.5% अन्य तत्व विद्यमान हैं। सूर्य का केन्द्रीय भाग कोर (Core) कहलाता है।

→ सूर्य की ऊर्जा का स्रोत उसके केन्द्र में होने वाली नाभिकीय संलयन की क्रिया है।

→ सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 16.6 सेकंड का समय लगता है।

→ सौर ज्वाला को उत्तरी ध्रुव पर ऑरोरा बीरियालिस कहते हैं।
 और दक्षिणी ध्रुव पर ऑरोरा आस्ट्रेलिस कहते हैं।

₹ 1999

CALL CENTRE

7878158882



HOW MAY I HELP YOU



AnkitInspiresIndia

➔ Download "Apni Pathshsla" app now!

Follow us:







Ministry of Education
Government of India



PM SHRI

PM Schools for Rising India

Empowering students with 21st century skills

Centre stops school scheme funds to Delhi, Punjab & Bengal after states refuse to participate in PM-SHRI: Report

While states have to confirm their participation in PM-SHRI by signing a Memorandum of Understanding with Education Ministry— West Bengal, Delhi, and Punjab refused to do so alleging they are yet to receive third and fourth installments of SSA funds for last year's October-December and January-March period.



DH Web Desk

Last Updated : 16 July 2024, 10:09 IST

Follow Us :



0



केंद्र सरकार ने दिल्ली, पंजाब और पश्चिम बंगाल को स्कूल शिक्षा कार्यक्रम, समग्र शिक्षा अभियान (SSA) के तहत फंड देना बंद कर दिया है। यह कदम इसलिए उठाया गया है क्योंकि ये राज्य प्रधानमंत्री स्कूल्स फॉर राइजिंग इंडिया (PM-SHRI) योजना में शामिल होने से हिचकिचा रहे हैं। PM-SHRI योजना का लक्ष्य सरकारी स्कूलों को अपग्रेड करना है। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्र सरकार का कहना है कि जो राज्य PM-SHRI योजना में शामिल नहीं होंगे, उन्हें SSA के तहत फंड नहीं मिलेगा।



किस राज्य की कितनी फंडिंग रुकी?

करीब दो साल पहले लॉन्च हुई इस योजना से अब तक लगभग सभी राज्य जुड़ चुके हैं। हालांकि, अब तक तमिलनाडु, केरल, दिल्ली, पंजाब और पश्चिम बंगाल इससे नहीं जुड़े हैं। तमिलनाडु और केरल ने जहां इस योजना से जुड़ने की इच्छा जताई है, वहीं दिल्ली, पंजाब और पश्चिम बंगाल ने सीधे इनकार कर दिया है।

इंडियन एक्सप्रेस ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया है कि **PM-SHRI** योजना से नहीं जुड़ने के कारण केंद्र सरकार ने दिल्ली, पंजाब और पश्चिम बंगाल को समग्र शिक्षा अभियान के तहत पिछले तीन क्वार्टर से फंड नहीं दिया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, अक्टूबर से दिसंबर, जनवरी से मार्च और अप्रैल से जून तिमाही की फंडिंग इन राज्यों को नहीं मिली है। अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली को 330 करोड़, पंजाब को 515 करोड़ और पश्चिम बंगाल को 1 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का फंड नहीं मिला है।



समग्र शिक्षा

Samagra Shiksha



शिक्षा का अधिकार



समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

What is Samagra Shiksha Abhiyan?

Samagra Shiksha is an overarching programme for the school education sector extending from pre-school to class 12. The scheme has been prepared with the broader goal of improving school effectiveness measured in terms of equal opportunities for schooling and equitable learning outcomes. It subsumes the three Schemes of Sarva Shiksha Abhiyan (SSA), Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan (RMSA) and Teacher Education (TE) and was launched in 2018.

SAMAGRA SHIKSHA SCHEME

- On 24 May 2018, the Samagra Shiksha Scheme was launched.
- Making education available for all the children in India is the goal of the scheme.
- Digitization of Indian instruction was also one of the purposes of the plan.
- This plan was started by the Ministry of HRD.
- The central and state government together collect funds.
- The deadline is 31st August 2020 for the scheme.

Cabinet Approves Extension of **SAMAGRA SHIKSHA SCHEME**

For the next 5 years (1st April,2021 - 31st March,2026)

With an outlay of over **₹2.94 Lakh Crore**

Fulfilling Goals Envisaged Under NEP, 2020

Will cover 11.6 lakh schools, over 15.6 crore students and 57 lakh teachers of govt. and aided schools from pre-primary to senior secondary.

Ensure inclusive and equitable access to quality school education for all children.

Make students of diverse backgrounds, multi-lingual needs and different academic abilities active participants in the learning process.

Help fulfil Sustainable Development Goals for education.

Involve all stakeholders of the school ecosystem - Teachers, Teacher Educators, Students, Parents, SCERTs, DIETs, BITEs, Community, Block/Cluster Resource Persons, etc.

The Samagra Shiksha Abhiyan is a centrally sponsored scheme that runs from 2021-22 to 2025-26 with a total financial outlay of ₹2,94,283 crore. The central government's share of the funds is ₹1,85,398 crore, and the funds are shared with state governments in a 60:40 ratio.

For states in the North Eastern Region (NER) and Himalayan states, the ratio is 90:10. Union Territories without a legislature receive 100% central funding.





**WHAT IS
PM-SHRI
SCHEME ?**

Hon'ble Prime Minister
Shri Narendra Modi

launched



PM SHRI
PM Schools for Rising India

on

Teachers' Day

5th September, 2022





PM Schools for Rising India (PM SHRI)

[Home](#) > [PM Schools for Rising India \(PM SHRI\)](#) > [PM Schools for Rising India \(PM SHRI\)](#)

1 minute, 13 seconds

The Cabinet has been approved a newly central sponsored scheme called PM SHRI on 7 September, 2022. These schools will showcase the implementation of the National Education Policy 2020 and emerge as exemplar schools over a period of time, and also offer leadership to other schools in the neighborhood. They will provide leadership in their respective regions in providing high-quality education in an equitable, inclusive and joyful school environment that takes care of the diverse background, multilingual needs, and different academic abilities of children and makes them active participants in their own learning process as per the vision of NEP 2020.

Under the scheme there is provision of setting up of **More than 14500 PM SHRI Schools** (PM Schools for Rising India) by strengthening the existing schools from amongst schools managed by Central government/State/UT Government/local bodies.

The duration of scheme is proposed to be from **2022-23 to 2026-27**; after which it shall be the responsibility of the States/UTs to continue to maintain the benchmarks achieved by these schools. More than **20 lakh students** are expected to be direct beneficiaries of the scheme. The total cost of the project will be Rs 27360 crore spread over a period of 5 years which includes **central share of Rs 18128 crore**.

PM SHRI scheme:

Aim: The scheme aims to turn existing government schools into model schools.

The scheme is for existing elementary, secondary, and senior secondary schools run by the central government and state and local governments around the country.

Funding: It is a Centrally sponsored scheme with a total project cost of 27,360 crore for the period of five years from 2022-23 to 2026-27 for transforming nearly 14,500 schools across the country.

under PM-SHRI, Modi government and states will shoulder 60 and 40 per cent of the financial burden



PM SHRI

PM Schools for Rising India

Empowering students with 21st century skills

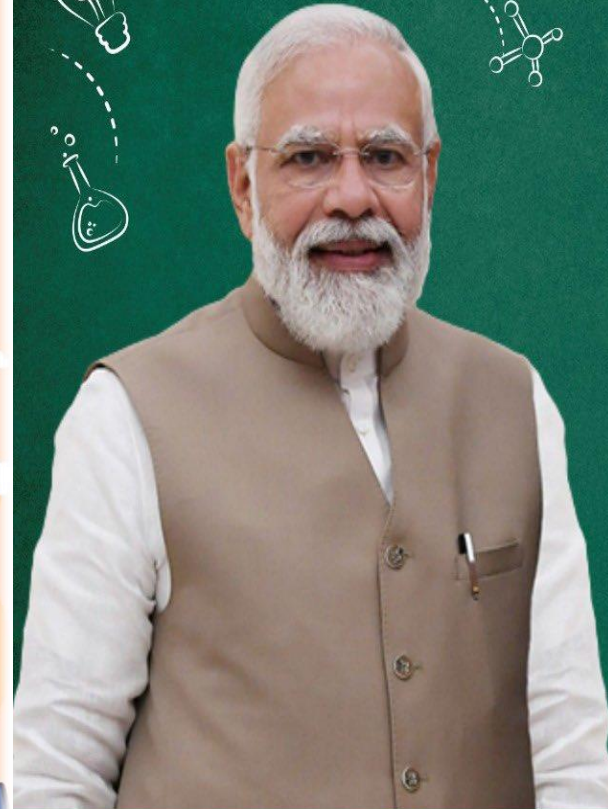
- More than 14500 Schools across the country to emerge as Exemplar Schools
- Centrally sponsored scheme (PM SHRI Schools) will be for a period of 5 Years i.e. 2022 - 2027
- PM SHRI schools will showcase all the components of NEP 2020
- Total project cost - Rs. 27360 crore over a period of 5 years
- Total Central share will be Rs. 18128 crore



PM SHRI Schools

(PM Schools for Rising India)

*Nurturing well-rounded individuals equipped with
21st century skills*



More than 14500 Schools across the country to be upgraded & developed

To act as exemplar schools & also offer mentorship to other schools in their vicinity

To showcase all components of the National Education Policy 2020

Pedagogy adopted in these schools will be more experiential, holistic, integrated & play/toy-based

To benefit lakhs of students across the country



PM SHRI

PM Schools for Rising India

Quality Assurance in

1. Curriculum, Pedagogy & Assessment

Planned curriculum, Innovative pedagogy

Learning Outcomes above national average

Mainstreaming Physical Education and Sports,

Vocational/skilling, Lok Vidya, IT skills

Participation and learning of art/music/
dance/ drama/ debate/ declamation as per
their interest

Mental well-being and Career Counselling

Focus on attitudinal change and adopting
organic lifestyle



Selection of schools:

UP has the most PM SHRI schools (1,865) followed by Maharashtra (910) and Andhra Pradesh (900). No state or local government-run schools in the non-BJP states of Punjab, Delhi, Tamil Nadu, Kerala, West Bengal, and Bihar, as well as Odisha, which got a BJP government only last month, have been included in the scheme.

PM SHRI schools are selected through the “challenge mode” — schools that meet certain minimum benchmarks (including a pucca building in good condition, barrier-free access ramps, at least one toilet each for boys and girls) can apply online.

How the PM SHRI Schools are selected?

Selection of PM SHRI schools is done through Challenge Mode wherein Schools compete for support to become exemplar schools. Selection is done through a three-stage process with definite time lines, which is as follows: -

- ▶ Stage-1: States/UTs to sign MoU with Centre laying down the commitments for supporting these schools for achieving specified quality assurance as PM SHRI schools.
- ▶ Stage-2: In this stage, a pool of schools that are eligible to be selected as PM SHRI Schools are identified based on prescribed minimum benchmark through UDISE+ data.
- ▶ Stage-3: This stage is based on the challenge method for fulfilling certain criteria. Only the schools from the above eligible pool of schools compete to fulfil the challenge conditions. Fulfilment of conditions is certified by states/KVS/JNV through physical inspection.
- ▶ States/UTs/KVS/JNV shall verify the claims reported by Schools and recommend the list of schools to the Ministry.
- ▶ An Expert committee headed by Secretary (SE&L), at Ministry of Education is constituted for final selection of schools.



PM SHRI

PM Schools for Rising India

Selection through Challenge Method with **Three Stage Process**

First Stage

States / UTs to sign MoU for implementing NEP 2020

Second Stage

Pre-selection of a pool of schools based on identified parameters

State/Central/KVS/NVS to participate

Urban/Rural Schools to be selected

Third Stage

Schools that have crossed 2nd stage will enter 3rd Stage

Schools from 2nd Stage to self apply to compete, if they fulfil the challenge conditions

Set of schools that achieve minimum weightage in challenge method to be recommended by state/central govt.

Online Challenge portal to be opened four times a year for two years

2.5 Lakhs (approx.) schools from 7200 blocks, 4200 ULBs, and KVS/NVS to participate

Maximum two schools (One Elementary & One Sr. Secondary) will be selected per block/Urban Local Bodies (ULBs)



साल में चार बार मिलेगा आवेदन का मौका:

स्कूलों को ऑनलाइन पोर्टल पर स्वयं आवेदन करना होगा. योजना के पहले दो वर्षों के लिए पोर्टल वर्ष में चार बार, प्रत्येक तिमाही में एक बार खोला जाएगा. इस योजना के लाभ पाने वाले स्कूलों के दावों का सत्यापन राज्य/केंद्र शासित प्रदेश/केवीएस/जेएनवी द्वारा किया जाएगा और चयनित स्कूलों की लिस्ट मंत्रालय को भेजी जाएगी.



पीएम श्री डैशबोर्ड पर 10,077 स्कूल

सूचीबद्ध:

पीएम श्री डैशबोर्ड ऑनलाइन में वर्तमान में 10,077 स्कूल सूचीबद्ध हैं. जिसमें से 839 स्कूल केंद्रीय विद्यालय, 599 नवोदय विद्यालय है. जिन्हें केंद्र सरकार संचालित करती है. जबकि 8,639 स्कूल राज्य सरकारों या स्थानीय सरकारों द्वारा संचालित किए जाते हैं.



WHAT WILL BE DIFFERENT IN PM SHRI SCHOOLS

➤ Introduction of vocational education

➤ Smart classrooms in all schools

➤ CCTVs

➤ Green schools with LED lights, activities promoting green schools

➤ Digital libraries, ICT and



digital initiatives, tablet for schools

➤ Rainwater harvesting facility

➤ Solar panels in schools

➤ Science labs, language lab, social science lab

➤ Gender equity initiative like sanitary pad vending machines, counselling for students

Key features of PM SHRI Scheme

- **Development of 'Green schools':** These will be equipped with solar panels, LED lights, nutrition gardens, and waste management, water conservation and harvesting systems.
- **Modern facilities:** Schools will include ICT (information and communication technologies) facilities, smart classrooms, library, digital library, science labs and vocational labs etc. Schools will also get science and math kits and annual school grants for libraries or sports.
- **Mother tongue and local languages to be encouraged.**





PM SHRI

PM Schools for Rising India

Transforming
education
with a
commitment
to

Quality Assurance

Major Pillars

**Curriculum,
Pedagogy
&
Assessment**

**Infrastructure –
Adequacy,
Functionality,
Aesthetics
and Safety**

**Human
Resources &
Inclusive
Practices**

**Management
&
Governance**

Leadership

**Beneficiary
Satisfaction**





PM SHRI

Creating holistic and well-rounded individuals
equipped with key 21st Century skills

3 Opp states say no to PM-SHRI, Centre stops school scheme funds

Delhi, Punjab cite state schemes, Bengal objects to name

**ABHINAYA HARIGOVIND,
DIVYA GOYAL GOPAL &
ATRIMITRA**

NEW DELHI, LUDHIANA,
KOLKATA, JULY 15

THE EDUCATION Ministry has stopped funds under the Samagra Shiksha Abhiyan (SSA), the flagship school education programme, to Delhi, Punjab and West Bengal because of their reluctance to participate in the Pradhan Mantri Schools for Rising India (PM-SHRI) scheme, *The Indian Express* has learnt.

The scheme, with a budget of over Rs 27,000 crore for the next five years — the Centre is supposed to shoulder 60% of the financial burden and the states 40% — aims to upgrade at least 14,500 government schools into “exemplar” institutions to showcase the implementation of the National Education Policy (NEP) 2020. States have to confirm their participation by signing a Memorandum of Understanding (MoU) with the Education Ministry.

Five states — Tamil Nadu, Kerala, Delhi, Punjab and West

Bengal — are yet to sign the MoU. While Tamil Nadu and Kerala have indicated their willingness, Delhi, Punjab and West Bengal have refused, ostensibly prompting the Centre to stop their SSA funds, it is learnt.

The three states have not received the third and fourth installments of SSA funds for the last financial year's October-December and January-March quarters, nor the first installment for the current financial year's April-June quarter. This has prompted them to send several

CONTINUED ON PAGE 2

The total 'pending' funds three states await for

While Delhi is yet to receive Rs 330 crore, Punjab and West Bengal await Rs 515 crore and Rs 1,000 crore, respectively for the aforementioned three quarters. the three state governments as alleging that when asked for the delay over pending funds under SSA— the Education Ministry did not respond.

Authorities from the Education departments of the three states are also said to have written to the Modi government at the Centre seeking release of the pending funds under SSA.

West Bengal's Education Minister Bratya Basu and Education Secretary Manish Jain are learnt to have written letters to the Ministry seeking release of SSA funds. The Delhi government, too, is learnt to have written to the Centre.

However, a senior official from the Ministry claimed that 'states cannot be receiving funds under SAA while not implementing the PM-SHRI scheme, which is a part of the programme'.



'Punjab backed out after signing MoU in 2022'

At least five letters have been exchanged between the Punjab and the Central governments since last July.

Punjab had signed the MoU in October 2022 and agreed to implement PM-SHRI. However, the party later decided to opt out. Education Minister Dharmendra Pradhan is said to have written to the state CM Bhagwant Mann in which the former said: “Punjab has unilaterally opted out of the PM-SHRI scheme, contrary to the terms stipulated in the signed MoU”.

Punjab opts out of PM's school upgrade project; Centre withholds Rs 515 crore

The Aam Aadmi Party government in Punjab has refused to implement the PM-SHRI project citing its own ongoing 'Schools of Eminence' project

Written by [Divya Goyal](#) [Follow](#)

Ludhiana | Updated: July 7, 2024 13:11 IST




JOURNALISM OF COURAGE



Punjab education secretary Kamal Kishor Yadav in a letter to the Centre wrote that the state government was already implementing its own 'Schools of Eminence'. (File photo)



Why this Opposition?

The Aam Aadmi Party-ruled states of Delhi and Punjab declined to participate because they already run a similar program for model schools called "Schools of Eminence."

However the state government of West Bengal is opposing the addition of "PM-SHRI" in their school names, given that the states bear 40% of the costs.

PM-SHRI Yojana: Centrally Sponsored Scheme:

Due to the Central government's sponsorship of the PM-SHRI program, the state or UT will bear 40% of the implementation costs, with the Center bearing the remaining 60%.

However, the central government's share might reach 90% in certain states, including the northeast, Jammu & Kashmir, Uttarakhand, Himachal Pradesh, and others.

Benefits of PM SHRI School

The PM SHRI school scheme is sponsored by the Government of India and here are the following benefits of the scheme:

- PM SHRI Scheme aims to offer high-quality education in an inclusive learning environment, catering to each student's unique background, language needs, and academic capabilities
- In line with the National Education Policy 2020, PM SHRI Scheme seeks to develop students into successful, engaged, and valuable contributors to society
- Over five years, the PM-SHRI project plans to upgrade 14,500 schools, with a total expenditure of ₹27,360 crores
- With the integration of solar panels, LED lighting, nutrition gardens, natural farming, trash management, and water conservation, these schools will be designed with a focus on sustainability
- Research on environmental practices, workshops on climate change, and effective knowledge management for a healthy approach are all part of the curriculum
- Emphasis will be on learning outcomes in every grade, with competency-based assessments focusing on conceptual understanding and real-world application
- Performance criteria for each area and the effectiveness of existing resources will be evaluated, with systematic strategies for addressing deficiencies.

Key Features of PM SHRI School Scheme

- The scheme upgrades schools to offer high-quality education in an inclusive and joyful environment
- These schools cater to diverse backgrounds, multilingual needs, and varying academic abilities
- Upgraded schools will provide leadership and mentorship to others in their regions
- Schools will be designed to be environmentally friendly, with features like water management, nutrition gardens, solar panels, and LED lighting
- They will promote environmental traditions, hold climate change hackathons, and raise awareness of sustainable lifestyles
- These schools adopt experiential, learner-centred, and enjoyable pedagogies
- Great attention is paid to each child's learning objectives in each grade, with a focus on conceptual comprehension and practical application
- They work together to improve employability with local businesses and Sector Skill Councils
- Key performance indicators for measuring results are being established as part of the School Quality Assessment Framework (SQAF)
- Regular quality evaluations of these schools will take place to make sure the required standards are fulfilled.

भारत सरकार
Government of India

शिक्षा मंत्रालय
Ministry of Education



सत्यमेव जयते

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Department of School Education & Literacy

PM SHRI



PM SHRI Schools
(PM Schools for Rising India)



2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH

Apni
Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Subject

HISTORY ,POLITY

GEOGRAPHY

ECONOMICS

Price

1499 /-

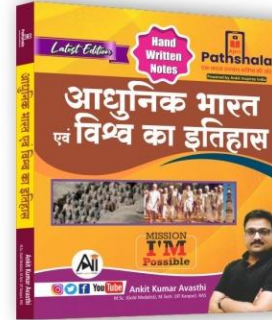
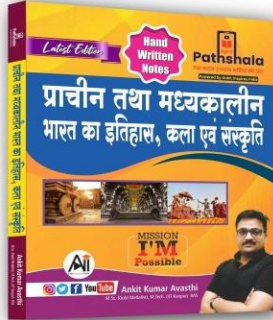
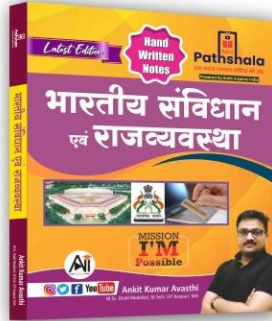
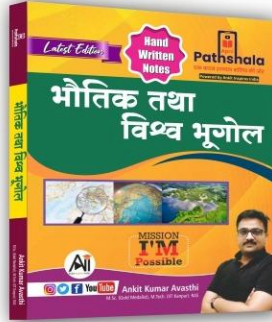
**Validity
1 Year**

By Ankit Avasthi Sir



GA FOUNDATION

Hand Written
Notes



₹ Only
1999

6 पुस्तकों
का
सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**

- सिन्धु नदी का उद्गम किलाश पर्वतीय क्षेत्र में बीखर-सू हिमनद से होता है।
- तिब्बत में इस नदी को सिंगी खंबान कहते हैं।
- यह फमचोक नामक स्थान से भारत में प्रवेश करती है।
- यह नदी भारत में लद्दाख तथा जास्कर श्रेणी के बीच बहती है।
- पाकिस्तान में यह अटक (Attock) नामक स्थानों पर मैदानों में प्रवेश करती है।
- पाकिस्तान में कराँची के पास डेल्टा बनते हुए यह अरब सागर में गिरती है।
- सिन्धु नदी की दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदियाँ :- श्योक, रुद्रा, हुनजा, गिलागिट, स्वात, काबुल तथा गोमल
- इसकी प्रमुख बायें हाथ की सहायक नदियाँ झेलम, पिनाब, रावी, व्यास, सतलज, द्रास तथा जास्कर पंचनद
- सिन्धु से पंचनद पाक में मिठानकोट नामक स्थान पर मिलती है।
- 'लेट' सिन्धु नदी के किनारे स्थित है।

पंचनद

i) झेलम :- इस नदी का उद्गम जम्मू कश्मीर में

- बेरिनाग झील से होता है।
- * यह नदी बल्लर झील का निर्माण करती है जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है।
- इस नदी के किनारे श्रीनगर स्थित है।
- किशनगंगा इसकी दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदी है।
- इस नदी पर तुलबुल परियोजना प्रस्तावित है। यह एक नवीन परियोजना है।
- यह नदी भारत तथा पाकिस्तान के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का निर्माण करती है।

ii) पिनाब :- पिनाब नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश में बाराकच्छा दर्रे के पास चन्द्र तथा भागा नदियों के मिलने (Confluence) से होता है।

- 1962 में इस नदी पर जल विद्युत उत्पादन परियोजनाएँ स्थित हैं।

उदाहरण :- तुलहस्ती, सलाब, बगलिहार

- यह सिन्धु नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

iii) रावी :- रावी नदी का उद्गम शैलांग दर्रे के पास से हिमाचल प्रदेश में होता है।

- हिमाचल प्रदेश में इन नदी पर चमेरा बाँध स्थित है।
- पंजाब में इस नदी पर धीन परियोजना स्थित है।

किया। इस सिद्धान्त के अनुसार नती ब्रह्माण्ड का कोई आदि है न ही कोई अंत है। यह समयानुसार अपरिवर्तित रहता है। यद्यपि इस सिद्धान्त में प्रसरणशीलता समाहित है परन्तु फिर भी ब्रह्माण्ड के घनत्व को स्थिर रखने के लिए इसमें पदार्थ स्वतः रूप से सृजित होता रहता है।

3) दौलन सिद्धान्त (Pulsating Universe theory) :-
 यह सिद्धान्त डॉ. एलन सैंडिज ने प्रतिपादित किया था। इसके अनुसार आज से 180 करोड़ वर्ष पहले एक तीव्र विस्फोट हुआ था और तभी से ब्रह्माण्ड फैलता जा रहा है। 290 करोड़ वर्ष बाद गुरुत्वाकर्षण बल के कारण इनका विस्तार रुक जाएगा। इसके बाद ब्रह्माण्ड सकुंचित होने लगेगा और अत्यंत संपीड़ित और अनंत रूप से बिंदुमय आकार धारण कर लेगा। उसके बाद एक बार पुनः विस्फोट होगा और यही क्रम चलता रहेगा।

4) स्फीति का सिद्धान्त (Inflationary theory) :-
 यह सिद्धान्त अमेरिकी वैज्ञानिक अलेन गुथ ने दिया था। इस सिद्धान्त के अनुसार, विवालयक अग्निपिंड के विस्फोट के पश्चात् अति अल्पकाल में ब्रह्माण्ड का असाधारण त्वरित गति से फैलाव हुआ और ब्रह्माण्ड के आकार में कई गुना वृद्धि हो गई।

तारों का निर्माण : तारों का निर्माण मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैस से हुआ है। आकाशगंगाओं में उपस्थित हाइड्रोजन और हीलियम गैसों के घने बादलों के रूप में एकत्रित होने के साथ इसके जीवन-चक्र का आरंभ होता है।

सौरमण्डल

सौरमण्डल का निर्माण 4.6 बिलियन वर्ष पूर्व हुआ था। सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले 8 ग्रह, 205 उपग्रह, धूमकेतु, उल्कार एवं क्षुद्रग्रह संयुक्त रूप से सौरमण्डल कहलाते हैं।

सूर्य (SUN) :- सूर्य एक गैसीय गोलू है, जिसमें 71% हाइड्रोजन, 26.5% हीलियम व 2.5% अन्य तत्व विद्यमान हैं। सूर्य का केन्द्रीय भाग कोर (Core) कहलाता है।

→ सूर्य की ऊर्जा का स्रोत उसके केन्द्र में होने वाली नाभिकीय संलयन की क्रिया है।

→ सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 16.6 सेकेंड का समय लगता है।

→ सौर ज्वाला को उत्तरी ध्रुव पर ऑरोरा बीरियालिस कहते हैं।
 और दक्षिणी ध्रुव पर ऑरोरा आस्ट्रेलिस कहते हैं।

₹ 1999



नए साल में 155 भूकंप के झटके

1 लाख लोगों ने घर छोड़ा, 200 इमारतें जलीं

जानिए पूरा मामला



BY ANKIT AVASTHI SIR

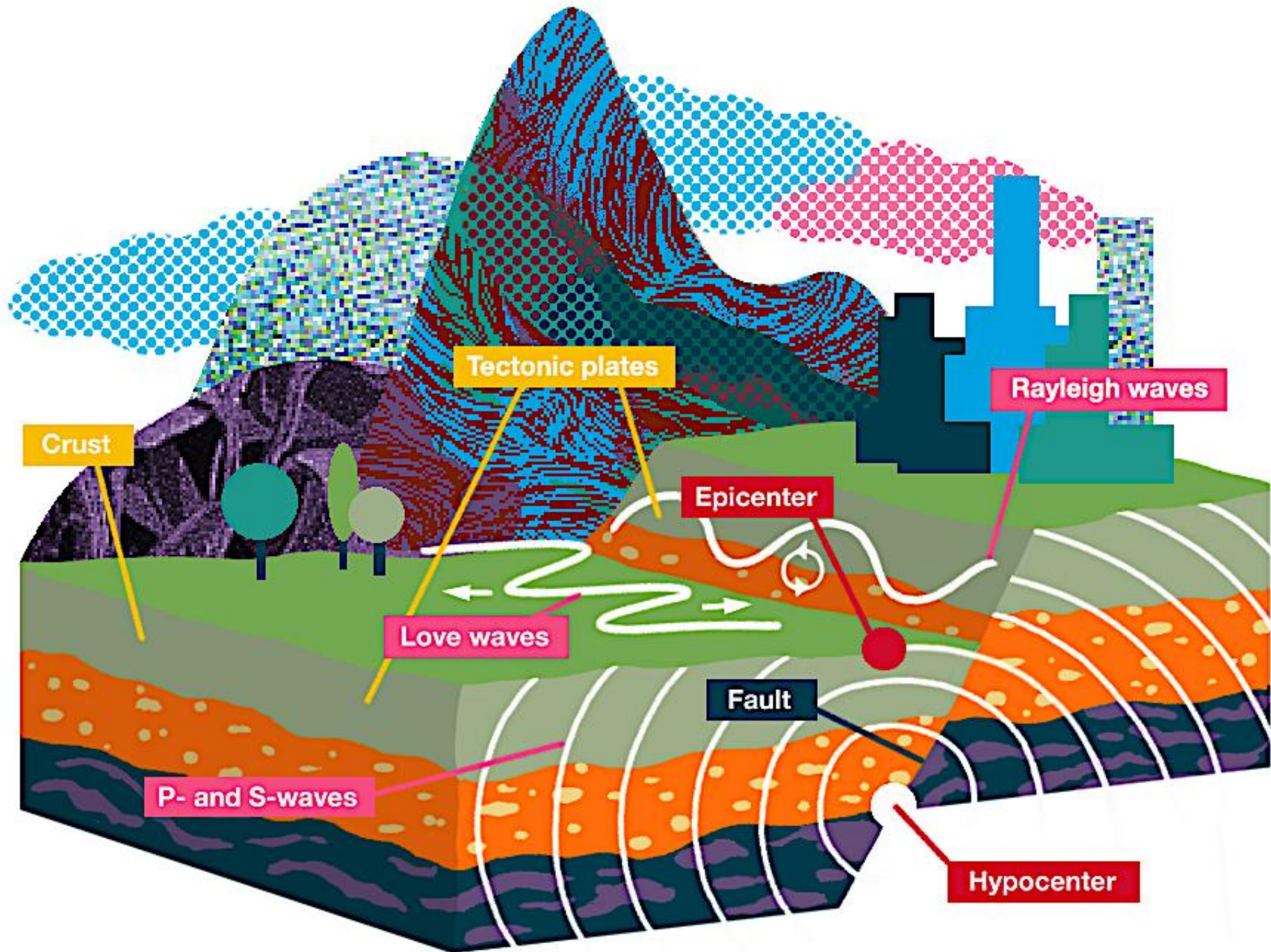
13:41

नए साल में 155 भूकंप के झटके, 1 लाख लोगों ने घर छोड़ा, 200 इमारतें जलीं | जानिए पूरा मामला

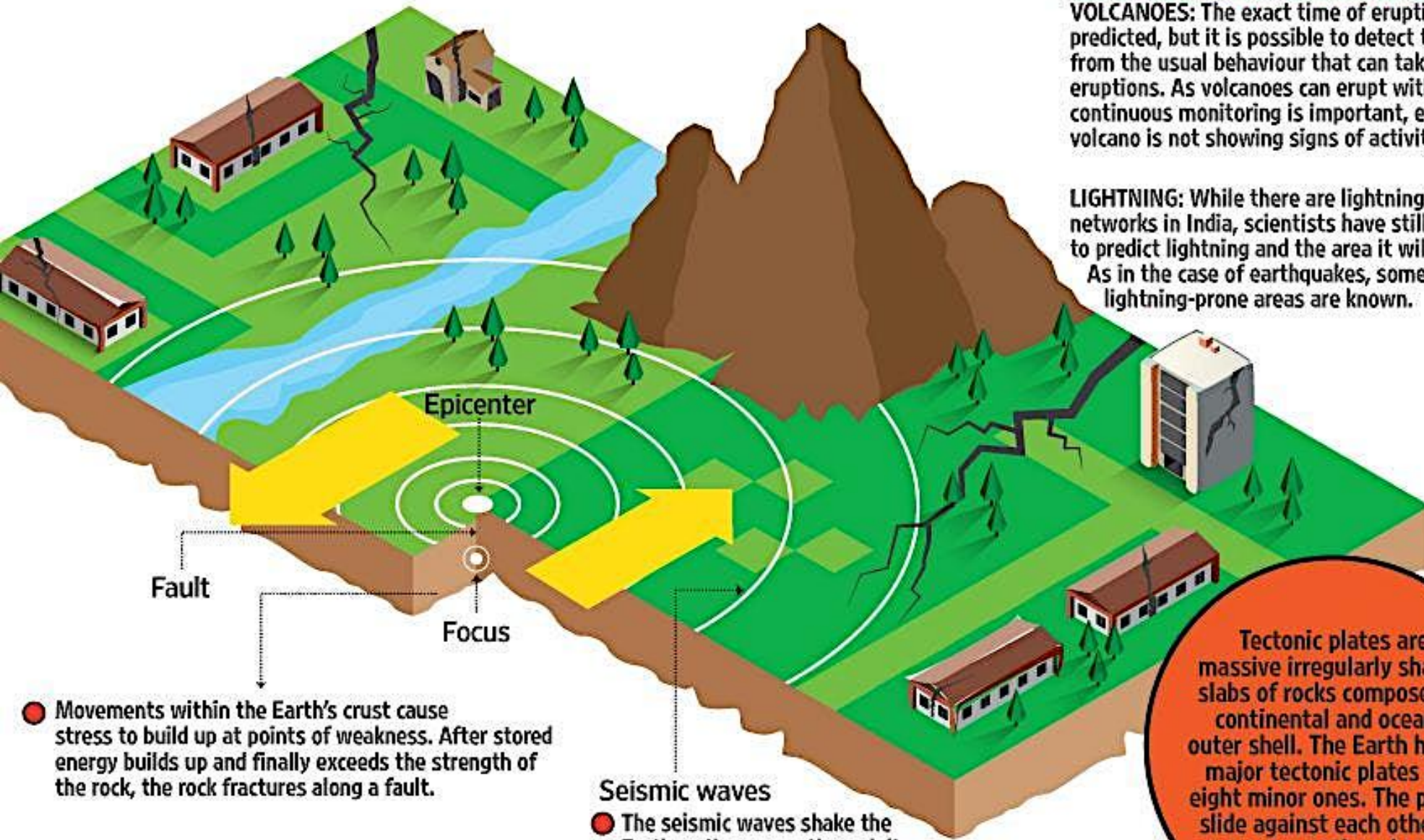
278K views • Streamed 6 months ago

Apni Pathshala

नए साल में 155 भूकंप के झटके, 1 लाख लोगों ने घर छोड़ा, 200 इमारतें जलीं ...



HOW AN EARTHQUAKE OCCURS



HARD TO PREDICT NATURAL DISASTERS

VOLCANOES: The exact time of eruptions cannot be predicted, but it is possible to detect the changes from the usual behaviour that can take place before eruptions. As volcanoes can erupt without warning, continuous monitoring is important, even if a volcano is not showing signs of activity.

LIGHTNING: While there are lightning detection networks in India, scientists have still not been able to predict lightning and the area it will strike. As in the case of earthquakes, some of the more lightning-prone areas are known.

● Movements within the Earth's crust cause stress to build up at points of weakness. After stored energy builds up and finally exceeds the strength of the rock, the rock fractures along a fault.

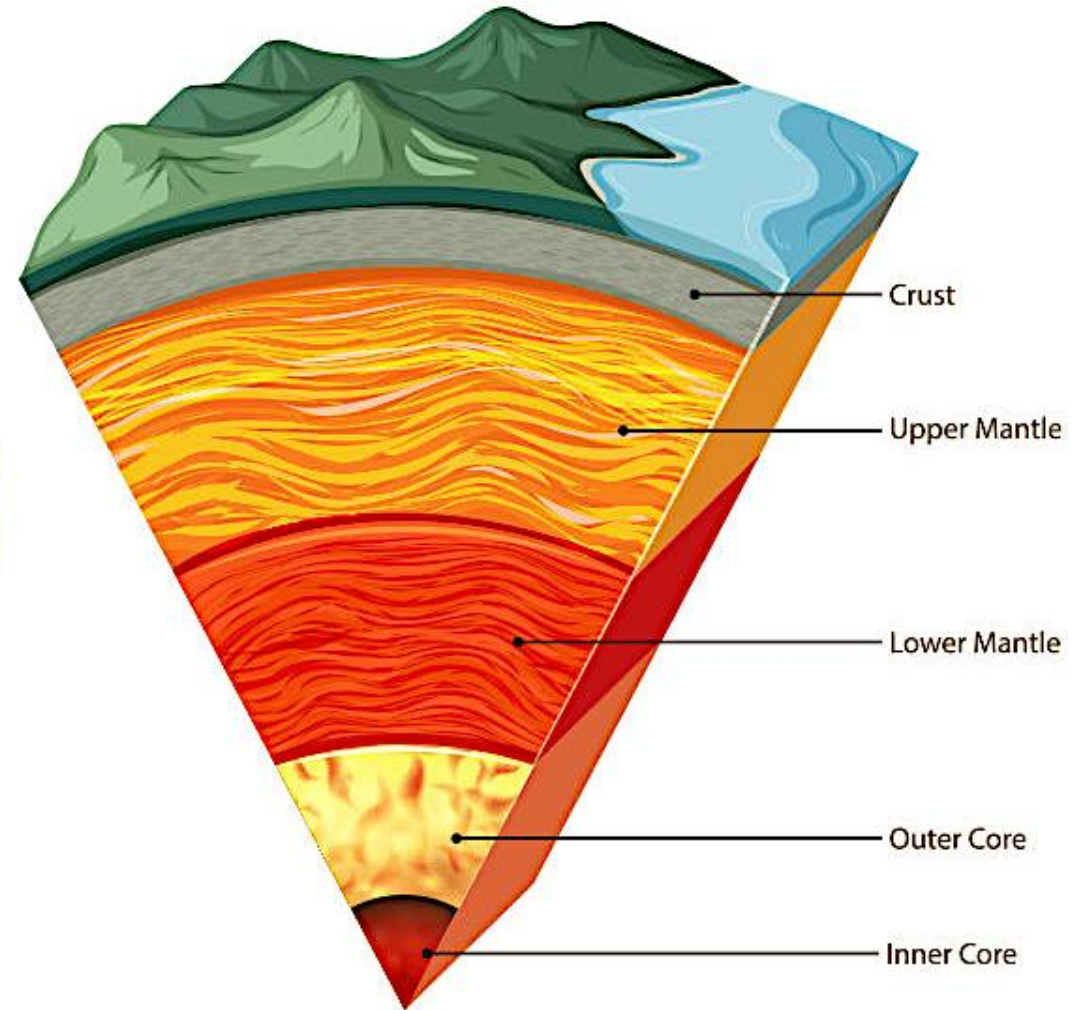
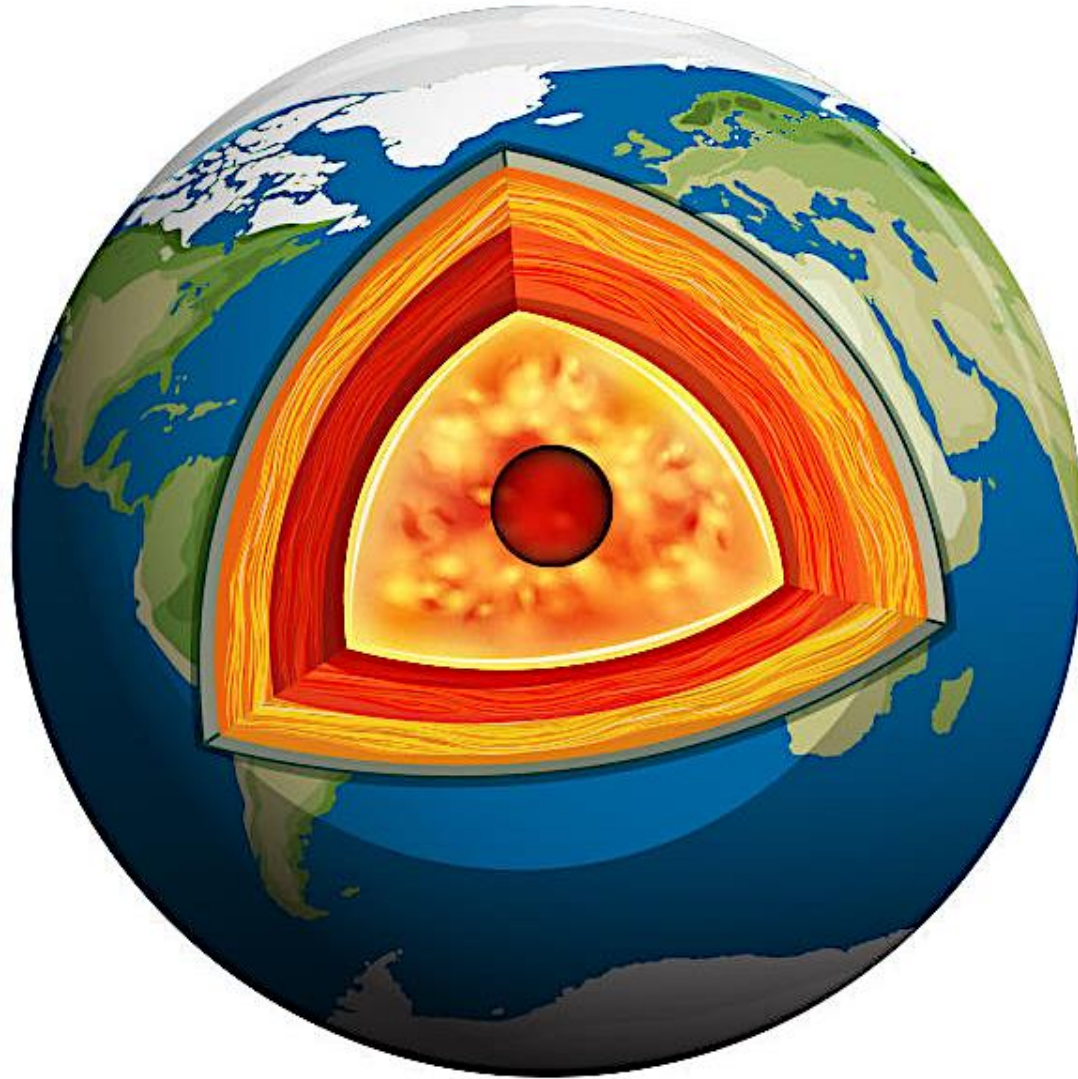
● A fault is a break in the Earth's crust, along which movement can take place, causing an earthquake. One part of the crust along the fault moves, while the other is stationary, causing the Earth's crust to rupture.

Seismic waves

● The seismic waves shake the Earth as they move through it, and when the waves reach the Earth's surface, they shake the ground, leading to the destruction we see.

Tectonic plates are massive irregularly shaped slabs of rocks composed of continental and oceanic outer shell. The Earth has 10 major tectonic plates and eight minor ones. The plates slide against each other to cause earthquakes.

INTERIOR OF EARTH





Deep Hole

**HOLE
THROUGH
EARTH**



Earthquake of 3.6 magnitude jolts Koyna region in Maharashtra

PTI - Last Updated: Jan 21, 2018, 03:42:00 PM IST

FOLLOW US SHARE FONT SIZE SAVE PRINT COMM

Synopsis

Tremors were felt in the Koyna region at 11.36 am today, according to the India Meteorological Department (IMD).



.PUNE: An [earthquake](#) measuring 3.6 on the [Richter scale](#) jolted areas near the [Koyna](#) dam in [Maharashtra](#) today, the MeT department said.

No casualty or damage to property was reported so far.

Tremors were felt in the Koyna region at 11.36 am today, according to the [India Meteorological Department](#) (IMD).

PhonePe presents share market

Open Demat A/c by 31st July

Get ZERO Brokerage* on F&O & Equity till 31st Dec

Install Now

Videos



Earthquake of 4.8 magnitude hits Koyna region in Maharashtra

Depth of the earthquake, which occurred on late Saturday night, was 10 kms below the ground and the tremors were felt in a radius of 120 kms from the epicentre

PTI

Updated • 4 Jun 2017, 07:18 PM IST



Two minor tremors in Koyna put Satara residents in a panic

Hindustan Times, Pune | By [HT Correspondent](#)

Jun 21, 2019 03:23 PM IST



Up to 10 Lakh

According to the India Meteorological Department (IMD) the first tremor was recorded at a depth of 10 km, while the second one was at a depth of 5 km.



Pune-based seismic expert Arun Bapat said, "It positively indicates the release of earthquake energy starting from the first shock and the intensity went significantly lower for the second shock." (HT File Photo)

Two low-intensity tremors measuring a magnitude of 4.08 and 3 on the Richter scale have been recorded on June 20 in the Koyna region of Satara district at 7.47 am and 8.27 am, respectively.

Home > News > Pune

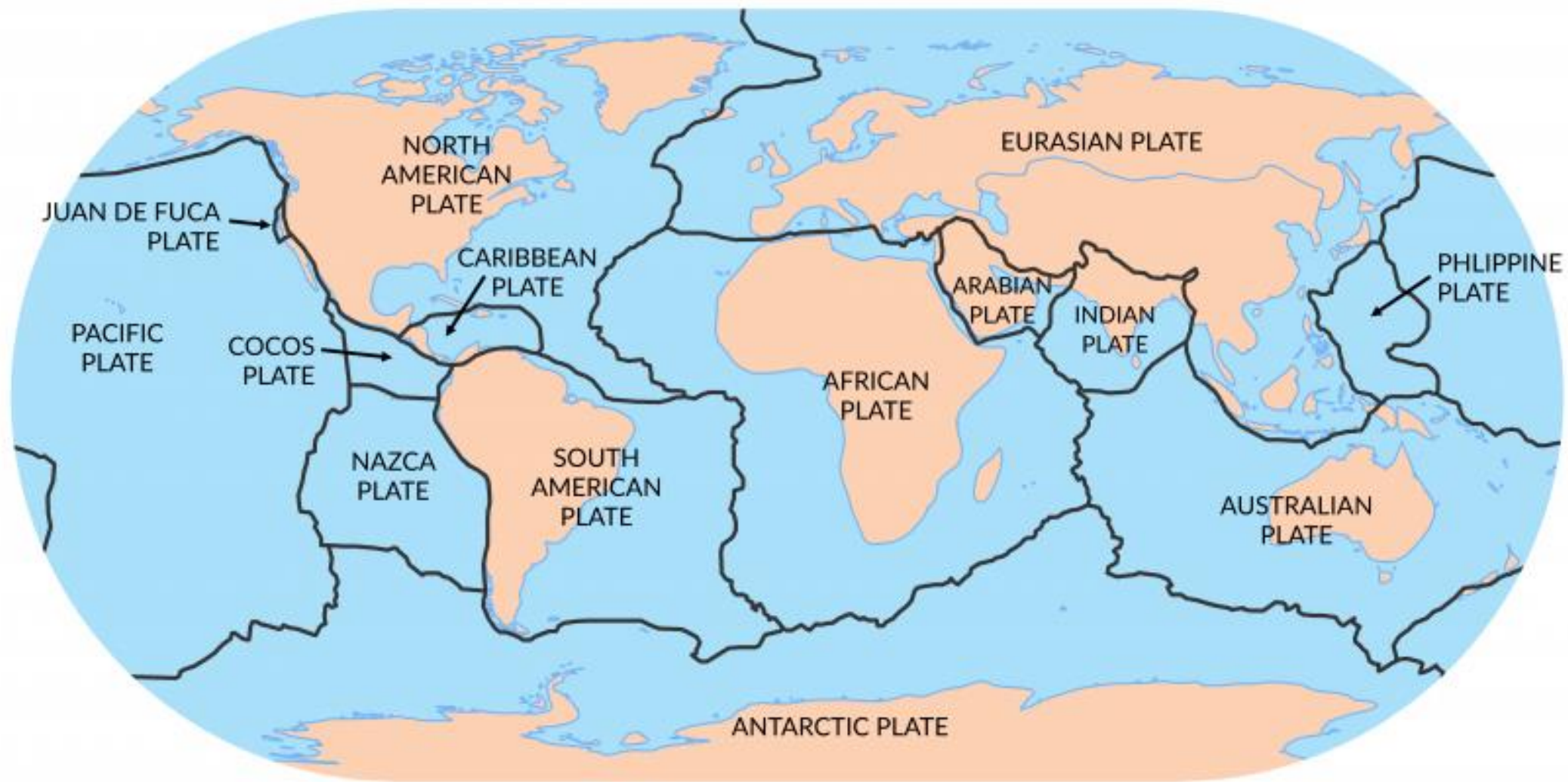
Tremor of 2.8 magnitude near Maharashtra's Koyna Dam

By PTI

Published: Friday, October 28, 2022, 11:46 [IST]



Pune, Oct 28: A tremor of 2.8 magnitude with epicentre near Koyna dam in Maharashtra's Satara district was recorded on Friday morning, an official said.



India's mission to drill a 6-km deep hole in Koyna, Maharashtra | Explained

The Koyna-Warna region has been experiencing recurrent earthquakes since the Koyna Dam was impounded in 1962

Updated - July 11, 2024 10:17 am IST Published - July 11, 2024 05:30 am IST

BHAVYA KHANNA, SUKANTA ROY, M. RAVICHANDRAN



 READ LATER  PRINT



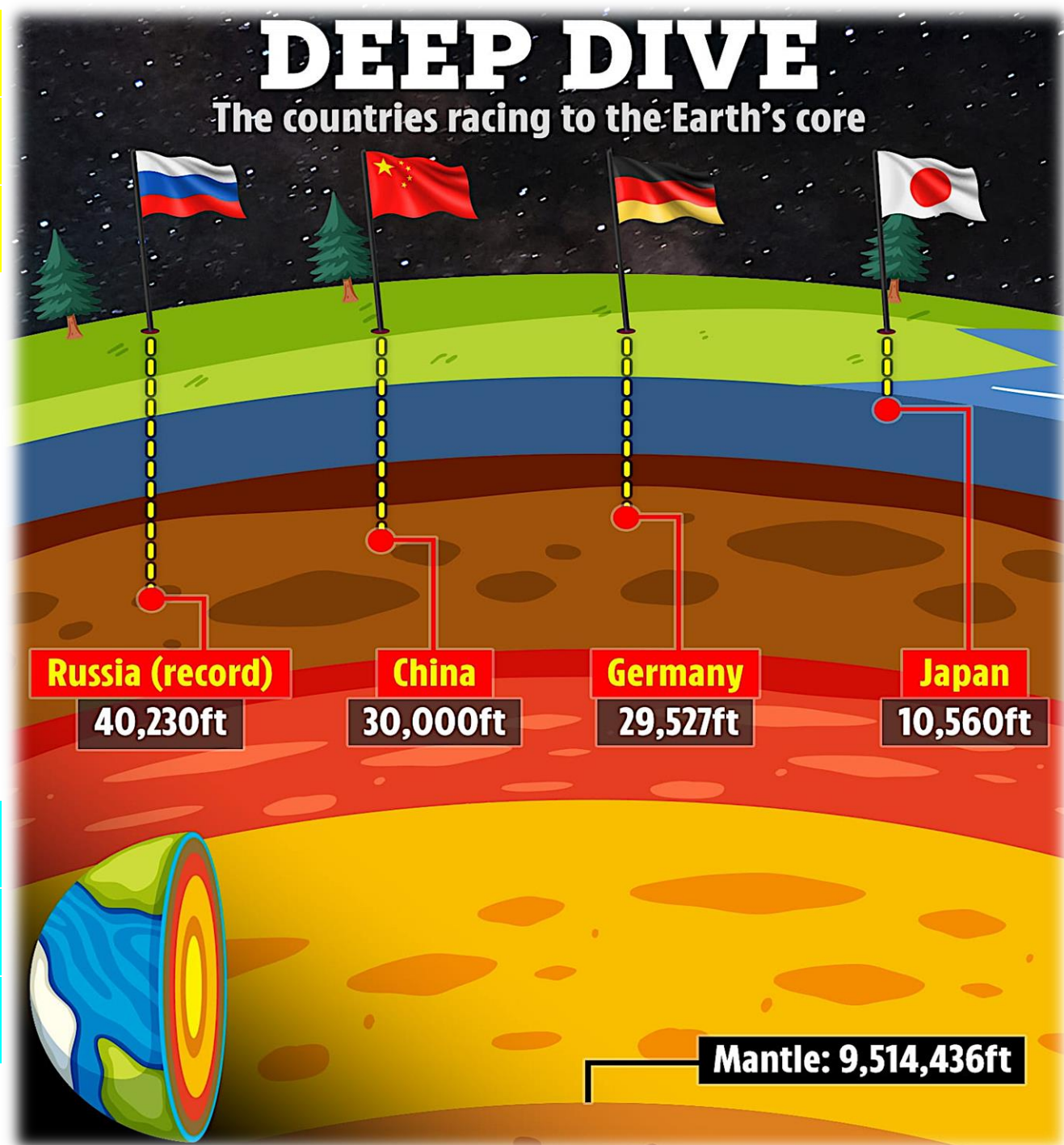
Of all that we have been studying about the earth, earthquakes remain among the least understood. Scientists don't yet have a way to predict when and where an earthquake will occur.

We know powerful earthquakes at the boundaries of tectonic plates, which measure more than 7.5 on the Richter scale, are almost certainly associated with a severe loss of infrastructure and life. In the ocean, these geological events trigger tsunamis.

However, more minor earthquakes that occur in a plate's interior are more challenging to predict because they occur at the least expected sites and could strike densely populated habitats.

This is why scientific deep drilling is an indispensable tool for progress in the earth sciences. Countries like the U.S., Russia, and Germany conducted such scientific projects in the 1990s.

Recently, in 2023, there were reports of China undertaking a deep-drilling mission of its own.



China is drilling some of the world's deepest holes in hunt for natural resources

By Chris Lau, CNN
🕒 4 minute read · Published 4:55 AM EDT, Fri July 21, 2023



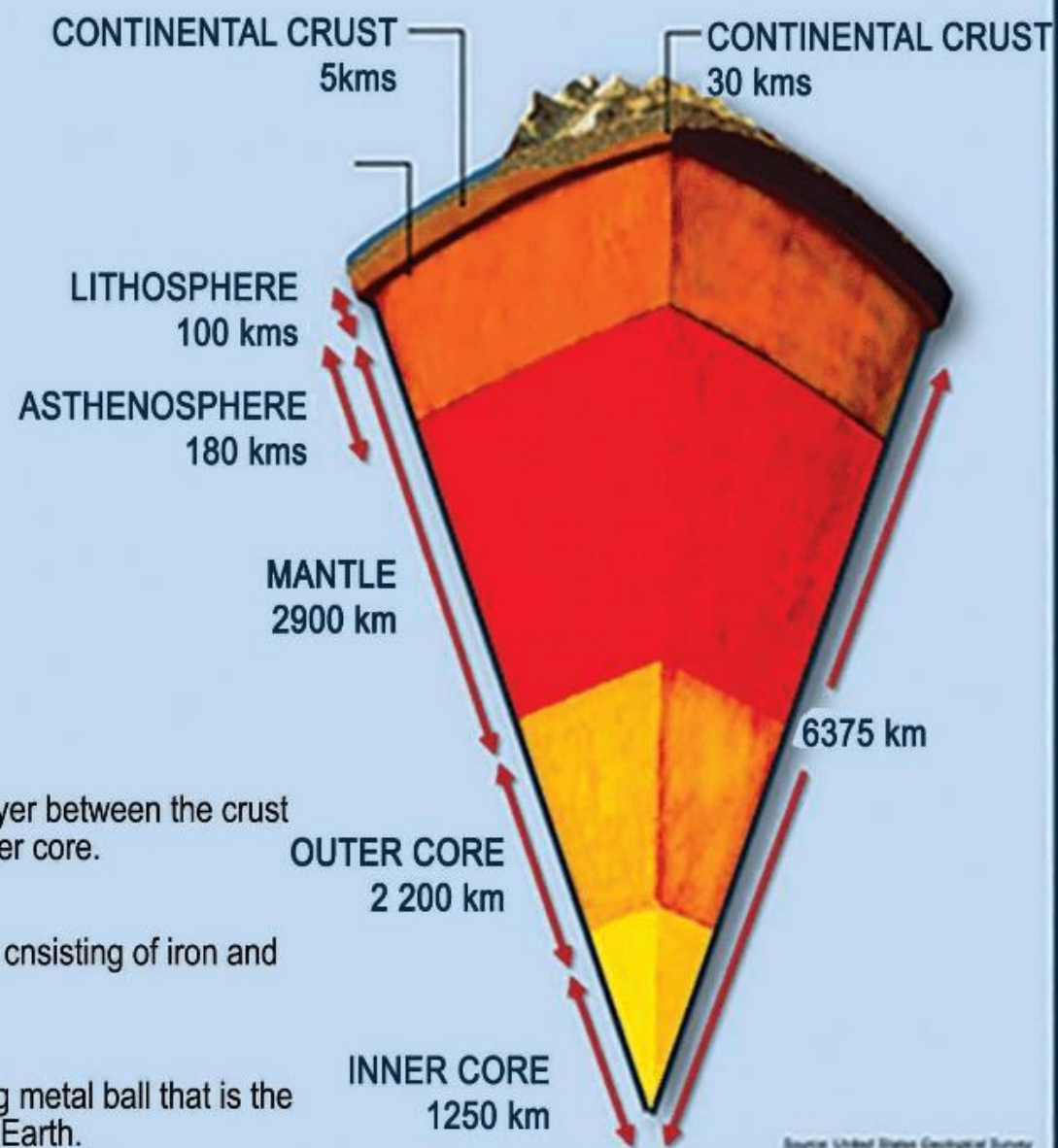
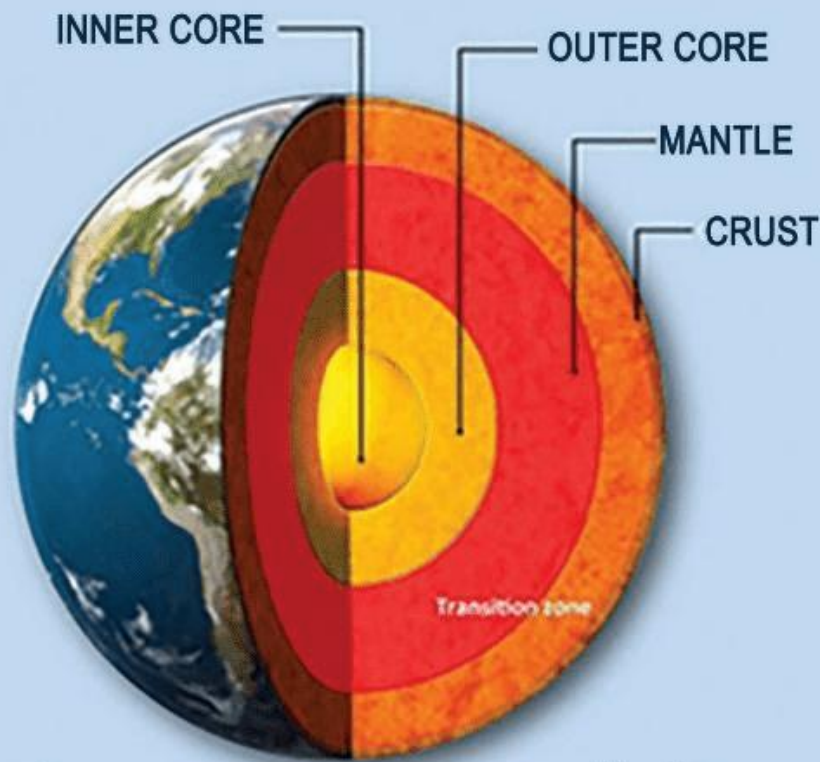
Oil workers hold a banner at Tarim Oilfield at Taklimakan Desert in Shaya County on March 9, 2023 in the Xinjiang Uygur Autonomous Region of China. Tan Hui/VCG/Getty Images/File

What is scientific deep-drilling?

Scientific deep-drilling involves digging boreholes to study deeper parts of the earth's crust, providing insights into earthquakes, rock types, energy resources, climate change, and the evolution of life.

The Borehole Geophysics Research Laboratory (BGRL) in Karad, Maharashtra, under India's Ministry of Earth Sciences, leads the country's deep-drilling program. BGRL aims to drill 6 km into the earth's crust to study reservoir-triggered earthquakes in the Koyna-Warna region, which has experienced frequent earthquakes since the Koyna Dam was impounded in 1962. A pilot borehole reaching 3 km has been completed, with plans to reach 6 km underway.

Structure of the Earth



Crust

Thickness varies from 30-40 kms under continents to 7-10 kms under the ocean.

Lithosphere

The rigid outer layer of the Earth that includes the crust and upper mantle.

Asthenosphere

A hot, mobile layer of partially molten rock.

Mantle

The mostly solid layer between the crust and the Earth's outer core.

Outer core

A fluid layer mainly consisting of iron and nickel.

Inner core

A solid, hot spinning metal ball that is the densest part of the Earth.



National Center for Seismology

Ministry of Earth Sciences, Government of India



[Home](#) [About Us](#) [Earthquakes](#) [Network](#) [Services](#) [Data Portal](#) [Safety and More](#) [Notice Board](#) [RTI](#) [Others](#) [Contact](#)

[Home](#) » [Services](#) » [Borehole Geophysics Research Laboratory](#)

Borehole Geophysics Research Laboratory

A major national project, "Scientific Deep Drilling in the Koyana Intra-plate Seismic zone of Maharashtra", has been undertaken for directly measuring the in-situ physical properties of rocks, pore-fluid pressure, hydrological parameters, temperature and other parameters of an intra-plate, active fault zone in the near-field of earthquakes - before, during and after their occurrence. As a part of the 'Preparatory Phase', various studies have been undertaken since October 2012. The studies include Broadband Seismology, Magneto-Tellurics (MT), airborne Gravity Gradiometry and Magnetics and LIDAR surveys, etc. These studies were supplemented by exploratory drilling up to depth of ~ 1.5 km in the vicinity of the seismic zone. Out of the 10 planned boreholes, 7 have been drilled so far: Rasati (1522 m), Udgiri (1196m), Kundi (1134m), Nayari (1211 m), Panchgani (1500 m), Ukhalu (1500 m) and Paneri (1500 m). Geophysical logging as well as heat flow measurements has been carried out. Also, borehole seismometers have been deployed in two holes, Rasati and Kundi. The studies have helped to delineate the sub-surface structure around the seismic zone most prospective for scientific deep drilling and fault zone investigations.

Significant results obtained from the investigations carried out so far include absence of sediments below the basalt cover; the thickness of the basalt column and its relation with the surface elevation; and almost a flat topography of the basement. The temperature at the depth of 5 km has been estimated to be around 130 to 150° C. The issues related to the design of the deep bore hole, instrumentation to be deployed, the drilling and the operational plans for drilling, and international collaboration are being addressed.

**Press Information Bureau
Government of India
Ministry of Earth Science**

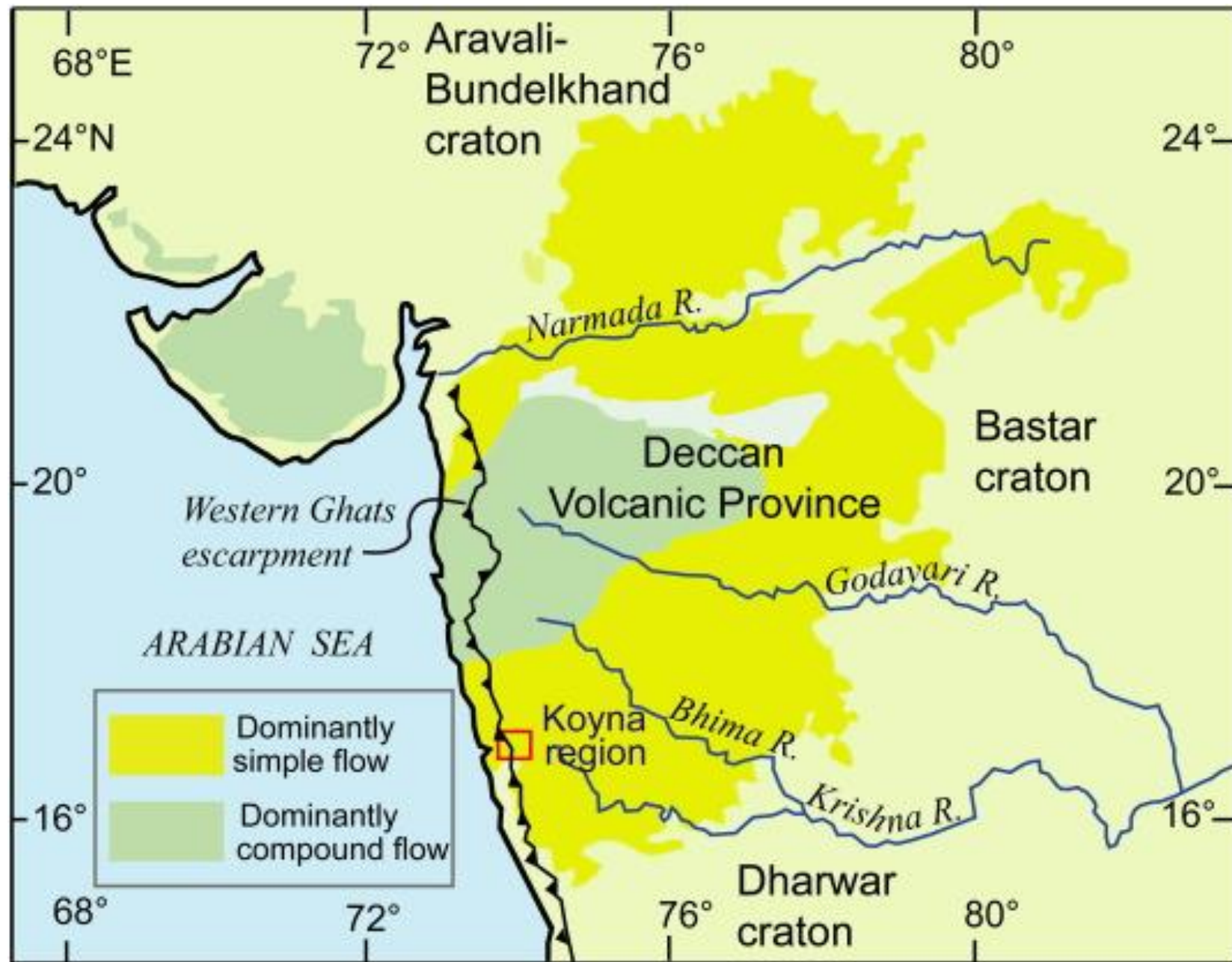
02-February-2016 11:14 IST

**Borehole Geophysics Research Laboratory (BGRL) is being set up at Karad to understand Earthquakes Mechanism in the
Koyna Region of Maharashtra**

The Union Minister for Science, Technology and Earth Sciences, Dr Harsh Vardhan led the Bhoomi-Pujan ceremony for construction of the **Borehole Geophysics Research Laboratory** at Hazarmachi, Karad. Speaking on the occasion he said the government wants to find solutions to possible problems of the people due to natural calamities through such scientific researches.

This Borehole Geophysics Research Laboratory (BGRL) is being established by the Ministry of Earth Sciences, Government of India to address challenging seismological problems of societal relevance through drilling investigations. BGRL was conceptualized as part of the Ministry's programme of **Scientific Deep Drilling in the Koyna Intra-plate Seismic Zone, Maharashtra** for geological investigations and modeling dedicated to earthquake research in the area.

Reservoir triggered earthquakes have been occurring persistently in the Koyna region since the impoundment of the Shivaji Sagar Lake in 1962. The 6.3 magnitude Koyna earthquake in 1967 is the largest triggered earthquake in the world. Till date, 22 earthquakes of magnitude 5 and above, 200 earthquakes of magnitude 4 and above, and several thousand smaller earthquakes have occurred in the region. All earthquakes are restricted to an area of 30 km x 20 km only. A strong correlation between continued earthquake activity and the annual loading and unloading cycles of the Koyna and nearby Warna reservoirs has been established. However, a model to comprehend the genesis of reservoir triggered earthquakes is elusive, due to lack of observations from near-field.





Koyna dam **overflows** | Earthquake

How can a deep-drilling mission help?

Earthquakes are complex and can't be fully understood with surface-level observations alone. In Koyna, earthquakes occur in sync with the dam's water levels during monsoon periods, offering insights into seismic activity.

Observing inside the Earth is challenging, but deep boreholes, equipped with sensors, act like telescopes to study geological processes directly.

These boreholes can be a hub of direct, in-situ experiments and observations and strategically monitor a region's fault lines and earthquake behaviour (including nucleation, rupture, and arrest), enhancing scientific knowledge and public safety.

Scientific drilling also provides exact, fundamental, and globally significant knowledge of the composition of the earth's crust, structure, and processes, and helps confirm or reject models based on surface studies. In this way, **it can provide information to inform a range of societal problems related to geohazards and geo-resources in India.**

Investing in scientific deep-drilling can also help expand scientific know-how and technological innovation, especially in seismology (the study of earthquakes).

It can also spur the development of tools and equipment for drilling, observation, data analysis, sensors, etc., which is another front on which **India has the opportunity to be self-reliant.**

static model

in relation to the chemical composition of the layers

dynamic model

in relation to the mechanical behavior of materials

depth(km)

0
7-60
30-130

crust: o.c./c.c.

upper mantle

Olivine+Px+Amph.
→ Peridotite

670

900

transition zone

lower mantle

(oxides Fe-Mg-Al-Ca-Ti-Ni-Cr.)

2885

outer core

Ni-Fe + (O₂/S)

5155

inner core

Ni-Fe

6371

sediment

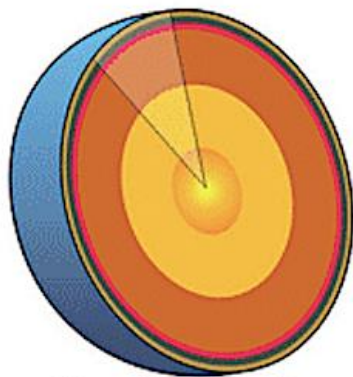
granite(upper crust). "Sial": Si/Al

basalt /gabbro (lower crust). "Sima": Si/Mg

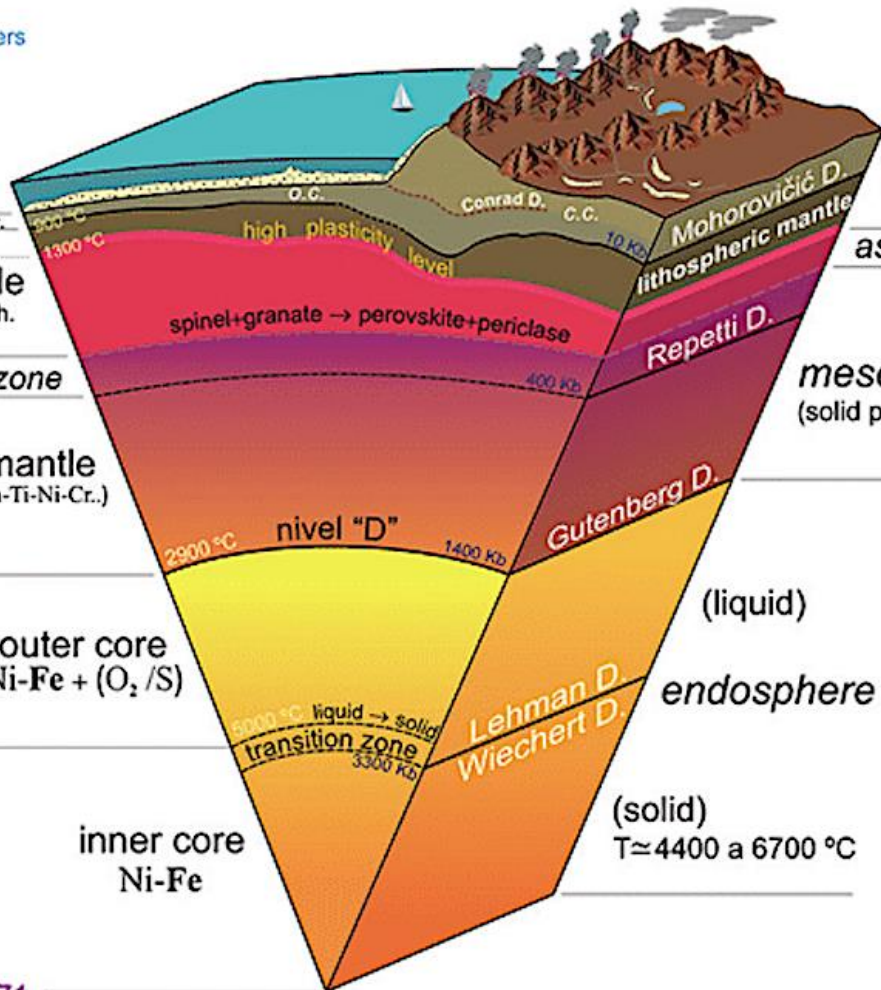
olivine: Fe₂SiO₄(fayalite) Mg₂SiO₄(forsterite)

perovskite: CaTiO₃, periclase: MgO

geothermal gradient ≈ 25-30 °C / km



Geosphere: Crust
Mantle (~82% V_T)
Core



lithosphere (solid)

asthenosphere (↑ viscosity)

mesosphere

(solid plastic: reid)

(liquid)

endosphere

(solid)

T ≈ 4400 a 6700 °C

density
g/cm³

Conrad
Moho

2.75
3.00

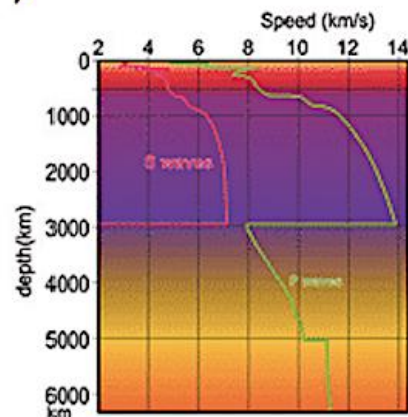
3.3

5.7

9.4

11.5

13



Why is scientific deep-drilling challenging?

Scientific deep drilling is the most reliable method to study the Earth's interior, providing direct and near-source measurements.

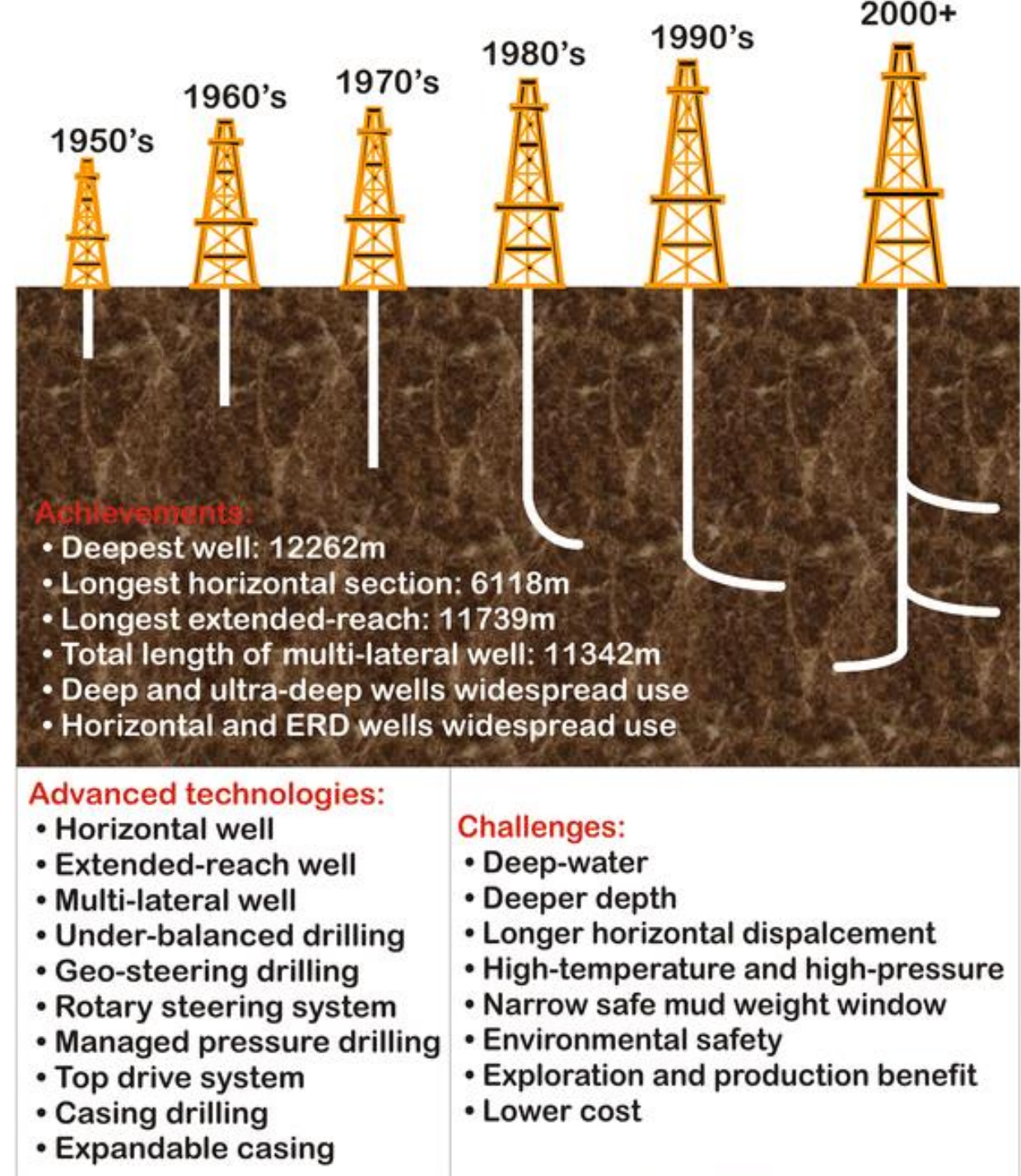
Other methods include geophysical measurements (seismic wave speed, gravitational and magnetic fields, electrical conductivity) and examining xenoliths from volcanic magma. Deep drilling also captures rock and sediment cores aligned with the Earth's timeline.

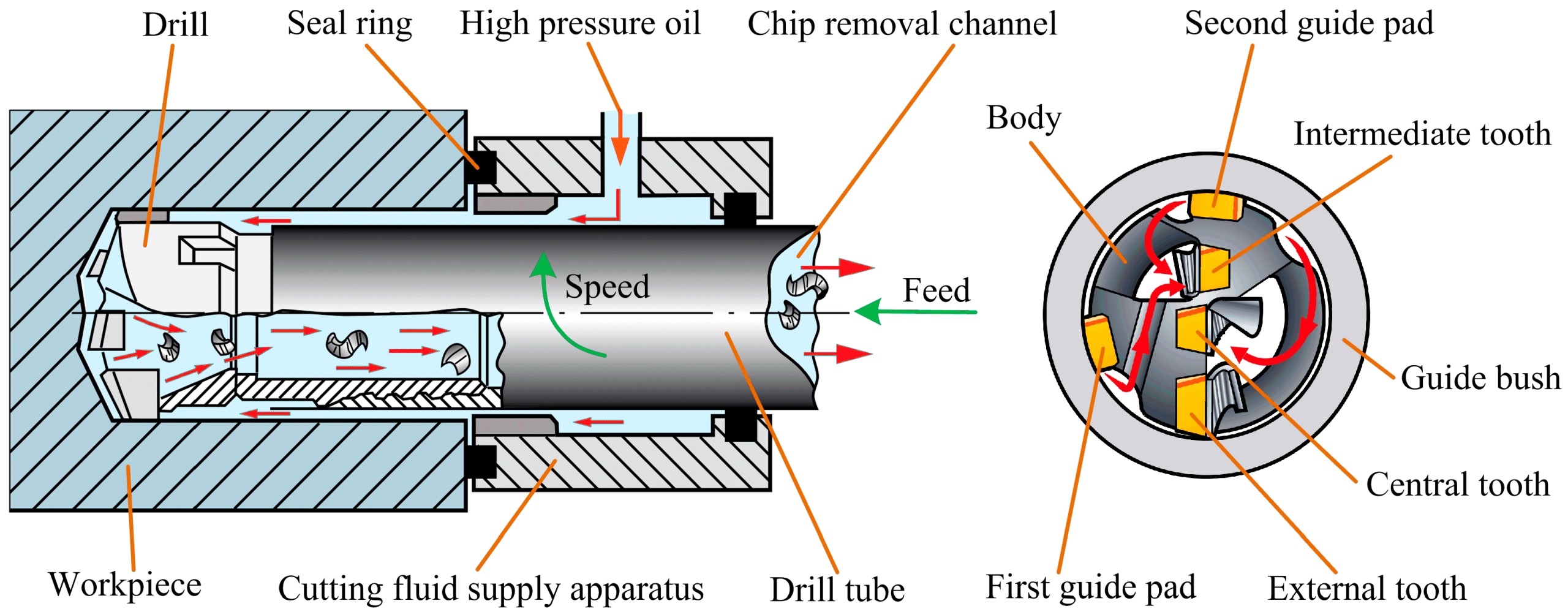
However, it is challenging due to being labor- and capital-intensive, and the harsh conditions (hot, dark, high-pressure) inside the Earth hinder long and continuous operations.

Despite the challenges, scientific pursuits are crucial. Expanding earth-science research, especially on solid earth, is vital.

Surface phenomena like water and air composition, availability, and climate interactions are linked to the earth's crust.

Thus, despite the difficulties of deep drilling, India is making the attempt.



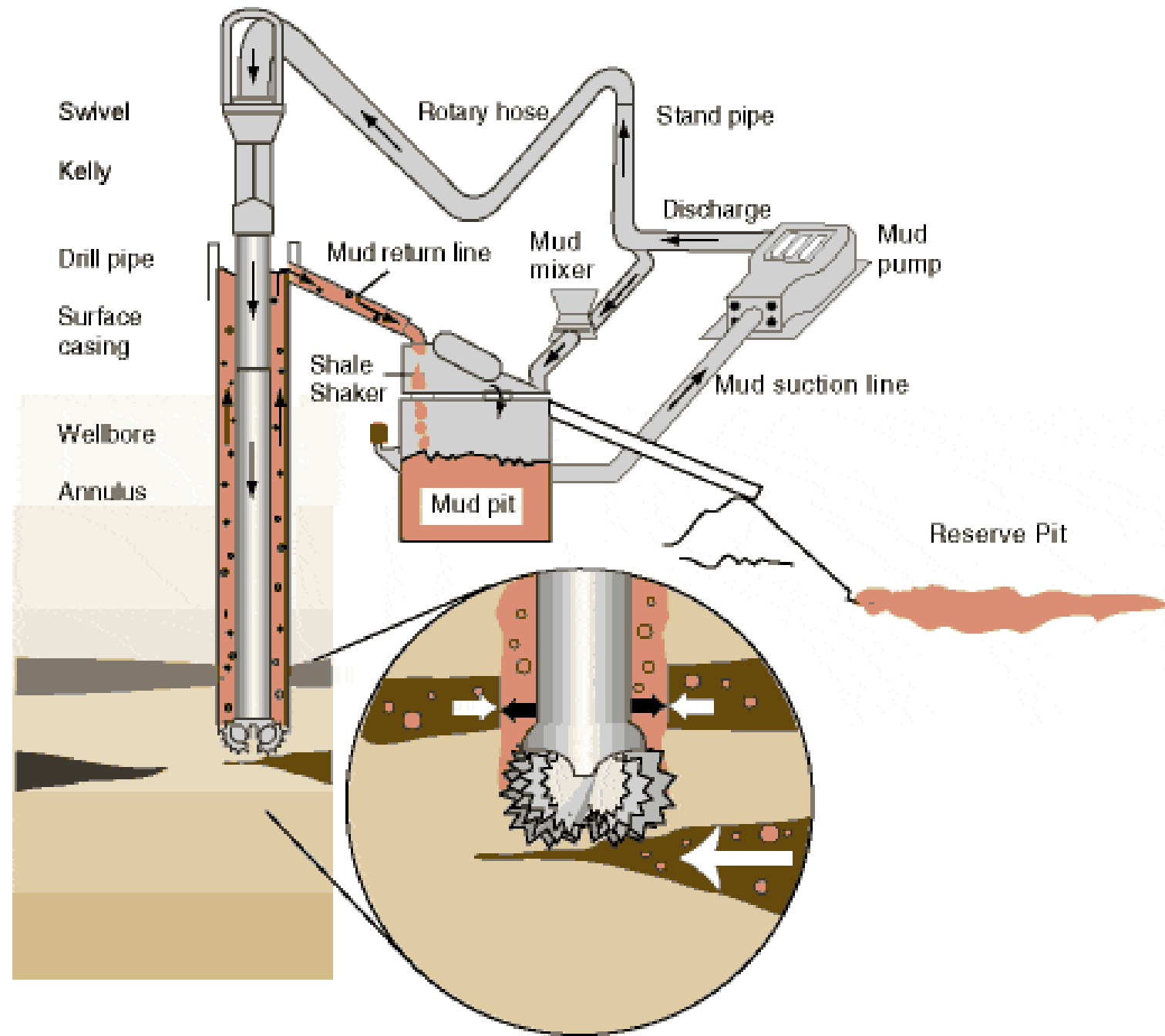
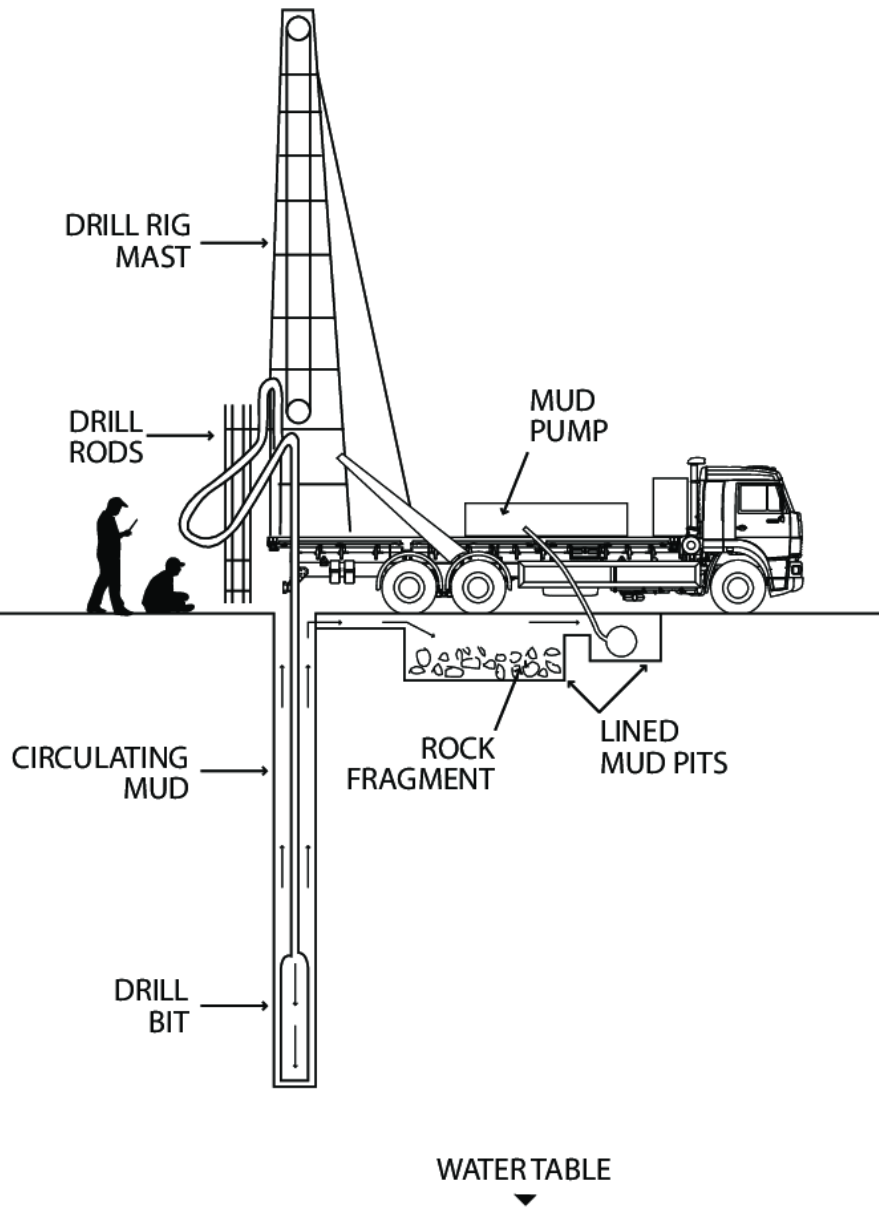


What is the drilling technique at Koyna?

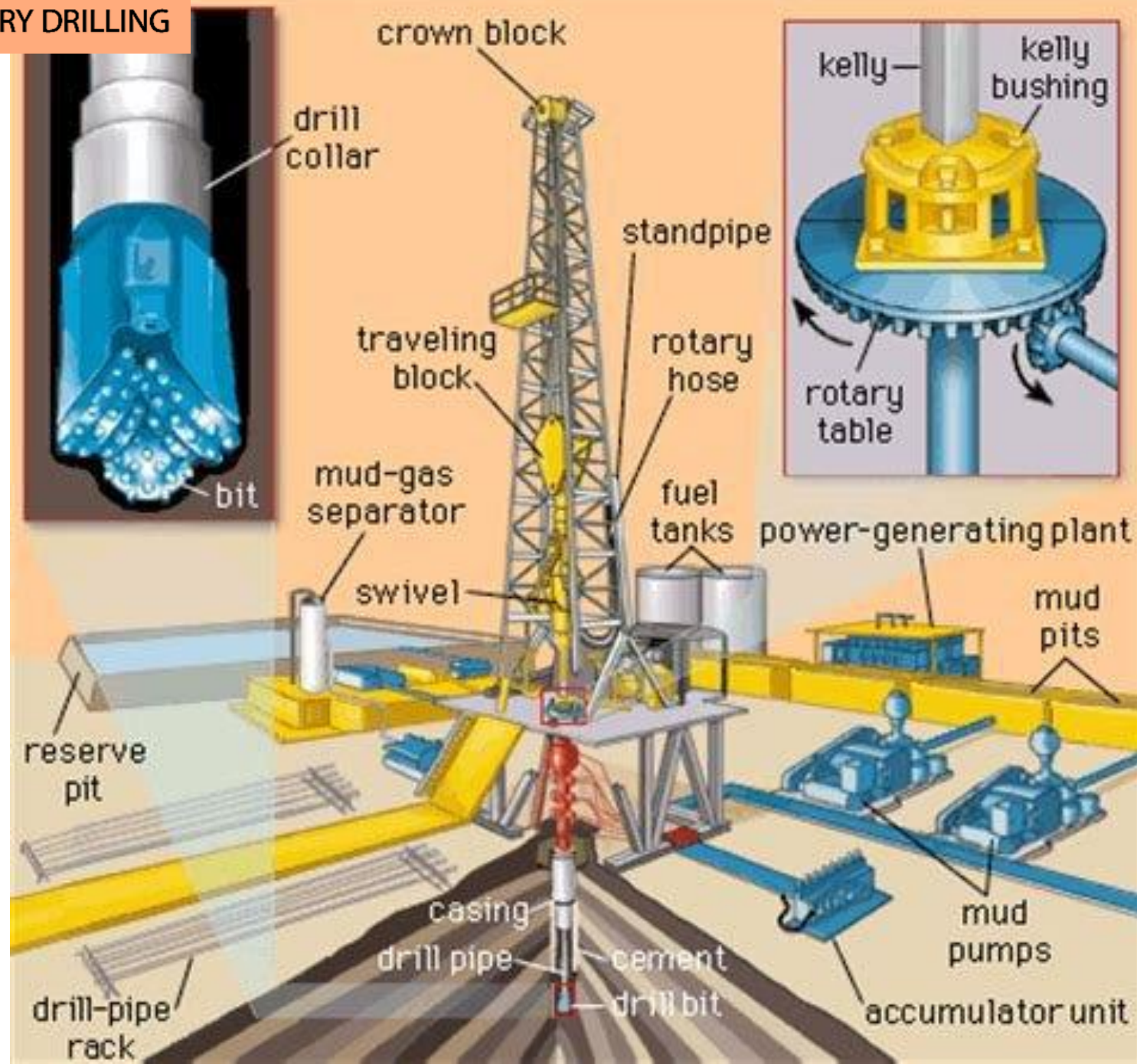
The Koyna pilot borehole, 0.45 m wide at the surface and about 3 km deep, is notable for its **hybrid drilling technique combining mud rotary and percussion drilling (air hammering)**.

In rotary drilling, a steel rod with a diamond-embedded drill bit rotates to cut through rock, generating heat and requiring a cooling liquid or drilling mud. **This mud also serves as a lubricant and helps remove rock cuttings by flowing through the rod into the borehole.** The cuttings are then pushed out of the annular space between the rod and borehole wall by the pressure of the drilling mud, with increasing depth requiring higher pressure.

ROTARY DRILLING



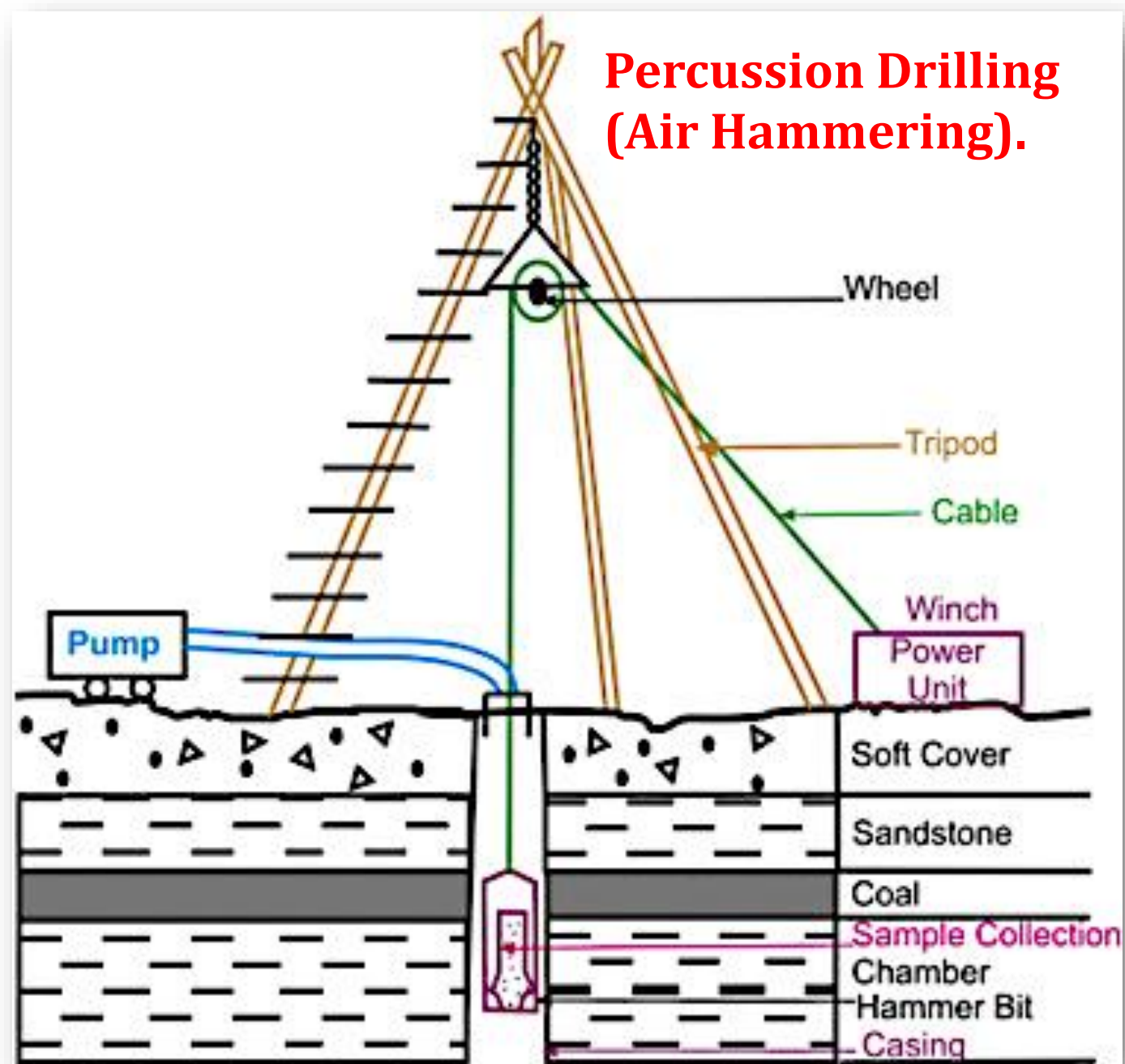
ROTARY DRILLING



Air hammering uses compressed air instead of drilling mud to deepen the borehole and remove cuttings.

At Koyna, deep-drilling operations employ a rig capable of both mud rotary and air hammering techniques. The choice depends on factors like rock type, fractured zones, water inflow, and the need for core samples.

Core samples from fault zones are crucial for earthquake research.



What are the challenges of drilling to 3 km?

Decisions like these are dynamic and require meticulous planning and expertise. **Operators typically use the mud rotary technique to obtain long, intact cylindrical cores.** In contrast, **the air-hammering technique yields rock chips for studying rock properties.**

Operators must circulate drilling mud during geophysical well logging, which involves measuring temperature, density, electrical conductivity, sonic velocity, rock porosity, and radioactivity in the borehole. **They also install steel casing pipes to secure the borehole sides.**

The hybrid drilling technique has several challenges, including the hook load capacity of the rig mast, which **increases with borehole depth and the addition of drilling rods and casing pipes.**

Additionally, deeper drilling requires significantly higher compressed air pressure to lift the cuttings.

For instance, at Koyna, a rig with a 100-tonne hook load capacity was used to manage drilling down to a depth of 3 km.

HOME/ SCI-TECH/ SCIENCE

India's mission to drill a 6-km deep hole in Koyna, Maharashtra | Explained

Why is India Drilling 6 Km Deep hole in Maharashtra?

- The aim is to conduct **scientific observations** and analysis to help expand the **understanding of reservoir-triggered earthquakes** in the **active fault zone** in the **Koyna-Warna region** of Maharashtra.

What is scientific deep-drilling?

- It is the enterprise of strategically digging boreholes to **observe and analyse deeper parts of the earth's crust.**
- It offers opportunities and access to **study earthquakes and expands our understanding of the planet's history,** rock types, energy resources, life forms, etc.

Who is executing the drilling Program?

- **Borehole Geophysics Research Laboratory (BGRL)** under the **Ministry of Earth Sciences** of the Government of India.



Source: The Hindu

KOYNA PILOT BOREHOLE (3014 m

Borehole Geophysics Research Laboratory, Ministry of Earth Sciences, Govt. of India

What are the challenges of drilling to 6 km?

In the next phase, **increasing borehole depth beyond 3 km to 6 km requires significantly upgrading the rig's capacity.** Drilling through fractured rocks **in the Koyna seismic zone introduces complexities and higher risks of drill rods and sensors getting stuck.**

Troubleshooting becomes harder due to limited access and the softer rocks causing drilling mud loss. **Extracting a heavy granite core from over 3 km is technically demanding.** Operators will face frequent fault lines and water intrusion, potentially stalling drilling.

If troubleshooting fails, the borehole may need to be abandoned. Steering the borehole at the desired inclination requires specialized, constantly adjusted equipment. **Thus, meticulous planning and execution are crucial for deep drilling.**

Human resources are also a challenge in scientific deep drilling.

The process needs highly skilled and trained technical personnel for a 24/7 on-site engagement for about six to eight months at a time in harsh weather conditions — and this was the case for the 3 km pilot borehole.

For a 6 km borehole, 24/7 drilling will last for at least 12-14 months.

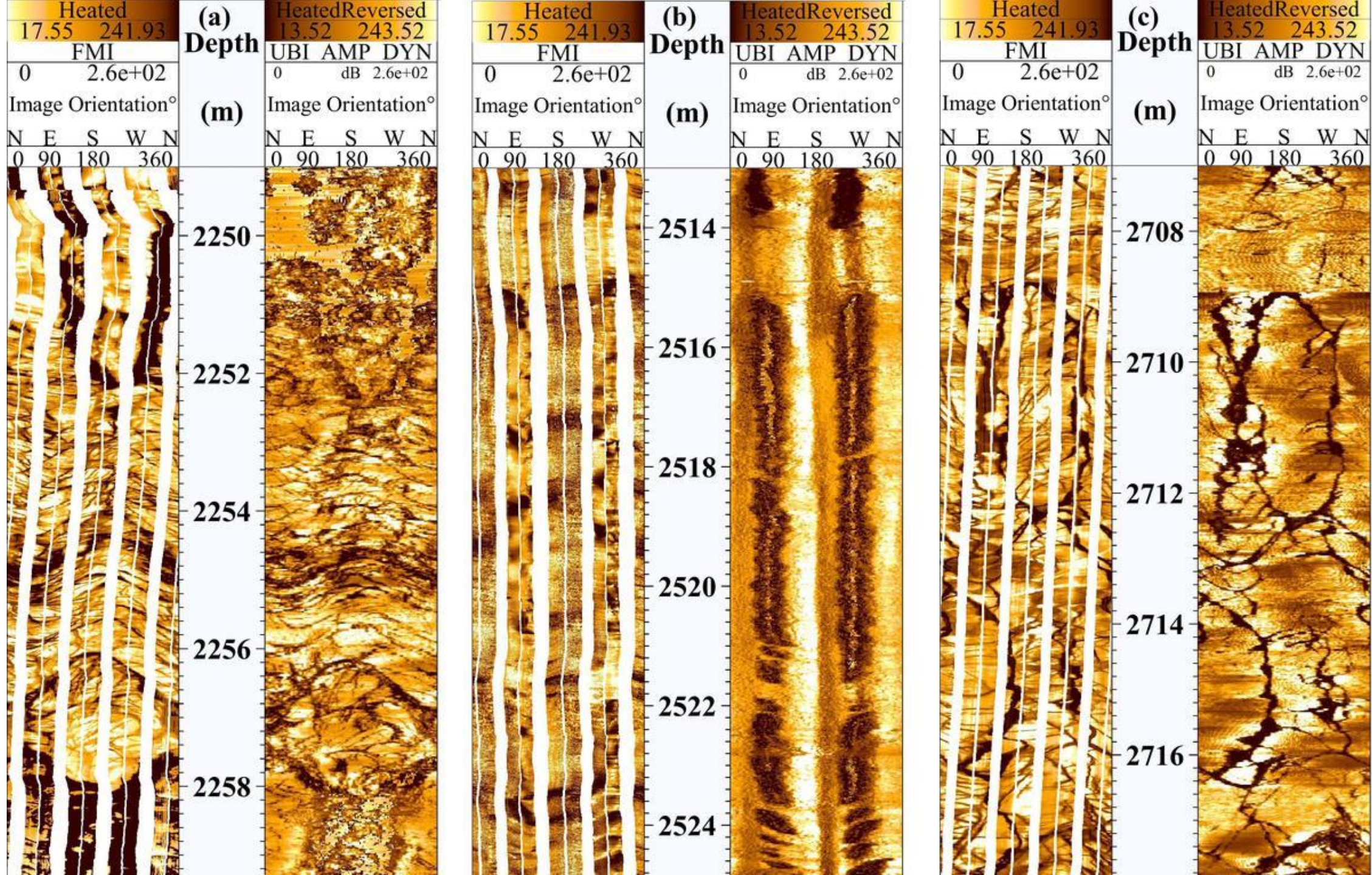




What have scientists found so far?

The pilot drilling mission was a success, uncovering significant subsurface geological information. It revealed 1.2-km thick, 65-million-year-old Deccan trap lava flows and 2,500-2,700-million-year-old granitic basement rocks below them.

Additionally, downhole measurements from 3 km deep provided new data on rock properties, the chemical and isotopic composition of fluids and gases, temperature and stress regimes, and fracture orientations, offering insights into reservoir-triggered earthquake mechanisms.



We captured high-resolution borehole wall images using acoustic and micro-resistivity techniques, enabling global scientists to validate core data.

The Koyna team also conducted hydraulic fracturing to measure the in-situ stress regime, providing long-term data to understand recurrent earthquakes. By integrating datasets and advanced analysis, the team detected buried fault zones and studied their properties.

Notably, water was found down to 3 km, indicating deep percolation. The region is critically stressed, making it susceptible to small perturbations causing frequent, small earthquakes.



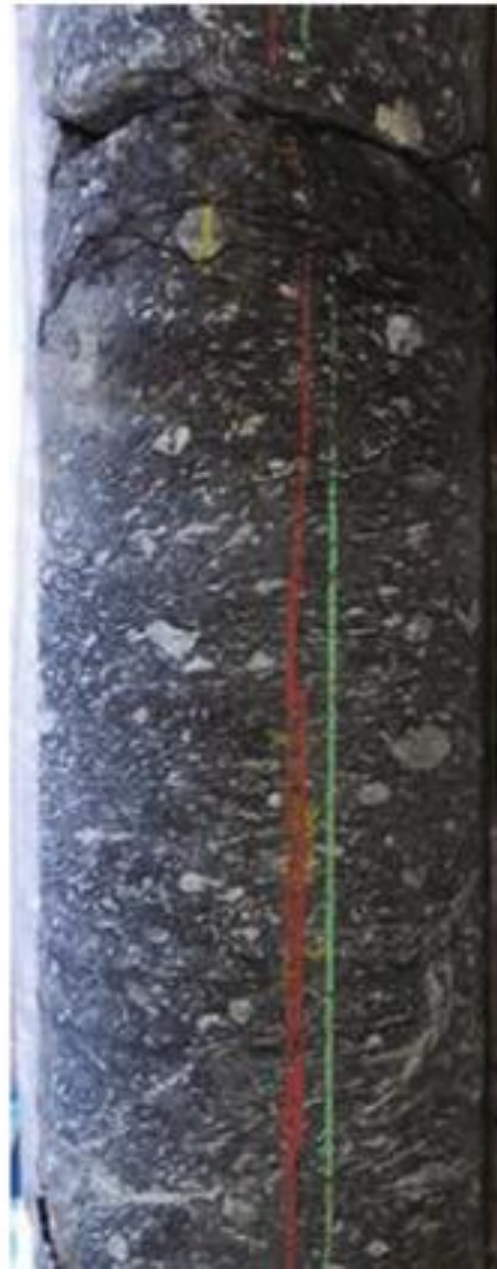
10cm



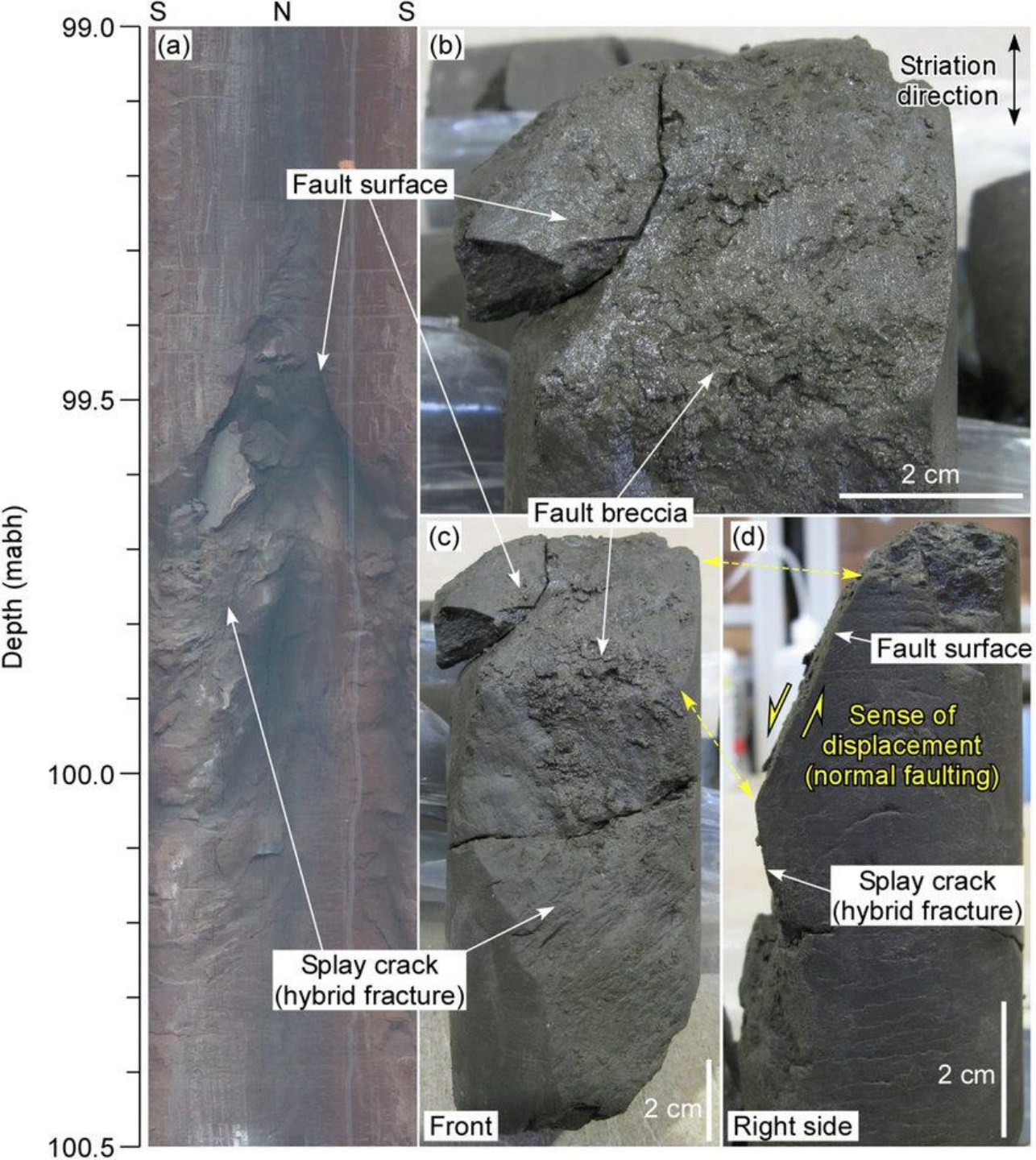
10cm



10cm



10cm



What next? The pilot data will guide future drilling plans. **Modelling predicts temperatures at 6 km depth could reach 110-130°C, necessitating specially designed drilling equipment, downhole data systems, and long-term sensors.** **Koyna data and samples will support new experiments, with over 20 research groups nationwide already studying them.**

For instance, **one group is examining fault zone gouge to understand frictional properties in quake-prone regions, while another studies microbes to learn about life in extreme environments.** **International researchers are also seeking access to these core samples for projects like carbon capture in the deep Deccan traps,** which could help mitigate climate change.

Overall, **the Koyna initiative is solidifying India's capabilities in scientific deep-drilling and will inform future experiments,** enhancing academic knowledge in various fields.



A Long History

SCIENTIFIC

DEEP

DRILLING

Other Deep Drilling Projects Around the World

Project Mohole (US): The deep drilling race commenced in 1958 with the American initiative known as Project Mohole, aiming to retrieve a mantle sample by drilling into ocean floor off Guadalupe Island, Mexico. Despite drilling 601 ft (183 m) into the seabed, the project was terminated in 1966 by the US House of Representatives.

Kola Superdeep Borehole (Russia): Initiated in the 1970s, this project created the deepest man-made hole, reaching a depth of 12,262 meters. It yielded surprising discoveries, such as the absence of the "Conrad discontinuity," the presence of liquid water at unexpected depths, and microscopic fossils dating back 2 billion years. The project was discontinued in 1992, and the hole was sealed in 2005.

Seismic Discontinuity

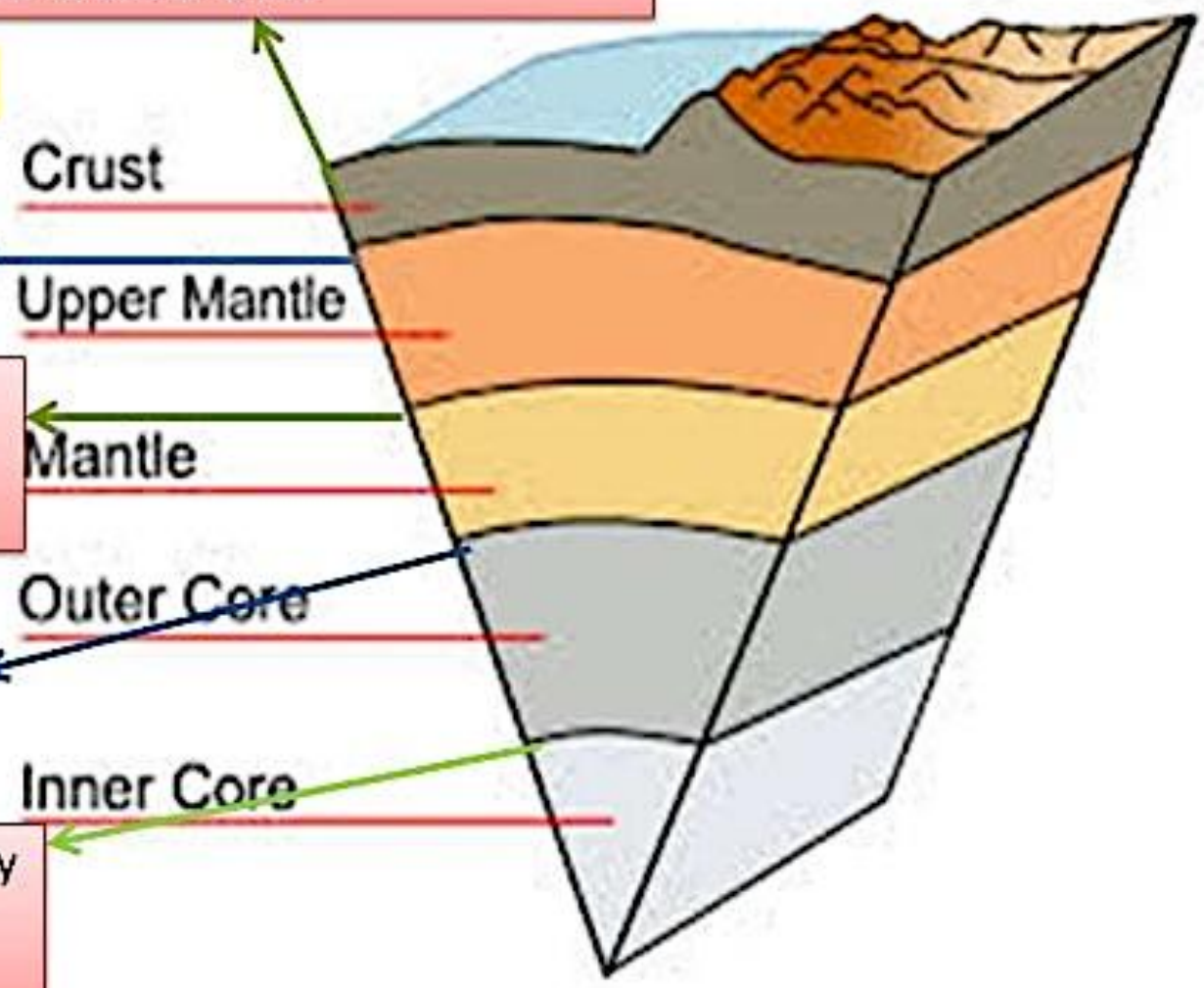
Conrad discontinuity – between upper & lower crust

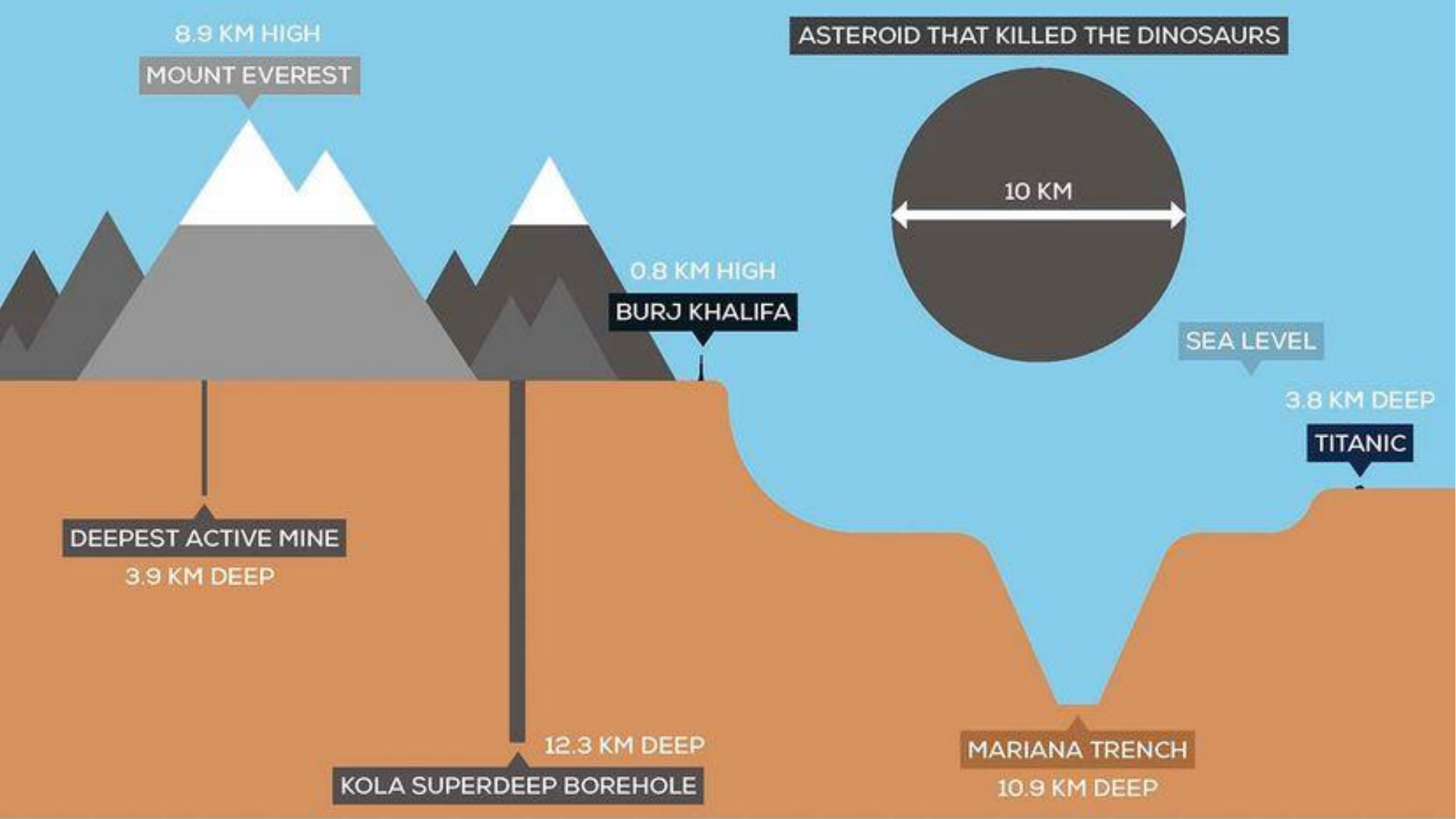
Moho/ Mohorovicic discontinuity – between lower crust & upper mantle

Repetti discontinuity – between upper & lower Mantle

Gutenberg discontinuity – between lower Mantle & outer Core

Lehmann discontinuity – between outer & inner core





8.9 KM HIGH

MOUNT EVEREST

ASTEROID THAT KILLED THE DINOSAURS

10 KM

0.8 KM HIGH

BURJ KHALIFA

SEA LEVEL

3.8 KM DEEP

TITANIC

DEEPEST ACTIVE MINE

3.9 KM DEEP

12.3 KM DEEP

KOLA SUPERDEEP BOREHOLE

MARIANA TRENCH

10.9 KM DEEP

LOCATION OF THE KOLA SUPERDEEP BOREHOLE

The Kola Superdeep Borehole is the deepest hole in the world and you can still visit it today



China's Deep Hole Project: China is drilling a 10,000-meter deep hole in Xinjiang to explore the Earth's strata and reach the Cretaceous system, dating back 145 million years.

Deep Sea Drilling Project (DSDP): Launched in 1966, DSDP involved ocean drilling and coring, discovering salt domes and potential oil reserves. It concluded in 1972.

Integrated Ocean Drilling Project (IODP): This international initiative uses ocean research platforms to study Earth's history and processes through seafloor samples.

Its goals include understanding Earth's long-term processes, exploring the deep biosphere, studying climate history, and investigating Earth's crust and mantle, using vessels from Japan, the US, and other partners.

History of Scientific Ocean Drilling

Project Mohole
1958 - 1966

**The American
Miscellaneous
Society**



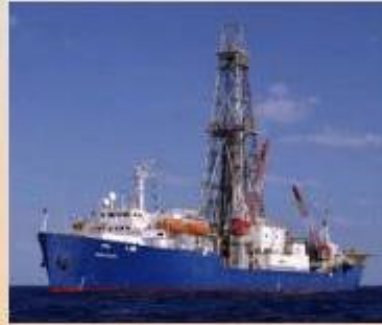
Cuss 1
USA

**Deep Sea
Drilling Program
(DSDP)**
1968 - 1985



Glomar Challenger
USA
F, UK, Jp, USSR (1975)

**Ocean Drilling
Program (ODP)**
1985 - 2003



Joides Resolution
(Sedco/BP 471)
20 countries

**Integrated
Ocean Drilling
Program (IODP)**
Oct. 2003



Chikyu
+ US conversion
Japan, USA

2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH

Apni
Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Subject

HISTORY ,POLITY

GEOGRAPHY

ECONOMICS

Price

1499 /-

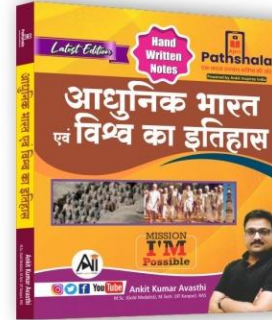
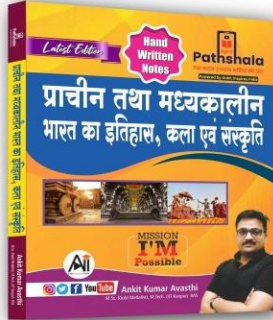
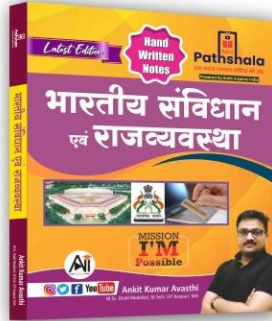
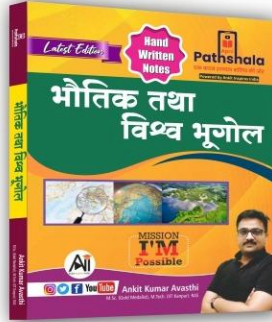
**Validity
1 Year**

By Ankit Avasthi Sir



GA FOUNDATION

Hand Written
Notes



₹ Only
1999

6 पुस्तकों
का
सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**

- सिन्धु नदी का उद्गम कॅलाश पर्वतीय क्षेत्र में बीखर-सू हिमनद से होता है।
- तिब्बत में इस नदी को सिंगी खंबान कहते हैं।
- यह फमचोक नामक स्थान से भारत में प्रवेश करती है।
- यह नदी भारत में लद्दाख तथा जास्कर श्रेणी के बीच बहती है।
- पाकिस्तान में यह अटक (Attock) नामक स्थानों पर मैदानों में प्रवेश करती है।
- पाकिस्तान में कराँची के पास डेल्टा बनते हुए यह अरब सागर में गिरती है।
- सिन्धु नदी की दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदियाँ :- श्योक, रुद्रा, हुनजा, गिलागिट, स्वात, काबुल तथा गोमल
- इसकी प्रमुख बायें हाथ की सहायक नदियाँ झेलम, पिनाब, रावी, व्यास, सतलज, द्रास तथा जास्कर पंचनद
- सिन्धु से पंचनद पाक में मिठानकोट नामक स्थान पर मिलती है।
- 'लेट' सिन्धु नदी के किनारे स्थित है।

पंचनद

i) झेलम :- इस नदी का उद्गम जम्मू कश्मीर में

- बेरिनाग झील से होता है।
- * यह नदी बल्लर झील का निर्माण करती है जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है।
- इस नदी के किनारे श्रीनगर स्थित है।
- किशनगंगा इसकी दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदी है।
- इस नदी पर तुलबुल परियोजना प्रस्तावित है। यह एक नवविद्यन परियोजना है।
- यह नदी भारत तथा पाकिस्तान के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का निर्माण करती है।

ii) पिनाब :- पिनाब नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश में बारालच्छा दर्रे के पास चन्द्र तथा भागा नदियों के मिलने (Confluence) से होता है।

- 1962 में इस नदी पर जल विद्युत उत्पादन परियोजनाएँ स्थित हैं।

उदाहरण :- तुलहस्ती, सलाब, बगलिहार

- यह सिन्धु नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

iii) रावी :- रावी नदी का उद्गम शैलांग दर्रे के पास से हिमाचल प्रदेश में होता है।

- हिमाचल प्रदेश में इन नदी पर चमेरा बाँध स्थित है।
- पंजाब में इस नदी पर धीन परियोजना स्थित है।

किया। इस सिद्धान्त के अनुसार नती ब्रह्माण्ड का कोई आदि है न ही कोई अंत है। यह समयानुसार अपरिवर्तित रहता है। यद्यपि इस सिद्धान्त में प्रसरणशीलता समाहित है परन्तु फिर भी ब्रह्माण्ड के घनत्व को स्थिर रखने के लिए इसमें पदार्थ स्वतः रूप से सृजित होता रहता है।

3) दोलन सिद्धान्त (Oscillating Universe theory) :-
यह सिद्धान्त डॉ. एलन सैंडिज ने प्रतिपादित किया था। इसके अनुसार आज से 180 करोड़ वर्ष पहले एक तीव्र विस्फोट हुआ था और तभी से ब्रह्माण्ड फैलता जा रहा है। 290 करोड़ वर्ष बाद गुरुत्वाकर्षण बल के कारण इनका विस्तार रुक जाएगा। इसके बाद ब्रह्माण्ड संकुचित होने लगेगा और अत्यंत संपीड़ित और अनंत रूप से बिंदुमय आकार धारण कर लेगा। उसके बाद एक बार पुनः विस्फोट होगा और यही क्रम चलता रहेगा।

4) स्फीति का सिद्धान्त (Inflationary theory) :-
यह सिद्धान्त अमेरिकी वैज्ञानिक अलेन गुथ ने दिया था। इस सिद्धान्त के अनुसार, विवालयक अग्निपिण्ड के विस्फोट के पश्चात् अति अल्पकाल में ब्रह्माण्ड का असाधारण त्वरित गति से फैलाव हुआ और ब्रह्माण्ड के आकार में कई गुना वृद्धि हो गई।

तारों का निर्माण : तारों का निर्माण मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैस से हुआ है। आकाशगंगाओं में उपस्थित हाइड्रोजन और हीलियम गैसों के घने बादलों के रूप में एकत्रित होने के साथ इसके जीवन-चक्र का आरंभ होता है।

सौरमण्डल

सौरमण्डल का निर्माण 4.6 बिलियन वर्ष पूर्व हुआ था। सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले 8 गुरु, 205 उपग्रह, धूमकेतु, उल्कार एवं क्षुद्रग्रह संयुक्त रूप से सौरमण्डल कहलाते हैं।

सूर्य (SUN) :- सूर्य एक गैसीय गोलू है, जिसमें 71% हाइड्रोजन, 26.5% हीलियम व 2.5% अन्य तत्व विद्यमान हैं। सूर्य का केन्द्रीय भाग कोर (Core) कहलाता है।

- सूर्य की ऊर्जा का स्रोत उसके केन्द्र में होने वाली नाभिकीय संलयन की क्रिया है।
- सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 16.6 सेकेंड का समय लगता है।
- सौर ज्वाला को उत्तरी ध्रुव पर ऑरोरा बीरियालिस कहते हैं।
और दक्षिणी ध्रुव पर ऑरोरा आस्ट्रेलिस कहते हैं।

7D

28D

90D

365D

Apr

Mar

Feb

Percenta

31 Mar – 27 Apr 2024

Watch time (hours)

Not subscribed

52.1%



Subscribed

47.9%



Uttara
x
PPTX +



visit Our Website :-

WWW.apnipathshala.com

1) BPSC Courses

2) RPSC Courses

3) UPPSC Courses

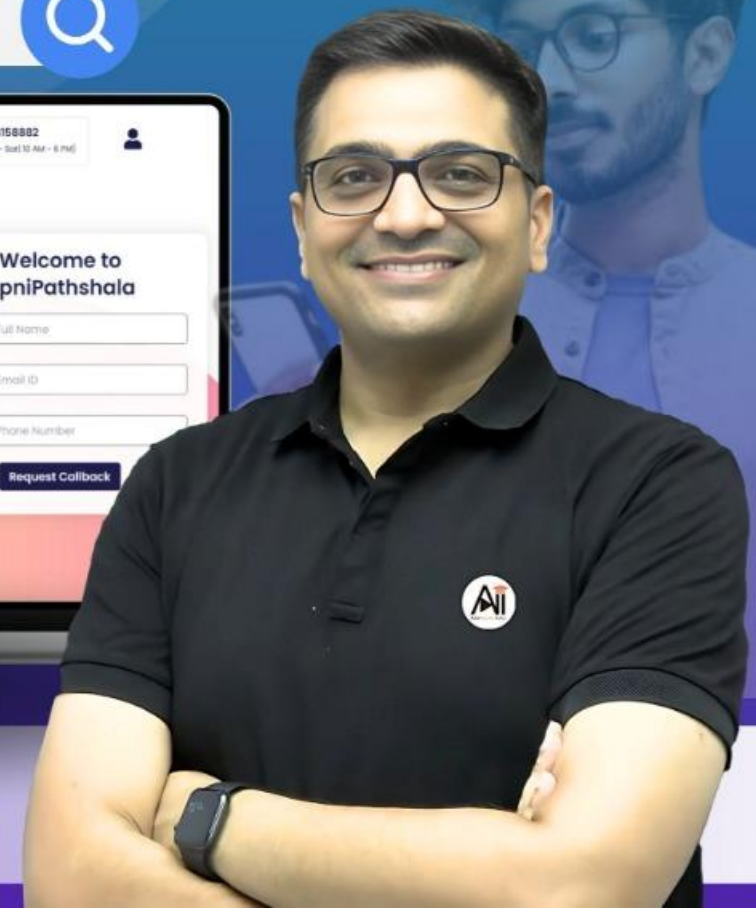
4) RNA And Class Pdf

5) video lecture

6) Daily Current Affairs

7) Infographic

8) Test series , Quiz



अब तैयारी हुई और आसान

1



Pathshala

अब तैयारी हुई और आसान

Download lessons and learn anytime, anywhere with Apni Pathshala

GET IT ON Google Play | Download on the App Store | Get it on Windows 10

Welcome to ApniPathshala

Enter Your Full Name

Enter Your Email ID




Enter Your Phone Number




2

Menu

- Our Classroom ▾
- Our Resources ▾
- Current Affairs ▾**







3

Menu

- Our Classroom ▾
- Our Resources ▾
- Current Affairs ▾**

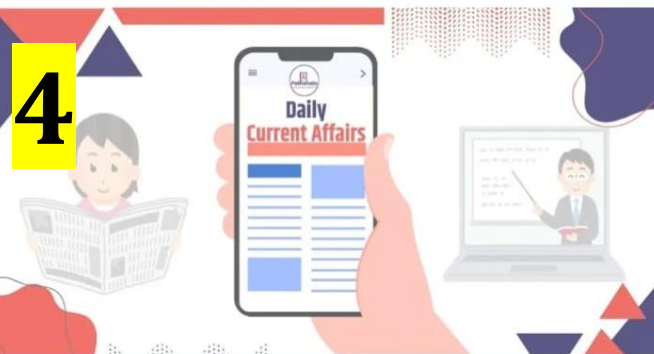
 - Daily
 - Weekly
 - Monthly
 - RNA PDF**



4

Pathshala




Current Affairs | CA Daily

CA Weekly | CA Montly | **RNA PDF**

RNA (Real news and analysis)
18 may 2024
May 18, 2024

RNA (Real news and analysis)
17 may 2024
May 17, 2024



2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH

Apni
Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Subject

HISTORY ,POLITY

GEOGRAPHY

ECONOMICS

Price

1499 /-

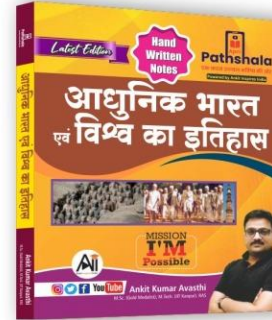
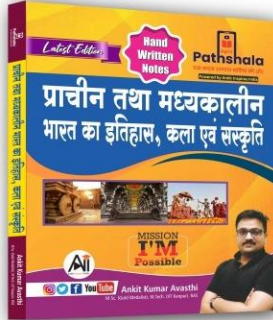
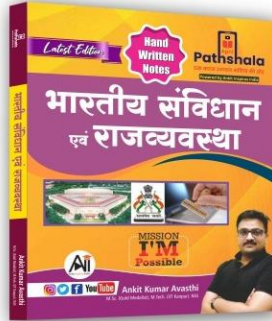
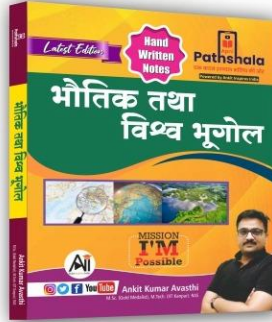
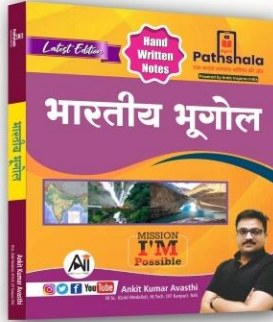
**Validity
1 Year**

By Ankit Avasthi Sir



GA FOUNDATION

Hand Written
Notes



₹ Only
1999

6 पुस्तकों
का
सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**

- सिन्धु नदी का उद्गम कॅलाश पर्वतीय क्षेत्र में बीखर-सू हिमनद से होता है।
- तिब्बत में इस नदी को सिंगी खंबान कहते हैं।
- यह फमचोक नामक स्थान से भारत में प्रवेश करती है।
- यह नदी भारत में लद्दाख तथा जास्कर श्रेणी के बीच बहती है।
- पाकिस्तान में यह अटक (Attock) नामक स्थानों पर मैदानों में प्रवेश करती है।
- पाकिस्तान में कराँची के पास डेल्टा बनते हुए यह अरब सागर में गिरती है।
- सिन्धु नदी की दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदियाँ :- श्योक, रुद्रा, हुनजा, गिलागिट, स्वात, काबुल तथा गोमल
- इसकी प्रमुख बायें हाथ की सहायक नदियाँ झेलम, पिनाब, रावी, व्यास, सतलज, द्रास तथा जास्कर पंचनद
- सिन्धु से पंचनद पाक में मिठानकोट नामक स्थान पर मिलती है।
- 'लेट' सिन्धु नदी के किनारे स्थित है।

पंचनद

i) झेलम :- इस नदी का उद्गम जम्मू कश्मीर में

- बेरिनाग झील से होता है।
- * यह नदी बल्लर झील का निर्माण करती है जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है।
- इस नदी के किनारे श्रीनगर स्थित है।
- किशनगंगा इसकी दायें हाथ की प्रमुख सहायक नदी है।
- इस नदी पर तुलबुल परियोजना प्रस्तावित है। यह एक नवीन परियोजना है।
- यह नदी भारत तथा पाकिस्तान के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का निर्माण करती है।

ii) पिनाब :- पिनाब नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश में बारालच्छा दर्रे के पास चन्द्र तथा भागा नदियों के मिलने (Confluence) से होता है।

- 1962 में इस नदी पर जल विद्युत उत्पादन परियोजनाएँ स्थित हैं।

उदाहरण :- तुलहस्ती, सलाब, बगलिहार

- यह सिन्धु नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

iii) रावी :- रावी नदी का उद्गम शैलांग दर्रे के पास से हिमाचल प्रदेश में होता है।

- हिमाचल प्रदेश में इन नदी पर चमेरा बाँध स्थित है।
- पंजाब में इस नदी पर धीन परियोजना स्थित है।

किया। इस सिद्धान्त के अनुसार नती ब्रह्माण्ड का कोई आदि है न ही कोई अंत है। यह समयानुसार अपरिवर्तित रहता है। यद्यपि इस सिद्धान्त में प्रसरणशीलता समाहित है परन्तु फिर भी ब्रह्माण्ड के घनत्व को स्थिर रखने के लिए इसमें पदार्थ स्वतः रूप से सृजित होता रहता है।

3) दोलन सिद्धान्त (Oscillating Universe theory) :-
यह सिद्धान्त डॉ. एलन सैंडिज ने प्रतिपादित किया था। इसके अनुसार आज से 180 करोड़ वर्ष पहले एक तीव्र विस्फोट हुआ था और तभी से ब्रह्माण्ड फैलता जा रहा है। 290 करोड़ वर्ष बाद गुरुत्वाकर्षण बल के कारण इनका विस्तार रुक जाएगा। इसके बाद ब्रह्माण्ड संकुचित होने लगेगा और अत्यंत संपीड़ित और अनंत रूप से बिंदुमय आकार धारण कर लेगा। उसके बाद एक बार पुनः विस्फोट होगा और यही क्रम चलता रहेगा।

4) स्फीति का सिद्धान्त (Inflationary theory) :-
यह सिद्धान्त अमेरिकी वैज्ञानिक अलेन गुथ ने दिया था। इस सिद्धान्त के अनुसार, विवालयक अग्निपिंड के विस्फोट के पश्चात् अति अल्पकाल में ब्रह्माण्ड का असाधारण त्वरित गति से फैलाव हुआ और ब्रह्माण्ड के आकार में कई गुना वृद्धि हो गई।

तारों का निर्माण : तारों का निर्माण मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैस से हुआ है। आकाशगंगाओं में उपस्थित हाइड्रोजन और हीलियम गैसों के घने बादलों के रूप में एकत्रित होने के साथ इसके जीवन-चक्र का आरंभ होता है।

सौरमण्डल

सौरमण्डल का निर्माण 4.6 बिलियन वर्ष पूर्व हुआ था। सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले 8 ग्रह, 205 उपग्रह, धूमकेतु, उल्कारें एवं क्षुद्रग्रह संयुक्त रूप से सौरमण्डल कहलाते हैं।

सूर्य (SUN) :- सूर्य एक गैसीय गोलू है, जिसमें 71% हाइड्रोजन, 26.5% हीलियम व 2.5% अन्य तत्व विद्यमान हैं। सूर्य का केन्द्रीय भाग कोर (Core) कहलाता है।

→ सूर्य की ऊर्जा का स्रोत उसके केन्द्र में होने वाली नाभिकीय संलयन की क्रिया है।

→ सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 16.6 सेकेंड का समय लगता है।

→ सौर ज्वाला को उत्तरी ध्रुव पर ऑरोरा बीरियालिस कहते हैं।
और दक्षिणी ध्रुव पर ऑरोरा आस्ट्रेलिस कहते हैं।

₹ 1999

CALL CENTRE

7878158882



HOW MAY I HELP YOU



AnkitInspiresIndia

➡ Download "Apni Pathshsla" app now!

Follow us:

